thearyasamaj.org

ओ३म्

पाक्षिक

परोपकारी

ऋग्वेद
यजुर्वेद
सामवेद
अथर्ववेद

वर्ष - ५६ अंक - १८ महर्षि दयानन्द की स्थानापन्न परोपकारिणी सभा का मुखपत्र सितम्बर (द्वितीय) २०१४

महर्षि दयानन्द सरस्वती

thearyasamaj.org

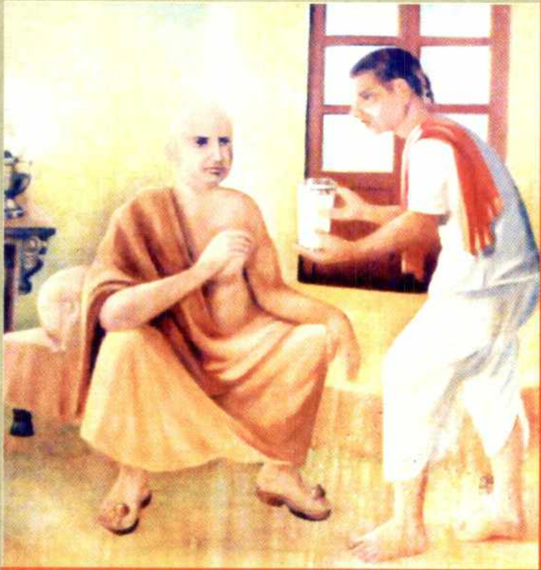

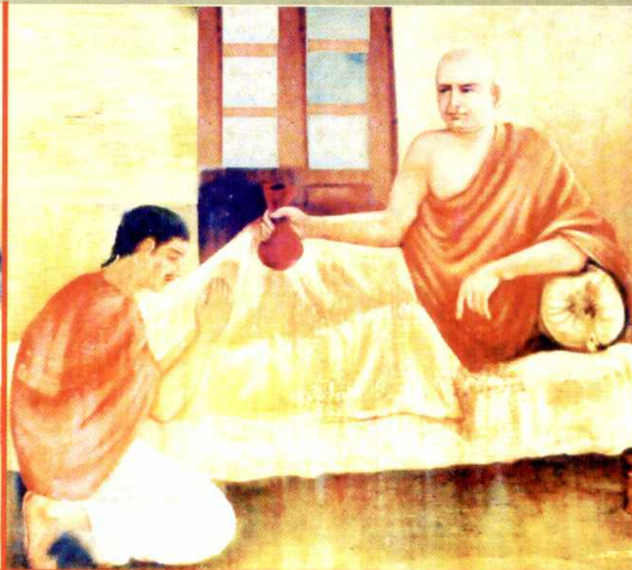

महर्षि दयानन्द सरस्वती के जीवन की झलकियाँ

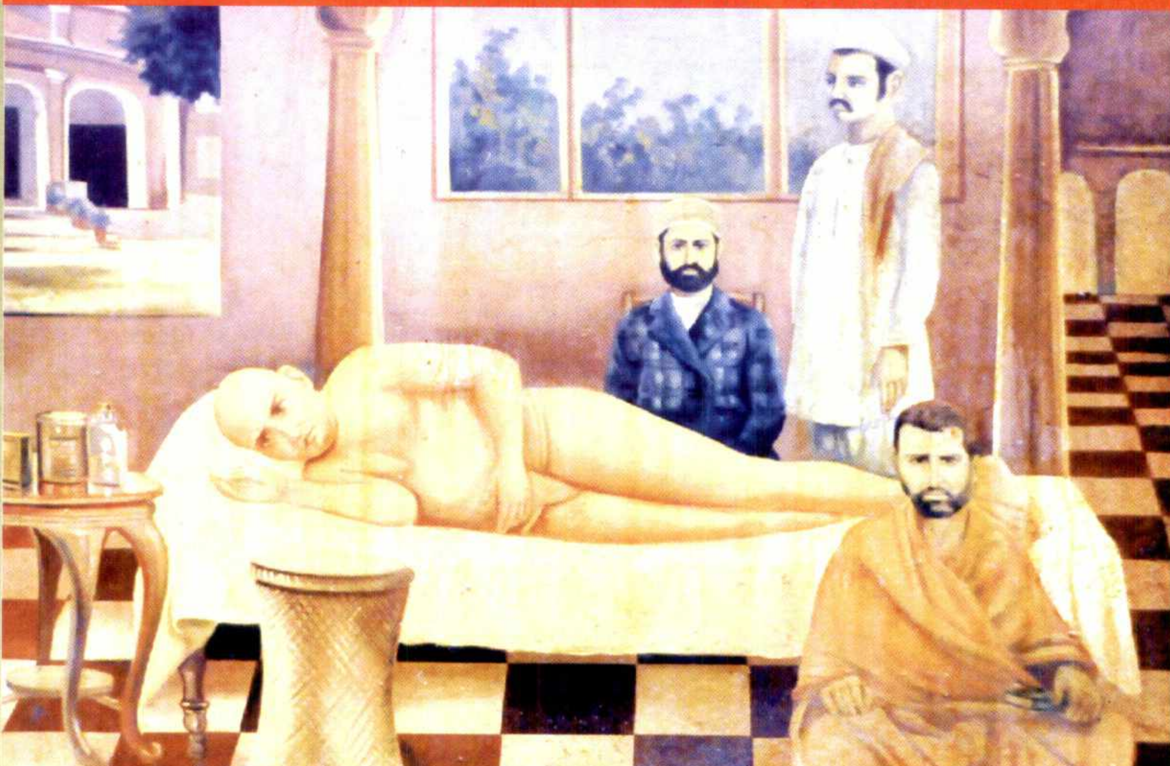

thearyasamaj.org

महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा का मुख पत्र

वर्ष : ५६ अंक : १८

दयानन्दाब्द: १९०

विक्रम संवत्: आश्विन कृष्ण, २०७१

कलि संवत्: ५११५

सृष्टि संवत्: १,९६,०८,५३,११५

सम्पादक

प्रो. धर्मवीर

प्रकाशक-परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर- ३०५००१

दूरभाष: ०१४५-२४६०१६४

मुद्रक-श्री मोहनलाल तँवर वैदिक यन्त्रालय, अजमेर।

दूरभाष : ०१४५-२४६०८३१

-परोपकारी का शुल्क-

भारत में

वार्षिक-२०० रु., **द्विवार्षिक**-३९० रु., **त्रिवार्षिक**-५८० रु., **आजीवन**-(=१५ वर्ष)-२००० रु.।

विदेश में

वार्षिक-५० यू.के. पाउण्ड/८० यू.एस. डालर, **द्विवार्षिक**-९५ पा./१५२ डा., **त्रिवार्षिक**-१४० पा./२२५ डा., **आजीवन**-(=१५ वर्ष)-५०० पा./८०० डा.।

वैदिक पुस्तकालय : ०१४५-२४६०१२०

ऋषि उद्यान : ०१४५-२६२१२७०

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है। किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्यायक्षेत्र अजमेर ही होगा।

ओ३म्

विद्याविलासमनसो धृतशीलशिक्षा:,
सत्यव्रता रहितमानमलापहारा:।
संसारदु:खदलनेन सुभूषिता ये,
धन्या नरा विहितकर्म परोपकारा:।।

RNI. No. ३९५९ / ५९

परोपकारी

सितम्बर द्वितीय २०१४

अनुक्रम

१. कचरे का भगवान : कचरे में	सम्पादकीय	०४
२. तज्ज्ञानं तदाज्ञापालनमेव देवत्वम्	स्वामी विष्वङ्	०७
३. पुस्तक-समीक्षा	देवमुनि	१०
४. कुछ तड़प-कुछ झड़प	राजेन्द्र जिज्ञासु	११
५. आर्य समाज का प्रथम नियम	प्रो. वीरेन्द्र कुमार	१८
६. प्रतिक्रिया		२१
७. वैदिक पुस्तकालय के प्रकाशन		२२
८. मृत्यु और जन्म के बीच की गति	श्री जगदेव सिंह	२४
९. तुम हिन्दू हो या आर्य?	राजेन्द्र जिज्ञासु	२९
१०. जिज्ञासा समाधान-७१	आचार्य सोमदेव	३५
११. संस्था-समाचार		३८
१२. आर्यजगत् के समाचार		४१

www.paropkarinisabha.com
email : psabhaa@gmail.com

- उपनिषद, दर्शन, प्रवचन आदि सुनने हेतु बटन दबाएं -
www.paropkarinisabha.com → Daily Pravachan

thearyasamaj.org

कचरे का भगवान : कचरे में

यह शीर्षक कुछ वर्ष पूर्व इन्टरनेट पर किसी ने डाला था। इसके साथ कुछ चित्र थे जिनमें मुम्बई के गणेश पण्डाल के बड़े-बड़े गणेश जी, बड़ी-बड़ी मशीनों से समुद्र में धकेले जा रहे थे। शीर्षक तो ठीक ही था क्योंकि कुछ दिन पहले इन सभी भगवानों की रचना कचरा मिट्टी से की गई थी। इनको रंग-रोगन से सजा कर विशाल पण्डाल की शोभा बढ़ाई गई। प्राण प्रतिष्ठा करके इनकी आरती उतारी गई, पूजा की गई और लाखों लोगों ने अपनी-अपनी प्रार्थना भगवान गणेश जी की सेवा में प्रस्तुत की। कितनों की प्रार्थना स्वीकार की गई, भगवान के सचिवों को ही पता होगा। प्रतिवर्ष यही क्रम चलता रहता है। मौसम के अनुसार भगवान बनते हैं, बाजारों में बिकते हैं, पण्डालों में सजते हैं और पुन: कचरे के ढेर में मिल जाते हैं।

भगवानों का बाजार लगता है। बाजार में कभी कृष्ण की भीड़ रहती है, कभी गणेश की, कभी राम की तो कभी देवी की, ये कभी समय के अनुकूल तो कभी क्षेत्रीय परम्परा के अनुकूल बाजार की शोभा बढ़ाते रहते हैं। प्रश्न उठता है क्या ये भगवान हैं? इसका उत्तर आता है मानो तो पत्थर भी भगवान है नहीं मानो तो भगवान भी कुछ नहीं। मूल बात इसमें है कि ये सब भगवान मानने का परिणाम है। यहाँ मानने और होने का अन्तर समझने की आवश्यकता है। मानने के लिए होना आवश्यक नहीं है। एक व्यक्ति जो कुछ स्वयं मानता है, किसी दूसरे के लिए उसका मानना आवश्यक नहीं है। अत: जिसने जिसको भगवान मान लिया उसके लिए वही भगवान हो गया, इतने प्रकार और इतनी बड़ी संख्या के भगवान का यही कारण है। इसी प्रकार जिसे हम भगवान मानते हैं, वह भी अपने को भगवान माने यह आवश्यक नहीं है। हिन्दू गाय को माता मानता है परन्तु गाय के लिए हिन्दू या मुसलमान में कोई अन्तर नहीं, फिर आप पत्थर को भगवान माने यह आपकी इच्छा है। इस प्रकार मानने में भगवान की इच्छा नहीं, बनाने वाले की इच्छा काम करती है। कौन-सा भगवान बनाना है, राम वाला, कृष्ण वाला, गणेश वाला, देवी वाला या और कोई। बनाने वाला देखता है किस भगवान का समय चल रहा है? कौनसे भगवान के मानने वाले लोग अधिक हैं? बनाने वाला जैसा बाजार देखता है, वैसा ही भगवान बना कर बेच लेता है, उसका काम चल जाता है, वह भी भगवान का धन्यवाद करता है। यहाँ रोचक तथ्य है बनाने वाले पर भगवान की कृपा होती है परन्तु बिकने पर। भगवान भी बिना बिके कृपा नहीं कर सकता। बिल्कुल एक वस्तु की तरह जैसे एक वस्तु बनाई या खरीदी जाती है, वह लाभ तभी देती है जब वह बिक जाती है। वस्तु बिकेगी नहीं तो लाभ भी नहीं होगा। समझने की बात है कि भगवान और कुछ नहीं एक बेचने-खरीदने की वस्तु है, उसके बेचने-खरीदने में लाभ होता है।

यहाँ पर एक प्रश्न अनुत्तरित रह जाता है, वस्तु के बेचने-खरीदने में लाभ होता है परन्तु वस्तु में बेचने-खरीदने वाले दोनों को लाभ होता है, भगवान के बेचने वालों को लाभ दिखाई देता है परन्तु जो उसे खरीद कर उसकी पूजा करता है, उसको क्या लाभ होता है? क्योंकि बिना लाभ के कोई व्यक्ति किसी काम को नहीं करता, तो यहाँ मूर्ति के उपासक को क्या लाभ है? यह सच है बिना लाभ के कोई मनुष्य किसी कार्य को करने में प्रवृत्त नहीं होता। दुकान तभी चलती है जब दुकानदार को लाभ हो और ग्राहक को उसकी आवश्यकता की वस्तु मिलती हो। मूर्ति पूजा में दोनों का लाभ पृथक्-पृथक् जानने की आवश्यकता है। मूर्त्ति पूजा शुद्ध व्यवसाय है जिस किसी ने भी इसे चलाया होगा वह सर्वश्रेष्ठ व्यापारी रहा होगा। हम एक व्यापारी को देखते हैं, वह सामान लाता है, दुकान पर बैठकर उसे बेचता है। इस कार्य में उसका धन लगता है जिसे हम पूँजी कहते हैं, उसको बेचने तक जो प्रयास होते हैं उसमें भी उसका व्यय होता है। ग्राहक को अच्छी वस्तु मिले, नाप-तोल पूरा हो वह व्यापारी का उत्तरदायित्व है। ग्राहक की प्रतीक्षा में उसे दुकान पर बैठना पड़ता है या उसकी खोज में भटकना पड़ता है, इस परिश्रम के पश्चात् जो उसके पास शेष रहता है उसे वह लाभ में गिनता है। इसके विपरीत मूर्तिपूजा को शून्य पूँजी से प्रारम्भ किया जा सकता है। एक आड़े टेढ़े पत्थर को भैरु जी, हनुमान जी कहकर एक व्यक्ति लेकर बैठता है या नहीं भी बैठता है, सायंकाल तक दस रुपये आये या सौ रुपये आये, वह पूरा का पूरा लाभ है, इसमें दुकानदार की भाँति पूँजी लगानी नहीं पड़ी, न रखवाली करनी पड़ी, न भगवान को ही कुछ देना पड़ा और भक्त की भावना पूर्ण हुई या अपूर्ण रह गई इसका कोई उत्तरदायित्व पुजारी या महन्त पर नहीं है। लाभ के प्रतिशत की कोई सीमा नहीं है। दुकानदार एक नारियल लाता है, उस पर लाभ कमाकर ग्राहक को बेच देता है परन्तु हरिद्वार में हर की पौड़ी पर एक नारियल सवेरे से बिकना प्रारम्भ होता है, दिन में सौ बार बिके या

thearyasamaj.org

पाँच सौ बार इसकी कोई सीमा नहीं है। उसी प्रकार दरगाह या समाधि पर चढ़ने वाली चादर जब तक है कितनी भी बार बिक सकती है। इससे होने वाले लाभ की कोई सीमा नहीं। जो सामान खाने-पीने का, कपड़ा, सोना, चाँदी, पैसा है उसका उपयोग तो यथोचित होता ही है फिर मूर्ति पूजा की दुकान क्यों नहीं चलेगी। बड़े-बड़े मन्दिरों में पीढ़ियों से पुजारी इन्हीं मन्दिरों से आजीविका चला रहे हैं, वे अपने भगवान का धन्यवाद क्यों नहीं करेंगे? निराकार भगवान को खिला नहीं सकते अत: खाता नहीं, साकार भगवान खिलाने पर भी नहीं खाता अत: बचा सामान पुजारी के काम आता है।

अब प्रश्न बचता है पुजारी को लाभ होता है इसलिए वह मन्दिर चलाता है, भक्त को क्या लाभ होता है जो अपना खर्च करके भी मन्दिर में जाता है। जितना लाभ पुजारी को है उतना ही भक्त को भी है। कोई भी मन्दिर जाने वाला व्यक्ति दो कारणों से मन्दिर में जाता है प्रथम व्यक्ति भय के कारण। वह भय से मुक्ति पाने के लिए मन्दिर जाता है तथा दूसरा कारण है लोभ, जिसके कारण कोई मनुष्य मन्दिर या किसी धार्मिक स्थान की शरण लेता है। एक छात्र परीक्षा के दिनों में मन्दिर जाता है, भगवान से प्रार्थना करता है, भगवान परीक्षा अच्छी हो जाये, प्रश्नपत्र सरल आये। परीक्षा देने के बाद भगवान से प्रार्थना करता है, भगवान पास कर देना। रोगी व्यक्ति औषध उपचार से थक जाता है तो भगवान से कहता है, भगवान मुझे ठीक कर दे। कोई अपने बच्चों के लिए प्रार्थना करता है, कहता है भगवान बेटी का विवाह करा दो, बेटे की नौकरी लगवा दो, भगवान मुकद्दमा जितवा दो, संसारी मनुष्यों की हजारों कामनायें हैं जिन्हें लेकर मनुष्य मन्दिरों में जाते हैं। बहुत सारे लोग तीर्थ-दर्शन करा के तो कुछ यज्ञ-याग, जप-तप करा के मनोकामनाओं की पूर्ति का आश्वासन देते हैं और मनुष्य कभी भय का मारा तो कभी लोभ का मारा मन्दिरों के चक्कर काटता रहता है। अप्राप्त को प्राप्त करने की चाह में, जो पास में है, उसे भी मन्दिर के अर्पण कर देता है।

बहुत सारे लोग कहते हुए मिलते हैं हमने इस देवता की पूजा की हमें यह लाभ हुआ। शिव की श्रावण के सोमवार को पूजा करने से अविवाहित कन्याओं को श्रेष्ठ वर की प्राप्ति होती है। किसी का व्यापार सफल होता है। किसी की नौकरी लग जाती है। क्या यह सब झूठ है? ऐसा होता है तभी तो हजारों-लाखों व्यक्ति बार-बार भिन्न-भिन्न देवी-देवताओं के यहाँ जाते हैं और उनकी कामना पूर्ण होती है, ऐसा सुना जाता है। इसकी परीक्षा के लिए हमें विचार करना होगा, एक वर्ष में कितने भक्त मन्दिर में मनोकामना लेकर आये और कितनों की मनोकामना पूर्ण हुई। मनोकामना पूर्ण होगी, ऐसी आशा और विश्वास तो सभी भक्तों का है परन्तु इसमें कितने लोगों की मनोकामना पूर्ण हुई और कितनों की अपूर्ण रह गई, इस संख्या के बिना ठीक-ठीक निर्णय नहीं हो सकता। मन्दिर में जाने वाले कुछ लोगों की मनोकामना पूर्ण हुई और कुछ की कामना अपूर्ण रह गई तब यह कहना असत्य है कि अमुक भगवान की पूजा से या अमुक मन्दिर में जाने से मनोकामना पूर्ण हो जाती है। यदि सभी मन्दिर में जाने वालों की कामना पूर्ण होती हो तब तो यह सिद्धान्त बन जायेगा कि अमुक भगवान मनोकामना सिद्ध हैं, नहीं तो मनोकामना पूरी होने, न होने का कोई और कारण होना चाहिए। जिस कार्य का हमें कारण पता नहीं होता हम उसे किसी भी भगवान के हवाले कर देते हैं।

भगवान बड़ी सत्ता है, उससे छोटी-छोटी बातें माँगना अपनी मूर्खता और उसका अपमान है। यदि माँगने से या मन्दिर में भगवान के दर्शन करने से ही कुछ मिलता हो तो, देश के लिए कुछ माँग कर देखना चाहिए। एक भारतीय को चीन, पाकिस्तान, अमेरिका पर विजय माँग लेनी चाहिए। माँग भी लेंगे तो मिलेगी नहीं। इतिहास बताता है कि इस्लामी आक्रमण में कोई भी भगवान ऐसा नहीं बचा जिसके हाथ-पाँव न तोड़े गये हों, किसी की नाक, किसी का सिर धड़ से अलग न किया गया हो। फिर किसी भी भगवान ने अपना बचाव नहीं किया, वह भक्त का क्या बचाव कर सकता है?

किसी भी मन्दिर में जाने से मनोकामना पूर्ण होती है, इस अज्ञान मूलक विचार के कारण हिन्दू अपने करोड़ों देवी-देवताओं, समाधियों को छोड़कर मुसलमानों की दरगाह, पीर, फकीरों की दरगाहों पर मनोकामना पूर्ण करने के लिए अपने सिर फोड़ते हैं और अपना धन लुटाते हैं। इस व्यवहार में एक ही तर्क काम करता है, हमारा पत्थर भगवान तो ईसाई, मुसलमान का पत्थर भगवान क्यों नहीं? यही कारण है कि हिन्दुओं को शिव की पूजा करते-करते साईं की पूजा करने में कोई आपत्ति नहीं होती, क्योंकि दोनों ही स्थानों पर परिणाम भक्त पर निर्भर करता है, भगवान पर नहीं। मनुष्य भगवान की शरण में भय से जाता है या प्रलोभन से, अत: भगवान किसका है या कौन है? इस बात का कोई अर्थ नहीं है। भय और प्रलोभन अज्ञान का परिणाम है, ये दोनों अज्ञान से उत्पन्न होते हैं। जब तक संसार में अज्ञान रहेगा तब तक भय और प्रलोभन मनुष्य

thearyasamaj.org

को तंग करते रहेंगे और पाखण्ड, मूर्तिपूजा, मन्दिर, मस्जिद और भगवान के अन्य सारे स्थान चलते रहेंगे। इनमें जाना और इनसे मनोकामना की पूर्ति मानना अज्ञान का परिणाम है। किसी भी कार्य का एक निश्चित कारण होता है। कारण होने पर ही कार्य होता है परन्तु मूर्ति पूजा और मन्दिरों के भगवान बिना कारण के कार्य करने के स्थान हैं अतः अवैदिक और अज्ञान मूलक है। इनका संसार में होना इनके सत्य होने का कारण नहीं अपितु अज्ञान और असत्य की सत्ता इनके होने में हेतु है।

लोग एक प्रश्न करते हैं क्या इतने लोग, इतने लम्बे समय से ऐसा करते आ रहे हैं, वे गलत कैसे हो सकते हैं? ऐसे लोगों से पूछा जाना चाहिए कि सत्य-असत्य, सही-गलत का निर्णय संख्या से हो सकता है क्या? यदि ऐसा हो तो मूर्ख रहना अच्छा है या पढ़-लिखकर विद्वान् बनना। **संख्या की दृष्टि से देखा जाये तो इस संसार में मूर्खों की संख्या ही सदा अधिक रही है और भविष्य में भी रहेगी क्योंकि अनपढ़ उत्पन्न होते हैं और विद्वान् बनाये जाते हैं, जो उत्पन्न होते हैं वे सदा ही अधिक होते हैं और जो बनाये जाते हैं उनकी संख्या निश्चित रूप से कम ही होगी।** अनपढ़ रहने से पढ़ा-लिखा होना सदा ही अच्छा है, इसका निर्णय संख्या से नहीं किया जा सकता, मूर्ति पूजा अज्ञान मूलक है। अतः कितने लोग करते हैं और कब से चली आ रही है इससे इसकी श्रेष्ठता सिद्ध नहीं होती। मिट्टी के गणेश तो आपका कुछ नहीं कर सकते, वे कल कचरे में मिलेंगे। हमारे पौराणिक भाई गणपति के लिए जो मन्त्र पढ़ते हैं, वह यजुर्वेद के २३वें अध्याय का १९वाँ मन्त्र है, उव्वट महीधर आदि मध्यकाल के भाष्यकारों ने यहाँ गणपति का अर्थ अश्वमेध यज्ञ का घोड़ा किया है, उस घोड़े को रानी अपने पति के रूप में आह्वान करती है **'गणानां त्वा स्त्री गणानां मध्ये त्वां युगपत् गणपतिं हवामहे आह्वायाम।'** फिर हाथी वाले गणपति से इसका क्या सम्बन्ध है। इस अनर्थ परम्परा को छोड़ वास्तविक गणपति निराकार चेतन ईश्वर है, उसकी उपासना निश्चय ही फलदायक है, जिसके लिए वेद में कहा गया है-

गणानां त्वा गणपतिं हवामहे,
प्रियानां त्वा प्रियपतिं हवामहे,
निधीनां त्वा निधिपतिं हवामहे वसो मम।
आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम्।।

अर्थात्- हे समूहाधिपते! आप मेरे सब समूहों के पति होने से आपको गणपति नाम से ग्रहण करता हूँ तथा मेरे प्रिय कर्मकारी पदार्थ और जनों के पालक भी आप ही हैं, इससे आपको मैं अवश्य जानूँ एवं मेरी सब निधियों के पति होने से आपको प्रियपति मैं निश्चित निधिपति जानूँ। हे सब जगत् जिस सामर्थ्य से उत्पन्न किया है, उस स्व सामर्थ्य का धारण और पोषण करने वाला आपको ही मैं जानूँ, सबका कारण आपका सामर्थ्य है, यही सब जगत् का धारण और पोषण करता है, यह जीवादि सशरीर प्राणि जगत् तो जन्मता और मरता है परन्तु आप सदैव अजन्मा और अमृतस्वरूप हैं, आपकी कृपा से मैं अधर्म, अविद्या, दुष्टभावादि को दूर फेंकूँ तथा हम लोग आपकी ही अत्यन्त स्पर्धा (प्राप्ति की इच्छा) करते हैं, सो आप अब शीघ्र हमको प्राप्त होओ, जो प्राप्त होने में आप थोड़ा भी विलम्ब करेंगे तो हमारा कुछ भी कहीं ठिकाना न लगेगा।

- धर्मवीर

ऋषि मेला २०१४ हेतु स्टॉल आवंटन

प्रतिवर्ष की भाति इस वर्ष ऋषि मेला ३१ अक्टूबर, १, २ नवम्बर शुक्र, शनि, रविवार २०१४ को ऋषि उद्यान में आयोजित होगा। उसमें आर्य जगत् का साहित्य, हवन सामग्री, अन्यान्य सामग्री की स्टॉलें लगती हैं। प्रति स्टॉल किराया १००० रु. निर्धारित है। जिसकी राशि पहले जमा होगी उस क्रम से स्टॉलों का आवंटन होगा। जिन महानुभावों को जितनी स्टॉलों की आवश्यकता है, उसी अनुरूप राशि बैंक ड्रॉफ्ट द्वारा या नकद जमा करावें।

स्टॉल सुविधा :- कारपेट, दो टेबल, दो कुर्सी, २ ट्यूब लाईट प्रति स्टॉल। **स्टॉल साइज**-७.५ × १५ फीट।

ध्यातव्य : -१. स्टॉल में रखी टेबल, कुर्सी आदि पूर्व निर्धारित सामग्री को इधर-उधर या अन्य स्टॉल में न बदलें। २. अतिरिक्त सामग्री की आवश्यकता हो तो टेन्ट हाउस के कर्मचारी से सम्पर्क कर प्राप्त करें तथा निर्धारित राशि तुरन्त भुगतान करें। ३. बिस्तर रजाई, चादर, तकिया को टेन्ट हाउस कर्मचारी से प्राप्त कर निर्धारित राशि जमा करा दें। ४. स्टॉल व्यवस्थापक से स्टॉल संख्या, राशि की रसीद दिखाकर प्राप्त करें। बिना अनुमति के पूर्व में स्टॉलों में सामान न रखें, न अधिकृत करें। ५. आपके सक्रिय सहयोग व अनुशासन की अपेक्षा है। अनियमितता को स्थान न देवें।

thearyasamaj.org

तज्ज्ञानं तदाज्ञापालनमेव देवत्वम्

- स्वामी विष्वङ्

परम कारुणिक जगदीश्वर ने सृष्टि (संसार) का निर्माण किया है। प्रायः मनुष्य सृष्टि पर प्रश्न चिह्न लगाता है अर्थात् परमेश्वर ने सृष्टि क्यों बनाई? सृष्टि के कारण आत्माओं को कितने दुःख भोगने पड़ रहे हैं। यदि ईश्वर सृष्टि को उत्पन्न ही नहीं करते, तो इतने सारे दुःख भोगने नहीं पड़ते। सृष्टि बनाकर ईश्वर ने हमें दुःख सागर में ढ़केला है, इस प्रकार की अनेक बातें लोग कहा करते हैं। मनुष्य जो भी मन से विचार करता है या वाणी से बोलता है अथवा शरीर से करता है, उसके पीछे '**ज्ञान**' कारण बनता है। जानकारी (ज्ञान) उचित-सत्य युक्त होती है, तो उचित सत्य युक्त कर्म करता है। यदि जानकारी (ज्ञान) अनुचित-असत्य युक्त होती है, तो अनुचित असत्य युक्त कर्म करता है। चाहे वह कर्म मन से हो या वाणी से हो अथवा शरीर से हो। प्रत्येक कर्म के पीछे ज्ञान कारण बनता है। यदि मनुष्य ईश्वर की सृष्टि को लेकर कुछ भी वाणी से बोलता है, तो वह वाणी का कर्म है। यहाँ यह विचार करके समझना चाहिए कि क्या ईश्वर आत्माओं को दुःखी करना चाहता है या सुखी करना चाहता है? यदि ईश्वर दुःखी करना चाहता है, तो ईश्वर में और मनुष्यों में क्या अन्तर रह जायेगा? ऐसी स्थिति में दोनों एक जैसे हो जायेंगे क्योंकि मनुष्य अज्ञानता आदि दोषों के कारण अन्यों को दुःख देता है। ईश्वर सर्वज्ञ होने के कारण अज्ञानता से युक्त कभी नहीं हो सकता क्योंकि अल्पज्ञ (न्यून जानकारी रखने वाला) ही अज्ञानता से युक्त होता है और अन्यों को दुःख देता है, परन्तु ईश्वर ऐसा नहीं कर सकता। हाँ, ईश्वर सर्वज्ञ के साथ-साथ न्यायकारी भी है और न्यायकारी का अर्थ है कर्म करने पर कर्म के आधार पर उचित न्याय करना, यही न्यायकारी होने का तात्पर्य है। इसलिए परमेश्वर आत्माओं को दुःख सागर में नहीं ढ़केलता है।

हाँ, यदि परमेश्वर सृष्टि का निर्माण नहीं करता, तो आत्माएँ सदा दुःख सागर में ही डूबी रहती। कारण यह है कि आत्माओं के पास इतना भी सामर्थ्य नहीं है कि वे अपनी अनुभूति कर सके। आत्माएँ ईश्वर प्रदत्त अहंकार नामक पदार्थ (यन्त्र) से अपनी अनुभूति कर पा रही हैं। यदि ईश्वर का सहयोग न मिले, तो आत्माएँ जड़ पदार्थ के समान मूर्छित पड़ी रहेंगी। आत्माएँ चेतन होते हुए भी जड़वत् रहेंगी। परन्तु ईश्वर की असीम कृपा है कि आज हम सब स्वयं को अनुभव कर पा रहे हैं। परमेश्वर ने सृष्टि उत्पन्न करके हम मनुष्यों को उत्तम अवसर दिया है कि कर्म करके ईश्वरीय आनन्द से युक्त हो सके। यदि ईश्वर सृष्टि का निर्माण नहीं करते, तो हम सब आत्माएँ आनन्द से वञ्चित रहते। इतना ही नहीं हम जड़ पदार्थों के समान चेतना शून्य (आत्मानुभूति रहित) होते। आत्माएँ कभी इस बात को स्वीकार नहीं कर सकते कि चेतन हो कर चेतना रहित (आत्मानुभूति रहित) सदा बने रहे। यदि कोई कहे कि भले ही चेतनता से रहित हो जाते कम से कम दुःख तो भोगने नहीं पड़ते। मनुष्य का यह कथन अनुचित इसलिए है कि कोई भी मनुष्य चेतना रहित मूर्छित रहना नहीं चाहता। एक-दो दिन की बात भी नहीं, सदा के लिए चेतना शून्य रहे, ऐसा कोई नहीं चाहता। चेतन हो कर चेतना शून्य सदा बने रहे, ऐसा कौन आत्मा चाहेगा? कोई वाणी से कथन तो अवश्य कर सकता है परन्तु अन्तरात्मा से कभी नहीं चाहेगा। इसलिए परम-पिता परमेश्वर ने सृष्टि बना कर आत्माओं पर महान उपकार किया है।

मनुष्य यह जो आरोप ईश्वर पर लगा रहा है कि ईश्वर ने सृष्टि बना कर आत्माओं को दुःख सागर में ढ़केला है। यह आरोप आधार हीन है बल्कि परमात्मा ने संसार बना कर आत्माओं को दुःख सागर से बचाया है। कैसे? आत्माएँ चेतन हो कर भी अनुभूति से शून्य थीं क्योंकि आत्माओं के पास स्वयं को अनुभव करने का सामर्थ्य नहीं था। यह आत्मा के लिए बहुत बड़ा दुःख है। क्या यह छोटा दुःख है? जो चेतन हो कर अपने चेतनत्व को अनुभव नहीं कर सकते। इसलिए परमात्मा ने आत्माओं को दुःख सागर में न ढ़केल कर दुःख सागर से पार लगाया है। यहाँ पर एक और महत्त्वपूर्ण बात यह है कि संसार में आत्माएँ जो दुःख भोग रहे हैं उसका कारण परमेश्वर नहीं है। फिर कौन है? स्वयं आत्माएँ हैं, यह कैसे? परम-पिता परमेश्वर ने सृष्टि बना कर आत्माओं को यह भी शिक्षा-उपदेश या आदेश दिया है कि इस संसार में किस प्रकार जीवन-यापन करना है। सृष्टि बना कर ईश्वर ने जिन मनुष्यों को उत्पन्न किया है, उनको सृष्टि में रहने के विधि-विधान और निषेध (क्या

thearyasamaj.org

नहीं करना) का बोध कराया है। सृष्टि के प्रारम्भिक मनुष्य ने अगली सन्तति को बताया, वे अगली सन्तति को, इस प्रकार परम्परा से एक-दूसरे को बताते हुए आ रहे हैं। सुन-सुन कर सभी उसी प्रकार चलते हुए आ रहे हैं। परन्तु जब मनुष्य ने आलस्य, प्रमाद करना प्रारम्भ किया तब से लिखना प्रारम्भ हो गया। ईश्वर ने जो उपदेश प्रारम्भिक मनुष्यों को दिया है वही उपदेश आज भी पुस्तकों के रूप में उपलब्ध है और वह उपदेश '**वेद**' है।

वेद सभी ग्रन्थों में प्राचीन ग्रन्थ है और सृष्टिक्रम के अनुरूप है इतना ही नहीं प्रमाणों से युक्त भी है। इसलिए वेद मनुष्य मात्र के लिए कल्याणकारी है। मनुष्य दु:खों से सर्वथा छूटना चाहता है, तो वेद ज्ञान के अनुरूप चल कर सभी दु:खों से छूट सकते हैं। जिस प्रकार मनुष्य परिवार में रह कर परिवार के नियमों का पालन करता है, समाज में रहकर समाज के नियमों का पालन करता है, प्रान्त में रहकर प्रान्त के नियमों का पालन करता है, देश-राष्ट्र में रह कर देश के नियमों का पालन करता है, विश्व में रह कर विश्व के नियमों का पालन करता है। ठीक इसी प्रकार ईश्वर द्वारा निर्मित सृष्टि में रह कर ईश्वर के नियमों का भी पालन करें। यदि मनुष्य ईश्वर के नियमों का पालन नहीं करता है, तो दु:ख सागर में डूबता है। जिस प्रकार परिवार, समाज, प्रान्त, देश व विश्व के नियमों का पालन न करने पर मनुष्य को दु:ख मिलता है। उसी प्रकार ईश्वर के नियमों का पालन न करने से भी दु:ख मिलता है। आज जो भी दु:ख भोग रहे हैं उनमें एक बहुत बड़ा भाग नियमों का पालन न करना है। दूसरा भाग अन्यों के द्वारा किया गया अन्याय है, जिसके कारण मनुष्य दु:ख भोगता है। मनुष्य अल्पज्ञ होने के कारण अन्याय करता या कर सकता है परन्तु ईश्वर सर्वज्ञ होने के कारण कभी भी अन्याय नहीं कर सकता। इसलिए ईश्वर कभी भी किसी को भी अन्यायपूर्वक दु:ख नहीं दे सकता। यदि ईश्वर किसी को दु:ख देता है, तो वह दण्ड कहलाता है। जिसका एक मात्र उद्देश्य आगे चल कर मनुष्य अन्याय न कर सके।

परमेश्वर कभी भी किसी को भी दु:खी करने के लिए कभी दु:ख नहीं देता। हाँ, आगे (भविष्य में) और अधिक दु:ख न भोग सके उसके लिए ईश्वर दण्ड (दु:ख) देता है। ईश्वर के दु:ख देने में भी कल्याण (सुख) छुपा रहता है। ईश्वर मनुष्य का कभी भी अकल्याण नहीं करता इसलिए वह दयालु है। सृष्टि ईश्वर की बनाई हुई है, शरीर, ज्ञानेन्द्रियाँ, कर्मेन्द्रियाँ, तन्मात्राएँ, मन, अहंकार, महतत्त्व रूपी बुद्धि ये सब साधन ईश्वर ने दिये हैं। मनुष्य का अपना (स्वयं आत्मा के अतिरिक्त) कुछ भी नहीं है। इसलिए मनुष्य का परम कर्त्तव्य बनता है कि वह ईश्वर की सृष्टि में रहते हुए ईश्वर की आज्ञा का पालन करके ही सभी दु:खों से छुटकारा पा सकता है। यदि ऐसा नहीं करेगा, तो कभी भी दु:ख सागर से नहीं छूट पायेगा। यदि मनुष्य यह चाहे कि ईश्वर-आज्ञा का पालन भी न करना पड़े और सारे दु:खों से छुटकारा भी मिल जाये, ऐसा कोई मार्ग नहीं है। इसलिए जहाँ विकल्प (अन्य मार्ग) न हो वहाँ अपनी बुद्धि आदि को लगा कर समय व्यर्थ न करे, इसी में मनुष्य की बुद्धिमत्ता है। परमेश्वर ने दु:खों से छुटकारा पाने के लिए वेद के माध्यम से अनेक उपाय बताये हैं। उन उपायों में एक महत्त्वपूर्ण उपाय है '**देव**' बनना अर्थात् जन्म तो मनुष्य शरीर का मिला है परन्तु मनुष्य शरीर के मिलने मात्र से मनुष्य, मनुष्य नहीं कहलाता है। इसलिए उसे मनुष्य बनने के लिए प्रयत्न करना पड़ता है। प्राय: मनुष्य शरीर को पा कर शिक्षा ग्रहण करके मनुष्य, मनुष्य बन ही जाते हैं। परन्तु मनुष्य बनने मात्र से मनुष्य का प्रयोजन (सभी दु:खों से छूटना रूपी प्रयोजन) पूरा नहीं होता है। इसलिए मनुष्य को विशेष शिक्षा ग्रहण करना पड़ता है और वह विशेष शिक्षा दो प्रकार की है एक भौतिक दूसरी आध्यात्मिक दोनों शिक्षाओं की पूर्ति से मनुष्य, विशेष मनुष्य बन जाता है। जिसे वेद ने '**देव**' कहा है। जब मनुष्य विशेष गुणों को धारण करता है तब देवत्व को प्राप्त करता है। मनुष्य देवत्व को प्राप्त करके ही सभी दु:खों से छुटकारा पाकर ईश्वरीय आनन्द को प्राप्त कर मोक्ष में जाता है। ऐसी स्थिति में मनुष्य का प्रयोजन पूर्ण होता है।

मनुष्य ऐसा क्या करे जिससे वह विशेष गुणों को पाकर देवत्व को प्राप्त हो सके? इस सम्बन्ध में वेद कहता है-

'**तन्मर्त्यस्य देवत्वम्**' (यजुर्वेद ३१.१७)

इस वेद वाक्य का भाव बताते हुए महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने लिखा है-

'**तज्ज्ञानं तदाज्ञापालनमेव देवत्मस्तीति जानीत।**'

अर्थात् उस परम-पिता परमेश्वर के ज्ञान को प्राप्त करना और उसकी आज्ञा पालन करना मनुष्य का देवत्व है, ऐसा समझना चाहिए। यहाँ पर वेद आदेश कर रहा है कि परमेश्वर को जानो अर्थात् ईश्वर की जानकारी प्राप्त करो। ईश्वर की जानकारी ईश्वर के गुण, कर्म व स्वभावों

thearyasamaj.org

को जानने पर ही सम्भव हो सकती है। दूसरी यह बात कही जा रही है कि ईश्वर की आज्ञा का पालन करना। मनुष्य किसी के अनुसार तभी चल सकता है जब उसे यह पता चले कि वह मुझ से श्रेष्ठ हो या उससे लाभ हो और वह लाभ भी सर्वाधिक हो उसके अनुसार चलने का यह भी कारण है वह मुझ से अधिक शक्तिशाली हो। इस कारण शक्तिशाली से भय होता है और भय के कारण उनके अनुसार चलता है। यहाँ पर ईश्वर में सर्वाधिक श्रेष्ठता, सर्वाधिक लाभ और सर्वाधिक शक्ति विद्यमान है ऐसा बताया जा रहा है। इसी कारण मनुष्य को कहा जा रहा है कि उसकी आज्ञा का पालन करना चाहिए। सब से पहले मनुष्य को ईश्वर की जानकारी प्राप्त करना चाहिए और वह जानकारी वेद को पढ़ने (स्वाध्याय करने) से होगी। वेद में ईश्वर के अलग-अलग गुणों, कर्मों व स्वभावों का वर्णन आया है। उनको पढ़ कर, मनन-चिन्तन करके अच्छी प्रकार समझ लेना चाहिए।

स पर्य्यगाच्छुक्रमकायमव्रणमस्नाविरं शुद्धमपापविद्धम्।
कविर्मनीषी परिभूः स्वयम्भूर्याथातथ्यतोऽर्थान्व्यदधा-
च्छाश्वतीभ्यः समाभ्यः।।

(यजुर्वेद ४०.८)

यहाँ पर वेद स्पष्ट रूप से ईश्वर के गुण, कर्म, स्वभावों को बताते हुए कहता है वह परम-पिता परमेश्वर सभी दिशाओं में व्याप्त-विद्यमान है। ऐसा कोई स्थान (जगह) नहीं है जहाँ ईश्वर विद्यमान न हो अर्थात् ईश्वर **सर्वव्यापक** है। परमेश्वर शुक्र है अर्थात् सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को सहजता-सरलता-बिना कठिनाई के स्वयं निर्माण करता है। उसमें अनन्त सामर्थ्य है, इसलिए ईश्वर **सर्वशक्तिमान्** है। जगदीश्वर **अकायम्** है अर्थात् वह कभी भी शरीर (अवतार) धारण नहीं कर सकता, क्योंकि वह अखण्ड, अनन्त और निर्विकार है। इस कारण ईश्वर स्थूल शरीर, सूक्ष्म शरीर और कारण (सत्त्व, रज, तम रूपी) शरीर में नहीं आता है। इन तीनों शरीरों के बन्धनों में न आने के कारण ही उसे अकायम् कहा गया है। ईश्वर **अव्रणम्** है अर्थात् ईश्वर में किसी भी प्रकार का छेद नहीं है और न ही उसमें कोई छेद कर सकता है। ईश्वर **अस्नाविरम्** है अर्थात् ईश्वर नस-नाड़ी के बन्धन में कभी भी नहीं आ सकता क्योंकि शरीर में ही नहीं आता हो तो फिर नस-नाड़ी में कैसे बन्धेगा। परमेश्वर **शुद्धम्** है अर्थात् अविद्या, अस्मिता, राग, द्वेष और अभिनिवेश रूपी दोषों से सर्वथा पृथक्-रहित होने से सदा पवित्र-शुद्ध है। जगदीश्वर **अपापविद्धम्** है अर्थात् जो पापयुक्त, पापकारी, पाप में प्रीति करने वाला कभी नहीं हो सकता इसलिए ईश्वर निष्पाप है। ईश्वर **कवि** है अर्थात् सर्वज्ञ-सर्ववित्-महाविद्वान् है, जिसकी विद्या का अन्त कोई भी मनुष्य नहीं ले सकता या सब मनुष्य मिल कर भी अन्त नहीं पा सकते इसलिए ईश्वर को कवि कहा है। ईश्वर **मनीषी** है अर्थात् सभी आत्माओं के मनोवृत्ति को जानने वाला है, सब का साक्षी है और सब के मनों को दमन करने वाला है। ईश्वर **परिभू** है अर्थात् सभी दुष्ट कर्मों को करने वाले पापियों का तिरस्कार-दण्ड देने वाला है। परमेश्वर **स्वयम्भू** है अर्थात् अनादि स्वरूप है जिसकी संयोग से उत्पत्ति, वियोग से विनाश, माता, पिता, गर्भवास, जन्म, वृद्धि और मरण नहीं होते, ऐसे वह स्वयं सिद्ध परमेश्वर स्वयम्भू कहलाते हैं। (**शाश्वतीभ्यः**) अर्थात् सनातन अनादिस्वरूप अपने-अपने स्वरूप से उत्पत्ति और विनाश रहित (**समाभ्यः**) जीवात्माओं के लिए (**यथातथ्यतः**) यथार्थ भाव से (**अर्थान्**) परमेश्वर ने यथावत् सत्य, सत्य विद्या जो चार वेदों द्वारा सब पदार्थों को (**व्यदधात्**) विशेष रूप से बना कर उपदेश किया है।

उपरोक्त यजुर्वेद के मन्त्र में ईश्वर के गुण, कर्म व स्वभावों की चर्चा आई है, इसी प्रकार चारों वेदों में ईश्वर के अनेकों गुण, कर्म व स्वभावों की चर्चा है। वेद स्वाध्याय के द्वारा ईश्वर के यथार्थरूप को जान कर ही मनुष्य ईश्वरीय आज्ञा का पालन कर सकता है। ईश्वराज्ञा पालन के लिए ईश्वर की सर्वश्रेष्ठता का बोध होना चाहिए ईश्वर से सर्वाधिक लाभ का बोध होना चाहिए और ईश्वर से सर्वाधिक भय प्राप्त होना चाहिए। यह तभी सम्भव है जब ईश्वर का ज्ञान हो। इसलिए ईश्वर का बोध वेद द्वारा किया जाना चाहिए, जिससे मनुष्य को ईश्वर की सर्वव्यापकता, सर्वज्ञता, न्यायकारिता और सर्वशक्तिमत्ता का पता लग सके। जब मनुष्य ईश्वर के यथार्थ स्वरूप को वेद द्वारा जान लेता है तब उसे पता लगता है कि ईश्वर ने आत्माओं के लिए कितना उपकार किया है, कर रहे हैं और करेंगे। ईश्वर के अनगिनत उपकारों को जान कर ही मनुष्य ईश्वर के प्रति पूर्ण रुचि व आकर्षण उत्पन्न कर सकता है। जब ईश्वर के प्रति पूर्ण श्रद्धा-विश्वास, रुचि, आकर्षण उत्पन्न हो जाता है तब ईश्वरीय उपदेश-आदेश मनुष्य के लिए ग्राह्य-अपनाने योग्य दिखाई देने लगता है। ऐसी स्थिति में मनुष्य मानों आँख मीच कर सभी आदेशों का पालन करने लगता है। जैसे-जैसे ईश्वर-आदेश का पालन करता जाता है वैसे-

thearyasamaj.org

वैसे मनुष्य में विशेष गुण-दया, परोपकार, आत्मीयता, विनम्रता, सत्य, न्याय आदि अनेक गुण आ जाते हैं। जिससे मनुष्य देवत्व की ओर बढ़ता जाता है। जब मनुष्य प्राणिमात्र के लिए अभय प्रदान करता है, मन-वचन व शरीर से सत्याचरण करता है, पूर्ण अस्तेय का पालन करता है, पूर्ण संयम (ब्रह्मचर्य) वर्तता है, पूर्ण अपरिग्रह का पालन करता है, अन्दर व बाहर से शुद्ध होता है, उपलब्ध साधनों में पूर्ण सन्तुष्ट रहता है, सब को सहन करता है, स्वाध्याय निरन्तर करता है, ईश्वरानुभूति बनाया रखता है तब पूर्ण देवत्व को प्राप्त हो जाता है।

इसलिए मनुष्य केवल मनुष्य रह कर ही जीवन की इतिश्री न करे क्योंकि मनुष्य शरीर का मिलना अनेक पुण्य कर्मों का प्रतिफल है। उसे यूँ ही नहीं गवाना चाहिए अर्थात् ईश्वर प्रदत्त अमूल्य अवसर का पूर्ण लाभ उठाने के लिए ईश्वर के गुण, कर्म व स्वभावों को वेद के माध्यम से जान कर ईश्वर-आज्ञा के अनुरूप चलकर मानव जीवन का मुख्य लक्ष्य मोक्ष को प्राप्त करने के लिए विशेष प्रयत्न करना चाहिए। इसलिए वेद के वचन को सार्थक करने हेतु उद्यत होना ही मनुष्य का परम कर्तव्य है।

- ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर

पुस्तक - समीक्षा

पुस्तक का नाम - आनन्द भजनामृत

लेखन एवं संकलन - श्री अशोक प्रभाकर चोणा

प्रकाशक - अशोक प्रभाकर चोणा, जी-१६, महेश नगर, अम्बाला छावनी-१३३००१

पृष्ठ संख्या - ८४

ईश्वर सर्वव्यापक है। उसकी अनुकम्पा एवं देन अनुपम है। ईश्वर की महिमा का गुणानुवाद वेद भी करते हैं। सामवेद गायन का हृदयस्पर्शी ग्रन्थ है। इसके द्वारा सभी रसों की अनुभूति होती है। भजनों का माध्यम ईश्वर को समर्पण की भावना संजोता है। हृदय से सप्त स्वर प्रस्फुटित होकर ईश्वर का धन्यवाद करता है। प्रभु स्मरण के लिए भजन गाना भाव विभोर करता है। आज वैदिक विद्वानों का सम्मान है, उसी अनुरूप भजनोपदेशकों का भी है। मंच की शोभा में चार चाँद लग जाते हैं। श्रोता भी दत्तचित्त हो जाते हैं।

श्री प्रभाकर चोणा ने आनन्द भजनामृत की रचना लेखन एवं संकलन रूप में की है। उन्होंने दो भागों में इसे बांटा है- प्रथम भाग में १० भजन श्री आनन्द प्रकाश जी जो इनके पिता है, द्वारा लिये गये। दूसरे भाग में उनके द्वारा लेखन व संकलन के भजन हैं। सभी भजनों की तर्ज सुमधुर पर आधारित है।

ईश्वर की सत्ता, प्रकृति एवं रचना का सामञ्जस्य इन भजनों के द्वारा प्राप्त होता है। भक्ति रस की अजस्र धारा प्रवाहित होती रहे। ईश्वर का पारावार कोई नहीं पा सकता। वेद, उपनिषद् भी ईश्वर महिमा का गान करते-करते थक गये। भजन के माध्यम से ईश्वर के प्रति समर्पित की भावना हो जाय, ऐसे ही भजनों की प्रस्तुति आनन्द भजनामृत की रचना है। भाषा सरल है। ईश्वर एकाकार के लिए भजनों का माध्यम उत्तम है।

१. ऋषिवर सा कोई हुआ न होगा, ऋषिवर सा कोई तेजस्वी निर्भय धर्म का हितैषी, दयानन्द जैसा कहाँ कोई होगा?

२. गुरु विरजानन्द जो तुम जग में न आते, देश व धर्म कितनी हानि उठाते।

३. विश्वमोदक विनय विधिप्रद, हे निरञ्जन निर्विकार, अधमोधारक पतित पावन निर्गुण तुल सर्वाधार......

मुझे ये भजन बहुत ही प्रेरक लगे। पाठकों को भी अन्य भजन स्वाध्याय से प्रिय व प्रेरणादायी लगे। स्वयं प्रेरित होकर अन्य को प्रेरित करे यही इच्छा भजनोपदेशक की है। अवश्य लाभान्वित हों।

- देवमुनि, ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर

जो नित्य पदार्थों में नित्य और स्थिरों में भी स्थिर परमेश्वर है, उस समस्त जगत् के उत्पन्न करने वाले परमेश्वर की प्राप्ति और योगाभ्यास के अनुष्ठान से ही ठीक-ठीक ज्ञान हो सकता है, अन्यथा नहीं।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ७.२५

thearyasamaj.org

कुछ तड़प-कुछ झड़प

– राजेन्द्र जिज्ञासु

पिछले अंक का शेष भाग.....

यहाँ उक्त ग्रन्थ के लेखक के कुछ विचार देते हैं:-

१. हिन्दुओं के शिवलिङ्ग अथवा कृष्ण जी की गोपियों का वेदों में कोई वर्णन नहीं मिलता। न ही वेदों में किस्से कहानियाँ हैं।

२. जो खुदा अपने राज्य के लिये मनुष्य पर आश्रित है वह कैसा कादिरे मुतलिक (शक्तिमान) है?

३. संसार के किसी नबी या अवतार के जीवन से यह प्रमाणित नहीं होता कि सूर्य, चन्द्र, तारे अथवा वायु उसके अधिकार में रहे हों। यद्यपि इस सम्बन्ध में तोता मेना की कहानियों की कमी नहीं परन्तु सच्चाई इसकी साक्षी नहीं देती।

४. इस बात की सम्भावना है कि अल्ला मियाँ के लिये नरक (दोजख) को विस्तार देना (फैलाना) आवश्यक हो जावे।

५. शैतानों को (मरियम में) खुदा का एजेन्ट कहा गया है।

६. कुरान का नजात का दृष्टिकोण शारीरिक भोग विलास (इशरत) है और यही कारण है कि खुदा कयामत के दिन मृतकों को फिर वैसे ही जीवित करेगा जैसे कि वे जीवन में थे तथा जीवन का अन्त वैदिक ध्येयधाम से सर्वथा पृथक् है जो परमात्मा तथा आत्मा के मिलाप की आशा है।

७. इस्लाम में कबर पूजा लानत (धिक्कार योग्य) है।

८. आश्चर्य है कि यदि खुदा को ऋण की आवश्यकता पड़े तो वह न केवल सूद देता है प्रत्युत अधिक सुविधा के रूप में ऋण देने वाले के पाप भी क्षमा करता है तो फिर सूद लेना हराम (वर्जित) कैसे?

९. गालिब ने लिखा है:-

हमको मालूम है जन्नत की हकीकत
दिल के बहलाने को गालिब यह ख्याल अच्छा है

हजरत दाग ने लिखा है:-

जिसमें लाखों बरस की हुरें हों
ऐसी जन्नत का क्या करे कोई

१०. डॉ. इकबाल ने तो एक खुतबे में जन्नत तथा जहन्नुम दोनों से ही अपने आपको पृथक् कर लिया है अर्थात् वह दोनों में विश्वास नहीं करता।

एक ने तो यहाँ तक लिखने का साहस किया है

हमारा दिल घुमाने को, यह क्या हूरों का चक्कर है।
हमें उल्लू बनाने को, यह क्या हूरों का चक्कर है।।

ये जो विचार हमने उद्धृत किये हैं इन पर हम क्या टिप्पणी करें। इतना तो मानना ही पड़ेगा कि सत्यार्थप्रकाश ने मुसलमानों को सोचना सिखा दिया। इस्लाम में ऋषि का सत्यार्थप्रकाश बोल रहा है। गून्ज रहा है। इस्लाम वैदिक धर्म के द्वार पर आकर भीतर झांक रहा है। आवश्यकता है एक पं. लेखराम की जो प्यार से झांकने वालों को भीतर खींच लावे। जो झिझक है उसे दूर करने के लिए एक पं. रामचन्द्र देहलवी की युग को प्रतीक्षा है।

बड़ों से सीखा:- पं. गुरुदत्त जी विद्यार्थी धुन के धनी थे। एक बार मन में लहर आई तो अपने पुस्तकालय की सब पुस्तकें अपने प्रेमियो को भेंट कर दीं। संस्कृत साहित्य, हिन्दी की कुछ सैद्धान्तिक पुस्तकें, फारसी भाषा का दीवो हाफिज तथा अमरीकन विद्वान् एण्ड्रयूज की पुस्तकें अपने स्वाध्याय के लिए रख लीं। दीवाने हाफिज स्थान-स्थान पर कई वेदोक्त उपदेश पाकर मन सचमुच झूम उठता है। एक पद्य में हाफिज महाकवि ने एक सारगर्भित सीख दी है:-

कू फुर्सिते कि खिदमे पीरे मुगाँ कुन्म।
वज पिन्दे पीर दौलते खुद रा जवाँ कुन्म।।

अर्थात् समय व अवसर कहाँ कि मैं माननीय वृद्ध गुरु की सेवा करूँ तथा उस वयोवृद्ध की सीख से अपने भाग्य को युवा बना लूँ। जो युवा साधु और विद्या प्रेमी वृद्ध गुरुजनों की संगति में रहे, वे गुरुमुख से सुन सुनकर बहुत कुछ सीख कर गम्भीर विद्वान् बन गये। तभी तो साध मण्डली बनाकर पग यात्रायें करके प्रचार करते थे। अब यह परम्परा टूट चुकी है। हर कोई अपना-अपना आश्रम बनाकर सत्ता, सम्पत्ति व प्रतिष्ठा पाना चाहता है।

अनुभवी विद्वानों से यह सीखा के प्रत्येक विषय पर जो कुछ लिखो व बोलो उस की जाँच, परख और मिलान आवश्य करो। छोटे बड़े जानकारों से सम्पर्क करके हर बिन्दु की पड़ताल करने से ही आप जनहित कर सकते हैं। इसके बिना जन हानि से पहले आपकी हानि है।

आर्यसमाज में यह परम्परा भी टूट गई है। पं.

thearyasamaj.org

शान्तिप्रकाश जी के दिल्ली में प्रतिष्ठा का प्रश्न बन चुके एक शास्त्रार्थ में एक प्रमाण देने के लिए लाया गया। उन्हें वह प्रमाण कण्ठाग्र था परन्तु आर्यों से कहा अमुक ग्रन्थ लाकर दो तब मैं कल शास्त्रार्थ करूँगा। रात-रात में प्रो. रामसिंह जी तथा ला. रामगोपाल एक मुसलमान की दुकान खुलवाकर वह ग्रन्थ लाये जिससे आर्य समाज की गौरवपूर्ण विजय हुई। ऐसी-ऐसी घटनायें देख सुनकर हमारे मन पर गहरा प्रभाव पड़ा और संस्कार बना।

ऋषि जीवन पर हमने नये-नये प्रमाण व टिप्पणियाँ दी हैं। गुणी विद्वान् व पाठक हमारे श्रम का मूल्यांकन कर ही रहे हैं। हम सबको बताते हैं कि यह सब बड़ों से तो सीखा ही वर्तमान में भी अनेकों से सहयोग व सीख ली। प्रतिदिन दस-पन्द्रह से चलभाष से महत्त्वपूर्ण विचार विमर्श करता था। कुछ युवकों को कई कार्य सौंपे। डॉ. धर्मवीर जी, परोपकारिणी सभा कार्यालय के सज्जनों, अजमेर के श्री सोनी जी, डॉ. सुरेन्द्रकुमार जी, श्री भावेश मेरजा, श्री सत्यजित् जी आर्य, श्री सोमदेव जी, श्री यशपाल जी मेरठ, श्री दयालमुनि जी, श्री वैद्यराज महेश भाई भावनगर गुजरात, श्री सत्येन्दसिंह जी, डॉ. वेदपाल जी, श्री धर्मपाल वेदपथिक, बनेड़ा राज्य के राजवंश के वर्तमान मुखिया, श्री ओममुनि जी, श्री देवनारायण जी अलीगढ़, वैद्य महीपाल जी आर्य चामघेड़ा, श्री अनिल, श्री महेन्द्र आर्य चामघेड़ा, डॉ. अशोक आर्य, श्रीयुत् राहुल जी अकोला, प्रिय मनोज आर्य दादरी, श्री राघव भाई मुम्बई, प्राचार्य रमेश जीवन, श्री विरजानन्द जी, आर्य समाज भुज कच्छ, आर्य समाज फर्रूखाबाद, छलेसर, आर्यसमाज बूढ़ाना द्वार मेरठ आदि कुछ नाम यहाँ दिये हैं। हमने छोटे हों या बड़े, इस बात को महत्त्व न देते हुए किसी को कोई कार्य सौंपा तो किसी से विचार विमर्श कर लाभ प्राप्त कर ग्रन्थ की गरिमा बढ़ाकर आर्य समाज की ठोस सेवा करने का पुण्य लूटा है। बस एक उदाहरण देकर इस प्रसंग को यहीं समाप्त करते हुए सब लेखकों से कर जोड़ विनती करेंगे कि आर्य पत्रों में आपधापी मत किया करें। हदीसें मत गढ़िये। जो लिखें बिना मिलान किये प्रमाण मत दिया करें।

देश भाषा क्या थी?:- पं. लेखराम जी ने ऋषि जीवन में लिखा है कि राजकोट में ऋषि ने देश भाषा में एक व्याख्यान दिया। इस व्याख्यान की धूम मच गई। ऋषि संस्कृत में शास्त्रार्थ करते थे और हिन्दी में व्याख्यान देते थे। फिर यह 'देश भाषा' में व्याख्यान का क्या अर्थ? हमने पं. लेखराम जी के ग्रन्थ की अन्त:साक्षी से इसे गुजराती में दिया गया व्याख्यान माना है। पहली बार किसी ग्रन्थ में यह छपा है कि राजकोट में गुजराती में ओजस्वी व्याख्यान देकर धूम मचा दी। सब विद्वान् मेरे प्रश्न को सुनकर चकित रह गये। यह प्रश्न कभी किसी ने उठाया ही नहीं था। सबने सहर्ष स्वीकार किया की 'देशभाषा' से अभिप्राय गुजराती ही है। श्रीमान् भारतीय जी 'देशभाषा' हिन्दी बताते हैं। उनका मत एक अपवाद जानना चाहिये। इस एक प्रसंग पर विचार करते-करते हम एक मास से ऊपर समय तक गुजरात और गुजरात से बाहर गुणियों से चलभाष पर विचार करते रहे। राधा स्वामी गुरु हजूर जी महाराज ने भी लिखा है कि मुम्बई में ऋषि जी ने गुजराती में भी व्याख्यान दिये। स्वामी सत्यानन्द जी ने भी ऋषि की साहित्यिक सुललित गुजराती बातचीत का उल्लेख किया है। यह बात किसी को भले ही छोटी लगे इसका अपना ही महत्त्व है। बड़ों से सीख पाकर हम लाभान्वित हुए हम चाहेंगे कि सभी ऐसे ही बड़ों का अनुचरण करें।

किसके पास जायें:- एक उत्साही युवक पर विधर्मियों ने अभियोग चला दिया है। सूचना पाकर कई दिन उस की निर्दोषता के लिए प्रमाण निकालने में लग गये। इतने में एक अन्य बन्धु ने परोपकारिणी सभा को सूचना दी कि रामपाल के चेलों ने उस पर केस कर दिया है। सभा ने धर्मरक्षा के लिए सहयोग का विश्वास दिलाया। धर्मरक्षा करने वाले दीवानों की रक्षा कौन करे? वे किसके पास जायें? इस विकट वेला में महात्मा नारायण स्वामी, स्वामी स्वतन्त्रानन्द, स्वामी वेदानन्द की गद्दियों की शोभा बढ़ाने वाले विद्वान् साधुओं का अभाव चुभता है। घर गृहस्थी निपटा कर अनेक व्यक्ति वानप्रस्थ की वेला में पूरा समय इस साधना में लगायेंगे तो हम बच पावेंगे।

एक गुणी सज्जन से भेंट:- लाला लाजपत राय जी द्वारा स्थापित लोकसेवक मण्डल के एक सुयोग्य युवक स्तम्भरूप कार्यकर्ता श्री अजय शर्मा से भेंट हुई तो आपने पूछा, क्या लाला लाजपतराय आर्य समाजी थे अथवा.........। उत्तर जो देना था सो दिया परन्तु हमें लगा कि दोष किसी का नहीं हमारा है जो घुसपैठियों व संस्थावादियों के हत्थे चढ़कर हमने सैद्धान्तिक प्रचार छोड़कर समाचार पत्र प्रचार का धन्धा चला दिया। आर्य समाज का स्वराज्य संग्राम को योगदान पर आये दिन लेख छपते हैं, भाषण होते हैं परन्तु हमने किसी के मुख से यह नहीं सुना कि हुतात्मा भगवती चरण सपरिवार ऋषि की मथुरा जन्मशताब्दी में आचार्य उदयवीर जी के संग गये थे। कोई नहीं यह बताता कि

thearyasamaj.org

स्वामी सत्यप्रकाश ही ऐसे अकेले वैज्ञानिक थे जो स्वराज्य संग्राम में जेल गये थे। कोई नहीं कहता कि स्वामी अनुभवानन्द जी एकमेव संन्यासी थे जिन्हें गोरों ने फांसी दण्ड सुनाया। हाँ कल्पना की उड़ान से भीष्म स्वामी को क्रान्तिकारियों की सूची में ले आये। कहानी गढ़ने में क्या लगता है। प्रमाण कुछ तो दो। हम उठाने वाले बिन्दु तो उठाते नहीं।

पं. लेखराम जी की निराली शानः- पं. लेखराम जी की शान निराली है। उन पर लिखने बोलने के लिए सैंकड़ों पुस्तकें और सहस्रों लेखों के आर-पार जाना पड़ता है। एक मुसलमान विद्वान् ने पण्डित जी के लिये 'कोहे वकार' गौरव गिरि विशेषण का प्रयोग किया है। हमारी इस खोज पर मान्य शरर जी झूम उठे। केवल एक ही मुस्लिम नेता के लिए एक मुसलमान ने इस विशेषता का प्रयोग किया है। सहस्रों हिन्दुओं, सिखों को धर्मच्युत होने से बचाने वाले साहस के अंगारे पं. लेखराम की शान निराली थी । महात्मा विशनदास उदासी सन्त विद्वान् डी.ए.वी. के प्रिं. रामकृष्ण बख्शी, सेना के सरदार सुन्दर सिंह,पण्डित लेखराम की ही देन थे । श्री राजा किशनप्रसाद प्रधानमन्त्री हैदराबाद को मुसलमान होने से देहलवी जी ने बचाया था परन्तु उनके हृदय परिवर्तन के लिए पं. लेखराम जी के मौलिक तर्क दिये गये थे। यह स्वयं पूज्य देहलवी जी ने लिखा है।

- वेद सदन, अबोहर, पंजाब-१५२११६

सत्यार्थ प्रकाश का प्रचार प्रसार

गत विश्व पुस्तक मेले में सभा द्वारा पांच हजार सत्यार्थप्रकाश (हिन्दी), दो हजार सत्यार्थप्रकाश (अंग्रेजी), ऋषि दयानन्द की जीवनी पाँच हजार, दो हजार सी.डी. का निःशुल्क वितरण किया। जिसकी सज्जनों द्वारा बहुत प्रशंसा की गई। अब सज्जनों का फिर उसी प्रकार के कार्यक्रम की मांग कर रहे हैं।

इस बार सभा ने कार्यक्रम को आगे बढ़ाते हुए सत्यार्थप्रकाश को चार भाषाओं में वितरित करने की योजना बनाई है, क्रमशः हिन्दी, अंग्रेजी, पंजाबी, उर्दू का सत्यार्थप्रकाश प्रकाशन की प्रक्रिया में है।

ऋषि जीवनी भी अंग्रेजी, हिन्दी दोनों भाषाओं में तैयार कराई जा रही है। सभी धर्मानुरागियों से निवेदन है, इस कार्य के लिए आप जितना अधिक सहयोग प्रदान करेंगे। सभा उतने ही विशाल रूप में इस कार्यक्रम को सम्पन्न करेगी। पूर्व की भाँति आपका सहयोग व समर्थन प्राप्त होगा।

सहयोग राशि निम्न क्रमांक के खातों में जमा कराई जा सकती है अथवा बैंक ड्राफ्ट, चेक द्वारा प्रेषित कर कार्यालय में जमा कराई जा सकती है।

खाताधारक का नाम - परोपकारिणी सभा, अजमेर

१. बैंक खाता संख्या-091104000057530 बैंक का नाम-आई.डी.बी.आई. बैंक, पावरहाउस के सामने, जयपुर रोड, अजमेर।

IFSC - IBKL0000091

२. बैंक खाता संख्या -10158172715 बैंक का नाम - भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।

IFSC - SBIN0007959

परोपकारी के सुधी पाठकों के लिए आवश्यक सूचना

परोपकारी शुल्क भेजते समय नये या पुराने ग्राहक के उल्लेख के साथ-साथ ग्राहक संख्या अवश्य लिखें अन्यथा व्यक्ति के नाम से शुल्क जमा करने में कठिनाई आती है। फलस्वरूप पाठकों के पास पत्रिका नहीं पहुँच पाती है। ऐसे ही अपना नाम हटवाते व जुड़वाते समय दूरभाष संख्या सहित अपना पूरा विवरण लिखकर भेजें। ई.एम.ओ. के द्वारा शुल्क भेजने वाले ग्राहक भी सन्देश के साथ अपनी ग्राहक संख्या सहित पूरा विवरण भेजें। परोपकारिणी सभा आप सभी का सहयोग चाहती है।

thearyasamaj.org

(परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित)

योग–साधना शिविर (प्राथमिक व द्वितीय स्तर)

दिनांक : १२ से १९ अक्टूबर, २०१४

आज समाज के अनेक क्षेत्रों में अनेक प्रकार से लोग साधना के लिए प्रयासरत हो रहे हैं। अनेक प्रशिक्षकों द्वारा इस विषयक ज्ञान–विज्ञान भी प्रदान किया जा रहा है। फिर भी साधकों को साधना की सन्तुष्टिदायक स्थिति प्राप्त नहीं हो पा रही है। इसका कारण है कि साधना के विषय **साध्य, साधन, साधक व अन्य साधकों–बाधकों** के ज्ञान का वैदिक परम्परा से दूर होना। इस योग–साधना शिविर में इन्हीं विषयों का वैदिक–दर्शनों के द्वारा ज्ञान करवाया जायेगा, उससे सम्बन्धित जिज्ञासाओं का समाधान व आत्मनिरीक्षण के द्वारा अपनी उन्नति का मापदण्ड बताया जायेगा। यह शिविर अवश्य ही आपकी साधना की उन्नति में विशेष साधन बनेगा, जिससे कि मानव जीवन के मुख्य व चरम लक्ष्य की प्राप्ति उत्तरोत्तर काल में आप अपने निकट अनुभव करने लगेंगे।

प्रार्थियों हेतु नियम व अनुशासन

१. प्रत्येक प्रार्थी के लिए पूर्ण मौन अनिवार्य होगा।
२. शिविर के काल में किसी साधक के द्वारा नियम व अनुशासन भंग करने पर उसे शिविर के मध्य में ही शिविर छोड़ने के लिए बाध्य किया जा सकता है।
३. पूरे शिविर में साधक के द्वारा किसी भी माध्यम से बाह्य–सम्पर्क करना निषिद्ध रहेगा।
४. शिविर काल में किसी भी साधक को ऋषि उद्यान परिसर से बाहर जाने की अनुमति नहीं होगी।
५. साधकों की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति ऋषि–उद्यान परिसर में ही की जायेगी।
६. बाह्य–वृत्ति उत्पादक साधनों जैसे समाचार–पत्र पढ़ना, आकाशवाणी श्रवण व दूरदर्शन देखना, पर पूर्ण प्रतिबन्ध रहेगा।
७. किसी प्रकार का शारीरिक रोग यथा सर्दी, खाँसी, जुकाम अथवा अन्य कोई ध्वनि उत्पादक रोग वाले को प्रवेश नहीं दिया जायेगा।
८. बच्चों को साथ लाये जाने पर प्रार्थी को शिविर में प्रवेश नहीं दिया जाएगा।
९. किसी भी मादक द्रव्य, चाय–कॉफी आदि का सेवन निषिद्ध होगा।
१०. शिविर के प्रारम्भ दिन से लेकर समापन–सत्र पर्यन्त पूर्ण रूप से शिविर में भाग लेना अनिवार्य होगा।
११. नियम व अनुशासन के पालन को आवेदन में ही लिखित स्वीकार करना होगा।

उपरिलिखित किसी भी नियम व अनुशासन का पालन करने में असमर्थ व अयोग्य प्रार्थी को शिविर में प्रवेश नहीं दिया जायेगा।

प्रार्थियों के लिए सूचनाएँ–मन्त्री परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर (राज.) से संपर्क कर शिविर से पूर्व शुल्क जमा करवा कर अपने नाम का पंजीयन करा लें। शिविर में माता–बहिनें भी भाग ले सकती हैं। पुरुषों एवं महिलाओं के आवास की सामूहिक व्यवस्था पृथक्–पृथक् की जाती है। पृथक् कक्ष चाहने वालों को अतिरिक्त शुल्क १००० से २००० रु. देय होता है। पृथक् कक्ष की व्यवस्था पूर्व सूचना व उपलब्धता के अनुसार की जाती है। ऋषि उद्यान में दरी, गद्दे, तकिए एवं बर्तन उपलब्ध हैं शेष दैनिक उपयोग की वस्तुएँ यथा मंजन, ब्रश, साबुन, तेल, दवाएँ, बिछाने–ओढ़ने की चादरें, लिखने के लिए संचिका (नोटबुक), लेखनी, करदीप (टार्च) आदि को साधक अपने साथ लाएँ। वस्त्र सादगी एवं शिष्टाचार के अनुकूल हों, आभूषणों एवं सुगन्धित द्रव्यों का उपयोग न हो। आपके पास योगदर्शन हो तो साथ लाएँ अन्यथा यहाँ भी क्रय किया जा सकता है। सतर्कता की दृष्टि से कीमती वस्तुएँ साथ न लायें। यदि आपको कोई संक्रामक रोग, तेज खांसी, दमा, मिर्गी आदि मानसिक रोग, वायु विकार या अन्य गंभीर रोग हो, तो कृपया शिविर में आना स्थगित रखें। यदि अपने कार्य स्वयं न कर सकते हों तो सहायक साथ

theary asamaj.org

में लायें। अजमेर या निकटवर्ती स्थल (पुष्कर) देखना चाहें, तो शिविर से पूर्व या पश्चात् अतिरिक्त समय निकाल कर आयें। लौटने का रेल-आरक्षण शिविर में आने से पूर्व करवा लें। अजमेर पहुँचने की सूचना घर पर देनी हो तो शिविर स्थल में प्रवेश से पहले दे देवें। खाने पीने की वस्तुएँ साथ न लावें।

यह शिविर परोपकारिणी सभा, अजमेर के सौजन्य से आयोजित किया जा रहा है। शिविर शुल्क १००० रु. मात्र जमा करना होगा। शिविर में भाग लेने वालों को शिविर के प्रारंभ दिनांक को सायं चार बजे तक शिविर स्थल ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर में पहुँच जाना आवश्यक है क्योंकि इसी दिन शाम को शिविर के अनुशासन एवं विभिन्न व्यवस्थाओं संबन्धी महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ दी जाएँगी। शिविर का समापन अन्तिम दिन दोपहर एक बजे तक होगा। शिविर समाप्ति से पूर्व जाने की अनुमति नहीं दी जायेगी।

शिविर से आपका जीवन श्रेष्ठतर व पवित्रतर बने, इन्हीं शुभकामनाओं के साथ।

मंत्री, परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर दूरभाष : ०१४५-२४६०१६४
email:psabhaa@gmail.com

: मार्ग :

ऋषि उद्यान शिविर स्थल पर पहुंचने के लिए फॉयसागर की ओर जाने वाली सिटी बस या ऑटो-रिक्शा, रेल्वे स्टेशन व बस स्टेण्ड से (वाया-आगरा गेट/फव्वारा चौराहा) सर्वदा सुलभ रहते हैं।

-संयोजक

धनराशि भेजने हेतु सूचना

चैक, ड्राफ्ट, धनादेश (मनीआर्डर) द्वारा राशि भेजने वाले उस पर '**मन्त्री परोपकारिणी सभा**' अवश्य लिख दें। दानी महानुभाव ऑनलाइन भी राशि जमा करवा सकते हैं। भारतीय स्टेट बैंक में एक सहस्र तक की राशि जमा कराने वाले २५ रु. **बैंक सेवा शुल्क के रूप में अतिरिक्त** जमा करवाने की कृपा करें। कृपया राशि निम्नांकित बैंकों में ऑनलाइन भिजवाकर, जमा कराई गई स्लिप के साथ उद्देश्य लिखकर सभा कार्यालय को सूचित करवाने का कष्ट करें।

खाताधारक का नाम - परोपकारिणी सभा, अजमेर

१. बैंक खाता संख्या-091104000057530 बैंक का नाम-आई.डी.बी.आई. बैंक, पावरहाउस के सामने, जयपुर रोड, अजमेर।
IFSC - IBKL0000091

२. बैंक खाता संख्या -10158172715 बैंक का नाम - भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।
IFSC - SBIN0007959

परोपकारिणी सभा द्वारा आयोजित आगामी कार्यक्रम

१२ से १९ अक्टूबर, २०१४- **योग-साधना शिविर (प्राथमिक व द्वितीय स्तर),**
सम्पर्क- ०१४५-२४६०१६४

ऋषि मेला - ३१ अक्टूबर तथा १, २ नवम्बर २०१४

thearyasamaj.org

ध्यान प्रशिक्षण योजना

ध्यान का महत्त्व सदा से रहा है। आज के तनाव व प्रतिस्पर्धा के वातावरण में यह अधिक आवश्यक हो गया है। नई पीढ़ी यज्ञादि कर्मकाण्ड की अपेक्षा-ध्यान में अधिक रुचि व आकर्षण रखने लगी है। प्रौढ़ों व वृद्धों की आध्यात्मिक उन्नति की चाह ध्यान के माध्यम से पूरी हो सकती है। समाज सुधार व उन्नति के इच्छुक व इसमें प्रयत्नशील आर्यों को ध्यान प्रशिक्षण का उपाय सार्थक लगेगा। ऐसी इच्छा वाले सज्जन अपने यहाँ किसी भी आर्यसमाज, आर्य संस्था, विद्यालय, महाविद्यालय, गुरुकुल, सार्वजनिक स्थान आदि में 'ध्यान-प्रशिक्षण' करवाना चाहते हों, तो कृपया अपने व कार्यक्रम-स्थान, समय आदि की पूरी सूचना के साथ सम्पर्क करें।

परोपकारिणी सभा द्वारा प्रशिक्षित अनेक ध्यान-प्रशिक्षक इस कार्य में सेवा के लिए तैयार हैं। ये ध्यान-प्रशिक्षक आपके जनपद के निकट भी उपलब्ध हो सकते हैं। आयोजकों को कार्यक्रम हेतु स्थान, बैठक-व्यवस्था, आवश्यक हो तो माईक आदि की व्यवस्था, प्रशिक्षक के निवास, भोजन, आवागमन यात्रा आदि की व्यवस्था करनी होगी।

सम्पर्क-संयोजक, ध्यान प्रशिक्षण योजना, परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर, ३०५००१, दूरभाष-०१४५-२४६०१६४, ईमेल-psabhaa@gmail.com

यू-ट्यूब पर वीडियो प्रवचन उपलब्ध

वेद एवं आर्ष साहित्य में रुचि रखने वाले आर्यजगत् एवं धार्मिक जनों को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि अब यू-ट्यूब पर अनेक वैदिक आर्य विद्वानों के सैंकड़ों नये-नये प्रवचन उपलब्ध हैं। विश्व में कहीं पर भी इन्टरनेट से जुड़ कर ये प्रवचन निःशुल्क सुने-देखे तथा डाउनलोड किये जा सकते हैं। आप जहाँ भी हैं, यदि आपको वैदिक आर्ष ज्ञान की पिपासा है, वेद एवं आर्ष ग्रन्थों के स्वाध्याय के साथ आप इन पर विद्वानों के प्रवचन भी सुनना चाहते हैं, तो इन्टरनेट से जुड़ कर सरलता से सुन सकते हैं।

इसके लिए you tube पर जाकर playlist of paropkarini sabha लिख कर सर्च करें, तो आपको अनेक प्लेलिस्ट मिलेंगी, यथा- वेद प्रवचन, योग दर्शन, ईशोपनिषद् आदि। इनमें इच्छानुसार जाकर लाभ उठाया जा सकता है। आप अपने परिचितों को यह सूचना देकर उन्हें भी लाभ उठाने को प्रेरित कर सकते हैं। भविष्य में अन्य भी नये-नये प्रवचन इस सूची में उपलब्ध कराये जाते रहेंगे।

वैचारिक क्रान्ति के लिए सत्यार्थ प्रकाश पढ़ें।

thearyasamaj.org

।।ओ३म्।।

अलग-अलग स्तरों में योग-साधना शिविर

परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित ऋषि-उद्यान, अजमेर में वर्षों से अब तक योग्य आचार्यों द्वारा योग-साधकों का निर्माण करने के लिए वर्ष में दो बार योग से सम्बन्धित व ध्यान से सम्बन्धित शिविरों का आयोजन किया जाता रहा है और साधकों के सर्वांगीण विकास के लिए प्रयास किया जाता रहा है। समाज में और अधिक योग्य व आदर्श साधकों की आवश्यकता अनुभव करते हुए इस वर्ष जून मास के शिविर में नवीन पाठ्यक्रम की विधि अपनाकर इस दिशा में एक नया मोड़ दिया गया है।

परोपकारिणी सभा द्वारा ऋषि उद्यान में योग-साधना शिविर (प्राथमिक स्तर) के दो शिविर लगाये जा चुके हैं। यह शिविर ध्यान से सम्बन्धित, ईश्वर-जीव-प्रकृति के वास्तविक स्वरूप को जानने से सम्बन्धित, योगदर्शन व सांख्यदर्शन के कुछ प्रमुख विषयों के सूत्रों के माध्यम से प्राथमिक स्तर पर योगदर्शन व सांख्यदर्शन को जानने-समझने से सम्बन्धित, आत्मनिरीक्षण में कुछ नये विषयों को सूक्ष्मता से समझने से सम्बन्धित, दिनचर्या को अनुशासित व सात्त्विक बनाने से सम्बन्धित तथा विभिन्न सैद्धान्तिक व व्यावहारिक विषयों के ज्ञान से सम्बन्धित प्रारम्भिक स्तर के योग के इच्छुक साधकों के लिए लगाया गया। इस योग-साधना शिविर को आगामी वर्षों में चतुर्थ स्तर तक लगाने की योजना बनाई गई है। प्रारम्भिक स्तर से लेकर द्वितीय, तृतीय और चतुर्थ स्तर तक के शिविरों में पूर्व सूचित पाठ्यक्रमित विषयों में अधिक से अधिक सूक्ष्मता, दिनचर्या में और अधिक अनुशासन व सात्त्विकता, आहार-शुद्धि से लेकर मन, आत्मा की शुद्धि पर्यन्त अनुभवात्मक स्तर पर योग-साधकों को ज्ञान करवाया जाएगा। प्रत्येक स्तर के साधकों को उनके सैद्धान्तिक व व्यावहारिक ज्ञान से सम्बन्धित तथा उनके व्यक्तिगत आचरण व अनुशासन को दृष्टि में रखते हुए परीक्षा-पद्धति के माध्यम से प्रथम-श्रेणी व उच्च प्रथम-श्रेणी के प्रमाण-पत्र दिए जायेंगे। इस प्रकार की विधि से योग्य साधकों को समाज में सम्मान मिलेगा तथा वे और अधिक उत्साह से समाज व देश के कल्याण के लिए कार्यरत होंगे, उन्हें देखकर अन्य साधक भी प्रेरित होंगे।

परोपकारिणी सभा व गुरुकुल ऋषि उद्यान के योग्य आचार्यों व संयोजकों द्वारा नवनिर्मित इस योजना के प्राथमिक स्तर में पर्याप्त उपलब्धि हुई है। भविष्य में इस योजना में आप सब के सहयोग की आवश्यकता है।

लेखकों से निवेदन

परोपकारी में उन लेखों, कविताओं, रचनाओं को दिया जाता है, जो **मौलिक व अप्रकाशित** हों। अत: सभी लेखकों से निवेदन है कि वे अपनी उन्हीं रचनाओं को भेजें जो मौलिक व अप्रकाशित हों।

अनेक लेखक मौलिक व अप्रकाशित रचना तो भेजते हैं, किन्तु उसे एक साथ **अनेक पत्रिकाओं को भेजते हैं।** अत: लेखकों से यह भी निवेदन है कि वे कृपया परोपकारी को वे ही रचना भेजें, जो अन्य पत्रिकाओं के लिए न भेजी हो। परोपकारी में छपने के बाद यदि अन्यत्र भेजना चाहें तो यह उनकी इच्छा पर निर्भर करता है।

कृपया लेख के अन्त में अपना **पूरा पता व चल-दूरभाष संख्या अवश्य लिखें।** लेख के स्वीकृत-अस्वीकृत होने की सूचना चल-दूरभाष पर संक्षिप्त संदेश द्वारा प्रेषित कर दी जायेगी। **परोपकारिणी सभा द्वारा रचनाओं के लिए किसी प्रकार का भुगतान नहीं किया जाता है।**

रचयिता अपनी रचना की एक प्रति कृपया अपने पास रखकर भेजें, क्योंकि **अस्वीकृत रचनायें डाक द्वारा लौटाई नहीं जाती हैं।** स्वीकृत रचना परोपकारी के किसी आगामी अङ्क में देखी जा सकती है। रचना के प्रकाशन में छ: माह या अधिक समय भी लग सकता है, अत: कृपया तब तक रचना को अन्यत्र न भेजें। **-संपादक**

thearyasamaj.org

आर्य समाज का प्रथम नियम

-प्रो. वीरेन्द्र कुमार अलंकार

'परोपकारी' पत्रिका इस दृष्टि से बधाई की पात्र है कि इसमें पूर्वपक्ष और उत्तर पक्ष दोनों को ही प्राय: समान स्थान मिलता है। ज्ञानयात्रा की संवाहिका पत्रिका से ऐसी आशा करनी भी चाहिए। परोपकारी जून (द्वितीय)२०१४ अंक में श्री मणीन्द्र कुमार व्यास जी ने आर्य समाज के प्रथम नियम पर कुछ प्रश्न उठाए हैं। व्यास जी ने इन प्रश्नों की पृष्ठभूमि भी बताई कि मैंने अनेक विद्वानों से प्रश्न किए, पर सन्तोषजनक समाधान नहीं मिला । उन्हें यह भय भी रहा कि आक्षेपों से कोई उन्हें स्वामी जी के प्रति श्रद्धाहीन न समझ ले।

अस्तु, वेद और दयानन्द दृष्टि का उज्जवल पक्ष यही है कि हमें शालीनता से प्रश्न उठाने ही चाहिएँ। आचार्य सत्यजित् जी ने जिस शास्त्रीय अन्दाज में प्रथम नियम पर उठी विप्रतिपत्तियों का समाधान (उसी अंक तथा अगले अंक में) किया है। इसके लिए मैं उन्हें प्रणामाञ्जलि अवश्य अर्पित करना चाहूँगा। आर्य समाज के प्रथम नियम की जो मीमांसा आचार्य जी ने कर दी है, उससे यद्यपि सारे समाधान हो गए हैं, पुनरपि मैं इसमें कुछ इसलिए जोड़ना चाहूँगा कि मेरे विद्यार्थी काल में मेरे पूज्य गुरुवर प्रो. कपिल देव शास्त्री (अध्यक्ष, दयानन्द पीठ कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय) जो पं. ब्रह्मदत्त जिज्ञासु व पं. युधिष्ठिर मीमांसक के शिष्य थे, ने भी एक दिन यह प्रश्न मुझ से पूछ लिया कि स्वामी जी ने सत्यविद्या का ग्रहण क्यों किया और फिर दोबारा विद्या की बात क्यों उठाई। तब किन्हीं कारणों से इस प्रश्न पर मैं उनसे चर्चा नहीं कर पाया किन्तु यह प्रश्न बार-बार स्मरण आता रहा । यहाँ चण्डीगढ़ क्षेत्र के आर्य समाजों में मैंने कई बार आर्यसमाजों के नियमों पर कुछ व्याख्यान भी दिए । अभी जब डी.ए.वी. संस्था में श्री पूनम सूरी जी ने प्रधान पद संभाला, तो एक आशा यह भी उदित हुई कि डी.ए.वी. में अब आर्यसमाज की धारा के पनपने का अधिक अवकाश हो गया है और इसी कारण डी.ए.वी. प्रधान के परामर्शक श्री हंसराज गन्धार जी, जो चण्डीगढ आर्य प्रदेशिक उपसभा के प्रधान भी हैं, ने सर्वप्रथम चण्डीगढ़ मोहाली और पंचकूला के डी.ए.वी. संस्थाओं के प्राचार्यों को बुलाया और मेरे आग्रह पर आचार्य डॉ. वेदपाल जी (मेरठ) को आमन्त्रित करके यज्ञ सम्बन्धी विधियों की उपयोगिता पर खुली चर्चा कराई और यह आशा की गई कि डी.ए.वी. के सब प्राचार्य कम से कम ब्रह्मयज्ञ और सामान्य अग्निहोत्र को तो अवश्य ही समझें और स्वयं करना भी सीखें। इसी श्रृखंला में ६ मई, २०१४ को डी.ए.वी.कॉलेज, सैक्टर १०, चण्डीगढ़ में ऋषि दयानन्द के वैदिक दर्शन पर एक गोष्ठी भी कराई गई, आचार्य वेदपाल (मेरठ) और प्रो. सुरेन्द्र कुमार (रोहतक) को विशेष रूप से बुलाया गया। संगोष्ठी की विषय स्थापना के लिए मुझे कहा गया। पिछले वर्ष यह चर्चा भी उठी कि डी.ए.वी. के सब प्राचार्य आर्यसमाज के नियमों को समझें और प्रत्येक प्राचार्य को कहा गया कि आप किसी भी एक नियम को चुनें और उस पर चिन्तन करके फिर उस नियम पर २५-३० मिनट का व्याख्यान भी दें। यह कार्य प्रारम्भ भी हो गया, पर कुछ शिथिलता आ गई। अभी कुछ समय पूर्व डी.ए.वी. स्कूल, सूरजपुर (पंचकूला) में आर्यसमाज के नियमों पर प्रतियोगिता भी आयोजित की गई, जिसमें दूसरी परम्परा के विद्यालयों के छात्रों ने भी भाग लिया, यह एक अच्छा संकेत है। कुछ प्राचार्यों के मेरे पास फोन आने लगे और आर्यसमाज के नियमों पर चर्चा होने लगी। प्राय: सभी की माँग यह थी कि कोई किताब बताएँ, जिसमें आर्यसमाज के नियमों की बृहद् मीमांसा हो।

अनेक प्रश्न मेरे समक्ष भी उपस्थित होने लगे। 'परोपकारी' ने इस यात्रा को आगे बढ़ाया है। आचार्य सत्यजित् जी जैसे विद्वान् से इसी शास्त्रीय समाधान की अपेक्षा थी।

आचार्य जी ने जिन तथ्यों को बता दिया है, मेरा प्रयास रहेगा, उनकी पुनरुक्ति न हो। आर्यसमाज के प्रथम नियम पर प्राय: ये प्रश्न या आक्षेप किए जाते हैं-

(क) सब सत्य विद्या यह वाक्य रचना दोषग्रस्त है।

(ख) सत्य विद्या में सत्य विशेषण क्यों?

(ग) पदार्थ का तात्पर्य क्या?

(घ) आदिमूल परमेश्वर कैसे?

'सत्यार्थप्रकाश' पर भी अनेक आक्षेप किए जाते हैं। सर्वप्रथम तो यह जानना आवश्यक है कि किसी लेखक का अभिप्रेतार्थ क्या है। क्योंकि अकेले शब्दों के मल्लयुद्ध का कोई लाभ नहीं। इसीलिए स्वामी जी ने चेताया है कि 'जो कोई...... तात्पर्य से विरुद्ध मनसा से देखेगा उसको कुछ भी अभिप्राय विदित न होगा' (सत्यार्थप्रकाश की भूमिका)। क्योंकि जो तात्पर्यार्थ पर ध्यन नहीं देंगे वे

thearyasamaj.org

वाक्यार्थबोध नहीं समझेंगे और व्यर्थ के प्रश्न उठाएंगे। पूरे भारतीय दर्शन को विरोधी खेमों में बाँटने वाले वही तथाकथित शास्त्रज्ञ हैं, जिन्होंने तात्पर्यार्थ की उपेक्षा की। इसी कारण आस्तिक दर्शनों के भी निरीश्वर और सेश्वर भेद कर दिए । यह उपकार है इस महान् योगी स्वामी दयानन्द सरस्वती का जिससे सत्यार्थप्रकाश (में छः दर्शनों के) समन्वय का अद्भुत मार्ग बताया है। तात्पर्यार्थ जानने से आर्यसमाज के नियमों पर उठे प्रश्नों पर स्वयं विराम लग जाएगा। आइए, यहाँ आर्य समाज के प्रथम नियम पर कुछ विचार करें-

(क) 'सब सत्य विद्या' में वाक्य रचना सम्बन्धी दोषविचार- 'सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उनका आदि मूल परमेश्वर है।' इस नियम पर आक्षेप यह है कि सब सत्य विद्याएँ ऐसा बहुवचनान्त प्रयोग होना चाहिए था, क्योंकि 'सब' इस पद से स्पष्ट हैं कि यह बहुवचनान्त प्रयोग है। अतः विद्या का बहुवचन तो विद्याएँ होता है। आक्षेपकर्त्ताओं के अनुसार भाषा की दृष्टि से वाक्यरचना यह होनी चाहिए- 'सब सत्य विद्याएँ और जो पदार्थ विद्याओं से जाने जाते हैं, उनका आदि मूल परमेश्वर है।'

हमें यह स्मरण रखना कि स्वामी जी वेद के आचार्य हैं। इसलिए उनके चिन्तन और वाक्यविन्यास में औपनिषदिक प्रभाव है। वे ऐसे शब्द का व्यवहार करते हैं, जिसकी अनेक दिशाएँ होती हैं। इसलिए उनके वाक्यविन्यास का सौन्दर्य उनके शब्द प्रवाह में ही अनुभव किया जा सकता है।

यहाँ पूर्वपक्षी की सबसे पहले तो यही स्थापना गलत है कि 'सब' शब्द बहुवचनान्त है। क्या एकवचनान्त 'सर्वः' या 'सर्वा' शब्द अशुद्ध है? सर्वा विद्या के व्यवहार में क्या विप्रतिपत्ति है। हमें लगता है 'सब सत्य विद्या' को एकवचनान्त मानने में कोई भाषिक नियम बाधक नहीं है। यहाँ 'सब' का अर्थ सब प्रकार की सत्यविद्या भी है और सर्वा सत्यविद्या भी। महाभाष्यकार पतंजलि ने 'सिद्धे शब्दार्थसम्बन्धे' इस वार्तिक की मीमांसा में 'सिद्ध' शब्द का अर्थान्वेषण करते हुए अनेक विकल्प दिए हैं। संस्कृतवाक् में पूर्वपदलोप और उत्तरपदलोप भी देखा जाता है। इसलिए 'सिद्ध' का एक अर्थ अत्यन्तसिद्ध भी किया गया है। जैसे लोक में देवदत्त को दत्त भी कहा जाता है और विष्णुगुप्त को अकेले विष्ण भी अर्थात् एक में पूर्वपदलोप है और दूसरे में उत्तरपदलोप । इसी प्रकार 'सर्वप्रकारक सत्य विद्या' के लिए 'सब सत्य विद्या' कहने में वाक्यरचना दोष कैसा?

हिन्दी में ऐसे प्रयोग खूब होते हैं, जैसे सब पक्षी का अर्थ सारे पक्षी भी है और सब प्रकार के पक्षी भी। 'वेद' शब्द एकवचनान्त पठित होने से क्या 'एक वेद' यही अर्थ ग्राह्य है- सब वेद पढ़ें, सुविचार बढ़ें। धन की उपासना करो। विद्या की उपासना करो। दुरित छोड़ो आदि वाक्य क्या व्याकरणदोष से युक्त है? यहाँ एक वचन भले ही है, किन्तु एक वेद, एक धन, एक विद्या, एक दुरित यह अर्थ नहीं है, बल्कि बह्वर्थक है । हिन्दी में यह एकवचन है और 'ये' बहुवचन। अब एक प्रसिद्ध हिन्दी गीत की यह पंक्ति देखिए-'ये कैसा रिश्ता है, ये कैसे सपने हैं, बेगाने होकर भी जो लगते अपने हैं।' इसमें 'ये रिश्ता' क्या अशुद्ध प्रयोग है? वस्तुतः हिन्दी भाषा में ये स्वीकृत प्रयोग हैं। हमें यह मानना ही चाहिए कि कारक, वचन, लिङ्ग में वक्ता की विवक्षा भी नियामक है। संस्कृत की तो बड़ी उक्ति भी है-**विवक्षातः कारकाणि भवन्ति।** इसका आशय यह न समझें कि मैं अशुद्ध भाषिक प्रयोगों की वकालत कर रहा हूँ। स्वामी जी का यह वाक्यप्रयोग देखिए-**यो जीवेषु दधाति सर्वसुकृतज्ञानं गुणैरीश्वरः** (दयानन्द यजुर्वेदभाष्य का पुरोवाक्)। क्या यहाँ सर्वसुकृतज्ञानम् पद अशुद्ध है? क्या यह बहुवचनान्त(सर्वसुकृतज्ञानानि)ही होना चाहिए। स्वामी जी के इस श्लोकांश का अर्थ यही तो है कि जो परमेश्वर जीवों में सब प्रकार के सुकृतज्ञान को धारण करता है। इसमें ज्ञान का आदि स्रोत (मूल) ईश्वर ही बताया गया है।

इसलिए 'सब विद्या' को एकवचनान्त मानने में कोई दोष नहीं है और यदि इसे बहुवचनान्त ही मानें तो भी हिन्दी में 'विद्याएँ' रूप ही होगा, ऐसा नियम कहाँ है। 'मैंने गुरुकुल में विद्या ग्रहण की' का अर्थ एक विद्या नहीं है। हिन्दी के भाषिक नियमों में अनेक विकल्प होते हैं। इसमें वचन, लिङ्ग और कारक व्यवस्था के कठोर नियम नहीं है। मैं उसे मिला, मैं उससे मिला और मैं उसको मिला-ये सभी प्रयोग वाग्व्यवहार में हैं। डेढ शताब्दी पुरानी हिन्दी की वाक्यरचना की तुलना आज की हिन्दी से करके उसके शुद्धाशुद्ध सम्बन्धी निष्कर्ष घोषित करना तो अद्भुत भाषाविज्ञान हुआ। क्या तुलसीदास, कबीर और सूरदास की भाषा की शुद्धता का निर्णय आज की भाषा से किया जा सकता है? कबीर आदि तो पुराने कवि हैं, आधुनिक कवि जयशंकर प्रसाद की भाषा और आज की भाषा में ही कितना अन्तर हो गया है।

मणीन्द्र व्यास जी ने एक सम्भावना यह भी व्यक्त की

thearyasamaj.org

है कि पहले आर्यसमाज के नियम संस्कृत में थे, उनका अनुवाद कदाचित् ठीक नहीं हुआ है। उनके अनुसार नियम का स्वरूप यह था- **याः सत्यविद्याः विहिताः पदार्थाः तेषां सर्वेषां प्रभुरादिमूलम्।** इस सन्दर्भ में हमारा निवेदन है कि हमारे अध्ययन में यह कभी नहीं आया कि पहले यह नियम संस्कृत में इस रूप में था, पर कल्पना कीजिए मूलरूप में यह नियम संस्कृत में निबद्ध रहा भी हो, तो विबुध जन स्वामी जी की संस्कृत शैली का अवलोकन अवश्य करें, उनकी भाषा उपनिषदों की भाषा सी सरस है। अतः उसका स्वरूप मणीन्द्र जी द्वारा दी गई भाषा 'याः सत्यविद्याः....' ऐसा रहा हो , इसकी सम्भावना हमें बिल्कुल भी नहीं लगती। इस सन्दर्भ में हमारा अन्तिम निवेदन यह है कि अनुवाद एक स्वतन्त्र विधा है। यह जरूरी नहीं कि जिन शब्दों का प्रयोग मूलभाषा में हो, वही अनूदित भाषा में भी हो। अनुवादकला का सिद्धान्त है कि अनुवाद शब्दों का नहीं बल्कि तात्पर्यगर्भित वाक्यों का होता है। अनुवाद में तात्पर्यार्थ स्पष्ट होना चाहिए। इसलिए एक क्षण के लिए यह मान भी लें कि पहले नियम यह था कि '**याः सत्यविद्याः पदार्थाः**' आदि तो भी इसका तात्पर्यार्थ तो यही मानने में बुद्धिमत्ता है, जो आज हमें प्रथम नियम में उपलब्ध है। अनुवाद में यह सम्भव है कि किसी भाषा में बहुवचन से अर्थप्रतिपत्ति अधिक स्पष्ट हो और अनूदित भाषा में एक वचनान्त से । अग्रेंजी में police शब्द बहुवचन में प्रयुक्त होता है और अनुवाद करते समय हिन्दी में एकवचन में पुलिस शब्द प्रयुक्त होता है, वह भी स्त्रीलिंग में। भारत में 'स्वामी जी' शब्द ऋषि दयानन्द के लिए बहुप्रचलित है, किन्तु इसको रूसी या जर्मनी में अनुवाद करते हुए अनुवादक को स्वामी जी के स्थान में स्वामी दयानन्द सरस्वती लिखना पड़ सकता है।

वस्तुतः यह वक्ता की विवक्षा पर निर्भर करता है कि उसका तात्पर्य एकवचन से सिद्ध हो रहा है या बहुवचन से । मैंने सारी परीक्षा उत्तीर्ण की यह भी ठीक है और मैंने सारी परीक्षाएँ उत्तीर्ण की यह भी ठीक है। व्याकरण दर्शन के विद्वान् नागेशभट्ट ने नामार्थ पर विचार करते हुए अपने निष्कर्ष में बताया है कि जातिविशिष्ट व्यक्ति भी नामार्थ है और व्यक्ति विशिष्ट जाति भी । इसलिए आर्यसमाज के नियम में विद्या का अर्थ एक विद्या नहीं है। भाषा का संसार बड़ा विचित्र है। वैयाकरणों ने 'सर्व' के रूप सिद्ध किए कि- सर्वः, सर्वौ, सर्वे, (पुं.), सर्वा, सर्वे, सर्वाः (स्त्री), और सर्वम्, सर्वे, सर्वाणि (नपुं.), किन्तु 'सर्व' का द्विवचनान्त प्रयोग साहित्य में कदाचित उपलब्ध ही नहीं है। आप द्विवचनान्त 'सर्व' शब्द की वाक्य रचना करके देखिए, तो क्या वैयाकरणों को आप यह कहेंगे कि उन्हें भाषा का ज्ञान नहीं था। क्या आप पाणिनि को अज्ञानी मान बैठेंगे कि '**आदिर्ञिटुडवः**' (पा.१.३.५) में उन्होंने विशेष्य के अनुसार विशेषण का प्रयोग नहीं किया। 'आदिः' यह एकवचन है और 'ञिटुडवः' बहुवचनान्त है।

अब दुर्जनपरितोषन्याय से यह मान भी लें कि प्रथम नियम को और परिष्कृत किया जा सकता है, तो क्या विद्वानों को परिष्कार या परिमार्जन करना चाहिए? इसका उत्तर है- कभी नहीं। क्योंकि परिवर्द्धन या परिमार्जन से निम्नलिखित हानि होगी। हाँ, यहाँ 'हानि' इस एक वचन का अर्थ एक हानि नहीं है, बल्कि अनेक प्रकार की हानि होगी। यहाँ एकवचन का प्रयोग वक्ता की विवक्षा के अधीन है-

१. पहली हानि तो यह होगी कि वक्ता मूल शब्द से जिन अर्थों का स्पन्दन करना चाहता है, वह स्पन्दन ही रुक जाएगा। आप विद्या के स्थान पर शिक्षा और शिक्षा के स्थान पर विद्या का प्रयोग कर दें, तो भारी अनर्थ हो जाएगा । **विद्ययाऽमृतमश्नुत** के स्थान पर **शिक्षयाऽमृतमश्नुत** कहने से मूल शब्दों का अर्थस्पन्दन बाधित होगा। इसी प्रकार **श्रद्धावान् लभते शिक्षाम्** करना कहाँ तक ठीक है।

२. दूसरी हानि यह है कि इस प्रकार के शोधन से अनवस्थादोष की प्रसक्ति होगी। आप शोधन करेंगे, तो दूसरा व्यक्ति आप में भी दोष देखेगा, फिर तीसरा, चौथा, पाँचवाँ शोधन होगा। यह शोधन तो किसी कहावत या फिल्मी गीत में भी नहीं हो सकता, भला आचार्यों का शोधन क्या करेंगे।

३. तीसरी हानि यह है कि प्रश्न करने की प्रवृत्ति किंवा जिज्ञासुभाव समाप्त हो जाएगा। फिर विद्वानों के समाधानों से लोग वंचित रहेंगे। इसलिए शालीनता पूर्वक प्रश्नों को आर्य समाज में सदा सम्मान से देखा गया है।

अतः यह सुझाव कदापि स्वीकरणीय नहीं है कि किसी भी नियम में सुधार की बात सोची जाए । सन्देह होने से विद्या कभी अविद्या और वस्तु की भी अवस्तु नहीं बन जाती । सन्देह का इलाज विशेष प्रतिपत्ति है। इसीलिए पतंजलि मुनि ने कहा है कि- **व्याख्यानतो विशेषप्रतिपत्तिर्न हि सन्देहादलक्षणम्।** सन्देह होने पर क्या वेद मन्त्रों में भी शोधन करेंगे? असली बात तो यह है कि ज्ञान प्राप्ति के लिए सर्वदा सजग रहना चाहिए कभी पूर्वपक्षी बनकर तो कभी एक देशी बनकर और कभी समाधाता बनकर।

शेष भाग अगले अंक में....

thearyasamaj.org

प्रतिक्रिया

27/8/2014

Gmail - RE: परोपकारी अगस्त द्वितीय - २०१४

Gmail by Google

RE: परोपकारी अगस्त द्वितीय - २०१४

Dr.VP Vaidik <dr.vaidik@gmail.com>
To: psabhaa001 <psabhaa001@gmail.com>

Mon, Aug 25, 2014 at 7:26 PM

,आपसे बढ़कर मूर्ख आर्यसमाज में आजतक कोई पैदा नही हुआ.आप जैसे गधे को संपादक किसने बनाया है ?आप हम लोगों के कलंक है। आप चुलू भर पानी में डूम मरिये। यह सब लिखते हुए आपको जरा भी शर्म नहीं आयी ?

Sent from my Sony Xperia™ smartphone

psabhaa001 <psabhaa001@gmail.com> wrote:

२. पाक्षिक परोपकारी का अगस्त प्रथम अंक २०१४ में आपका सम्पादकीय 'शंकराचार्य स्वरूपानन्द बधाई के पात्र हैं' पढ़कर अच्छा लगा। आपने मूर्तिपूजा का खण्डन करते हुए उनकी प्रशंसा भी की। आज भारत में आप जैसे विद्वानों की जरूरत है जो सभी को अच्छा समझ के मिलकर जनता को सही धर्म का मार्ग दिखाएँ और सच्चे भगवान की पहचान कराएँ। इस बात को लेकर जब एबीपी न्यूज चैनल पर बहस हो रही थी तो श्री वल्लभ जी ने आपके लेख के बारे में बोलते हुए आपका और स्वामी दयानन्द जी का नाम लिया। सुनकर बड़ी खुशी हुई कि आर्यसमाज के विचार भी टी.वी. पर आ रहे हैं। आज कल आस्था और संस्कार चैनल ज्यादा लोग देखते नहीं हैं। आस्था भजन भी हमारे पास नहीं आ रहा है। हमें कुछ तो मीड़िया के माध्यम से आर्यसमाज के विचारों का प्रचार करने की आवश्यकता है। स्वामी जी का एक पिक्चर या सीरियल निकलना चाहिए। दक्षिण भारत में तो आर्यसमाज नहीं बल्कि साईं बाबा की ही भक्ति हो रही है।

- सुखदा भक्त राम, हैदराबाद

३. पाक्षिक परोपकारी जुलाई द्वितीय २०१४ में प्रकाशित महात्मा चैतन्य मुनि, महादेव, सुन्दर नगर, हि.प्र. का लेख 'इन्द्र व उसका सोमपान' पढ़ा। इन्होंने इस की वेदानुसार वैज्ञानिक व्याख्या की। इस के लिये इन को साधुवाद।

पुराणों में अनेक काल्पनिक, निराधार, अवैज्ञानिक, हास्यप्रद तथा सृष्टि विरुद्ध कथायें दी गई हैं। इसके अतिरिक्त वर्तमान में अनेक कथा वाचक अपनी-अपनी कथाओं तथा प्रवचनों में ऐसी-ऐसी बातें कहकर आम जनता को ही नहीं बल्कि खास जनता को भी भ्रमित कर रहे हैं। १८वीं सदी में जो पाखण्ड तथा अज्ञानता देश में फैली हुई थी आज उस से ज्यादा पाखण्ड और अज्ञानता फैली हुई है। दूसरा ऋषि दयानन्द पैदा होना तो सम्भव नहीं है, यदि ऋषि के सच्चे अनुयायी कमर कस कर संकल्प सहित देश के तमाम हिस्सों में भ्रमण कर वेद और वैदिक साहित्य की ज्योति फैलाने का बेड़ा उठायें तो बहुत कुछ ठीक हो सकता है। परन्तु खेद है कि आर्यसमाज का विघटन होता जा रहा है। इसके कारण तो अनेक हैं। आर्यसमाजी तो बहुत हैं परन्तु आर्य लोग मात्र गिनतियों में ही हैं। पौराणिक साहित्य तथा इसको मानने, पुष्पित व पल्लवित करने वालों ने बेड़ा गरक कर रखा है।

लक्ष्मणसिंह टांक, ५१, देवपुरम्, मुजफ्फरनगर-२५१००१ (उ.प्र.)

thearyasamaj.org

वैदिक पुस्तकालय के प्रकाशन

महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत

वेदभाष्य, वेदभाषाभाष्य, मूलवेद, वेदांगप्रकाश और वैदिक साहित्य

पिछले अंक का शेष भाग.......

क्रमांक	नाम पुस्तक	मूल्य
८८.	सौवर	५.००
८९.	पारिभाषिक	२०.००
९०.	धातुपाठ	
९१.	गणपाठ	२०.००
९२.	उणादिकोष	
९३.	निघण्टु	१५.००
९४.	संस्कृतवाक्यप्रबोध	
९५.	व्यवहारभानुः	१२.००
९६.	निरुक्त (मूल)	८०.००
९७.	अष्टाध्यायी (मूल)	२०.००
९८.	अष्टाध्यायीभाष्य प्रथम भाग सजिल्द	१२०.००
९९.	अष्टाध्यायी भाष्य द्वितीय भाग सजिल्द	१००.००
१००.	अष्टाध्यायी भाष्य तृतीय भाग सजिल्द	१३०.००

डॉ. भवानीलाल भारतीय

क्रमांक	नाम पुस्तक	मूल्य
१०१.	महर्षि दयानन्द– आत्मकथा	
१०२.	उपदेश मंजरी (पूना प्रवचन)	
१०३.	परोपकारिणी सभा का इतिहास	
१०४.	आर्यसमाज के पत्र और पत्रकार	१०.००
१०५.	आर्य नरेश राजाधिराज सर नाहरसिंह वर्मा	८.००
१०६.	दयानन्द–सूक्ति–मुक्तावली	१५.००
१०७.	देशभक्त कुँ.चाँदकरण शारदा	५.००
१०८.	दयानन्द वचनामृत	३.००
१०९.	आर्यसमाज के शास्त्रार्थ महारथी	१०.००

वेदगोष्ठी– सम्पादक डॉ. धर्मवीर

क्रमांक	नाम पुस्तक	मूल्य
११०.	ऋषि दयानन्द की वेदभाष्य शैली	२०.००
१११.	वेद और कर्मकाण्डीय विनियोग	३१.००
११२.	अथर्ववेदः समस्याएं और समाधान	३५.००
११३.	वेद और विदेशी विद्वान् – कृतित्व और दृष्टिभेद	३५.००
११४.	वेदों के आख्यान (प्रथम भाग)	३५.००
११५.	वेदों के दार्शनिक विचार	४०.००
११६.	सोम का वैदिक स्वरुप	५०.००
११७.	पर्यावरण का वैदिक स्वरुप	
११८.	वेद और समाज	
११९.	वेद और राष्ट्र	
१२०.	वेद और विज्ञान	
१२१.	वेद और ज्योतिष	८०.००
१२२.	वेदों में पदार्थ विद्या (विशेषांक–१)	५०.००
१२३.	वेदों में पदार्थ विद्या (विशेषांक–२)	५०.००
१२४.	वेद और निरुक्त	१००.००
१२५.	वेद और इतिहास	१००.००
१२६.	वेद में कृषि व वनस्पति विज्ञान	१००.००
१२७.	वेद और शिल्प	
१२८.	वेदों में अध्यात्म	
१२९.	वेदों में राजनैतिक विचार	१००.००
१३०.	वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है	
१३१.	वैदिक समाज विज्ञान	
१३२.	सत्यार्थ प्रकाश ७वाँ समुल्लास और वेद	
१३३.	सत्यार्थ प्रकाश ८वाँ समुल्लास और वेद	

प्रो. धर्मवीर

क्रमांक	नाम पुस्तक	मूल्य
१३४.	आर्यसमाज और शोध	१५.००
१३५.	महर्षि दयानन्द सरस्वती के पत्र	

thearyasamaj.org

क्रमांक	नाम पुस्तक	मूल्य

स्वामी विष्वङ् परिव्राजक

१३६. ध्यान योग एवं रोग निवारण १५०.००
१३७. योग ५०.००
१३८. अष्टाङ्ग योग २०.००
१३९. समाधि १००.००

स्वामी अभयानन्द सरस्वती

१४०. प्राणायाम चिकित्सा

डॉ. सत्यदेव आर्य

१४१. वैदिक सन्ध्या मीमांसा २५.००
१४२. ईश्वरस्तुतिप्रार्थनोपासना मन्त्रों का विवेचन २५.००
१४३. तन्मेमनःशिवसंकल्पमस्तु का वैज्ञानिक विवेचन २५.००

विरजानन्द दैवकरणि

१४४. प्राचीन भारतीय इतिहास के स्रोत ८.००
१४५. महाभारत युद्ध कब हुआ एवं अन्य रचनाएँ ५.००

वैद्य पंडित ब्रह्मानन्द त्रिपाठी

१४६. बूंदी शास्त्रार्थ ५.००
१४७. वैदिक सूक्ति–सुमन २५.००

वैदिक साहित्य – विविध ग्रन्थ

१४८. दयानन्द ग्रन्थमाला तीन खंड का १ सेट ५५०.००
१४९. आर्य समाज की मान्यताएं २०.००
१५०. मानव निर्माण के स्वर्ण सूत्र १५.००
१५१. अथर्ववेदीय पञ्चपटलिका (सजिल्द) २५.००
१५२. अथर्ववेदीय पञ्चपटलिका अजिल्द १५.००
१५३. ऋग्वेद का नमूना भाष्य (१मंत्र) ४.००
१५४. ईशादिदशोपनिषद् (मूल) १०.००
१५५. वैदिक कोषः (निघण्टु मणिमाला) २५.००
१५६. सरस्वती की खोज एवं महाभारत युद्धकाल १०.००
१५७. दयानन्द दिव्य दर्शन १२.००
१५८. वृक्षों में जीवात्मा १०.००

क्रमांक	नाम पुस्तक	मूल्य

१५९. महर्षि दयानन्द जीवन और सन्देश ३.००
१६०. महर्षि महिमा २.००
१६१. स्वामी दयानन्द चरितम् १०.००
१६२. ब्रह्माकुमारी मत खण्डन ८.००
१६३. निरुक्तकार का ऐतिहासिक पक्ष ५.००
१६४. मांसाहार– वैदिक धर्म एवं विज्ञान १२.००
१६५. नेपाली सत्यार्थ प्रकाश २००.००
१६६. परोपकारी विशेषांक २५.००
१६७. महर्षि दयानन्द के चित्र (एक प्रति) ५०.००
१६८. संगठन सूक्त २.००
१६९. ३१ दिवसीय टेबल कलेण्डर १००.००
१७०. प्यारा ऋषि २५.००
१७१. नककटा चोर ३०.००
१७२. महर्षि दयानन्द और उनके अनुयायी ३५.००
१७३. स्वामी दयानन्द सरस्वती और उनके क्रान्तिकारी शिष्य ३५.००
१७४. भगवान् को क्यों मानें ? २५.००
१७५. महर्षि दयानन्द ग्रन्थ परिचय ३०.००
१७६. आर्यसमाज के संस्थापक, महान समाज सुधारक–महर्षि दयानन्द सरस्वती २५.००
१७७. शेख चिल्ली और लाल बुझक्कड़ २५.००
१७८. नैति मंजूषा ९५०.००
१७९. ऋग्वेदादि संदेश ३०.००
१८०. त्याग की धरोहर १००.००

ध्यान योग एवं रोग निवारण (सी.डी.)

(स्वामी विष्वङ् परिव्राजक)

१८१. अष्टांग योग–१ (सी.डी.)
१८२. अष्टांग योग–२ (सी.डी.)
१८३. आसन (सी.डी.)
१८४. सूक्ष्म व्यायाम (सी.डी.)

शेष भाग अगले अंक में......

thearyasamaj.org

मृत्यु और जन्म के बीच की गति

- श्री जगदेव सिंह सिद्धान्ती शास्त्री

प्रस्तावना - जन्म से लेकर मरण तक की दशा को तो सर्वसाधारण मनुष्य भी देखते हैं परन्तु मृत्यु के आरम्भ से लेकर उस जीव के अगले जन्म के बीच की क्या दशा होती है, उसको हम सामान्य जन नहीं जान सकते, क्योंकि इसका ज्ञान साधारण रूप से जीव को और साधारण ज्ञान के बिना अनुमान प्रमाण भी काम नहीं दे सकता। यह बड़ी गम्भीर समस्या है, परन्तु सर्वज्ञ परमात्मा जीवों के कल्याण के लिये इस बात को मनुष्यों को समझाने के लिए वेद का उपदेश देता है। वेद ही परम प्रमाण है, क्योंकि यह ईश्वर का वचन है। हमारे पूर्वज ऋषि, महर्षि, आप्त विद्वानों ने वेद का अभ्यास करके इस समस्या का अपने ग्रन्थों में समाधान किया है। वेद के आधार पर बने ऋषि प्रणीत ग्रन्थों, (आरण्यक, उपनिषदों, आयुर्वेद तथा दर्शन=शास्त्रों) में इस दशा पर बहुत उत्तम और खुलकर लिखा गया है। इन्हीं आप्त ग्रन्थों के स्वाध्याय से विद्वान् लोग भी इसका मनन करके साधारण लोगों को समझाते आये हैं। मनुष्य जन्म केवल रोटी, कपड़ा और मकान की आवश्यकताओं तक सीमित नहीं है- यद्यपि ये पदार्थ अनिवार्य रूप से प्राथमिक आवश्यकता के रूप में ग्रहण करने ही चाहिये। इनकी अनिवार्यता का निषेध कोई भी समझदार सज्जन नहीं कर सकता। परन्तु मनुष्य का जीवन यहीं तक सीमित नहीं है। मनुष्य का ध्येय उपर्युक्त पदार्थों से बहुत आगे तक है। भगवान् ने प्रत्येक जीव को उसको काम करने के साधन दिये हुये हैं। मनुष्य का सामर्थ्य तो और भी अधिक है। उसके हृदय में अनेक प्रकार के तत्त्वों के जानने की इच्छा रहती है और वह जानने के लिए सदा यत्न करता रहता है। वह अपने द्वारा की गई भूलों के परिणाम स्वरूप दु:ख भोगता है और यह चाहता है कि इस दु:ख से छुटकारा पा सकूँ। प्रतिदिन हमें भूख-प्यास लगती है, उसके निवारण के लिये हम यत्न करते ही रहते हैं। परन्तु यह भूख प्यास थोड़े समय के पश्चात् हमें फिर सताती है। तब मनुष्य विचार करता है कि कोई ऐसा उपाय किया जावे कि जिससे इस दु:ख से बहुत समय तक दूर रह सकूँ। जब साधारण भूख-प्यास को मिटाने के लिये हमें परिश्रम करना आवश्यक होता है, तब दु:ख को बहुत अवधि तक दूर करने के लिये अत्यन्त पुरुषार्थ करना ही होगा। ऐसी दशा में मनुष्य विचार करता है कि यह शरीर, बाह्य इन्द्रियाँ और अन्त:करण तो साधन मात्र हैं, जैसे भूख प्यास को दूर करने के लिये अन्न और जल। विचार के पश्चात् उसे निश्चय होता कि इन शरीर आदि साधनों का अधिष्ठाता कोई भिन्न तत्त्व है। आगे बढ़ने पर वह जान लेता है कि वह अधिष्ठाता=स्वामी=मालिक एक स्वतन्त्र चेतन सत्ता है। इस चेतन सत्ता के अनेक भेद हैं, जिनमें गुणों के आधार पर मनुष्य प्राणी सबसे उत्तम तत्त्व है। इस पर जब मनुष्य विचार करने लगता है, तो उसके सामने अनेक उलझनें खड़ी होती रहती हैं। मनुष्य परस्पर पूछते हैं कि इस शरीर का स्वामी कौन है? उत्तर रूप में अनेक प्रकार की बातें मनुष्य सुनता है। कोई कहता है कि यह शरीर आदि सामग्री ही स्वयं एक तत्त्व है इससे पृथक् कोई चेतन सत्ता नहीं है। दूसरे कहते हैं कि नहीं- ऐसा नहीं हो सकता कि साधन ही स्वामी हो सके। यह तो उस चेतन सत्ता के औजार मात्र हैं। वह सत्ता शरीर आदि से भिन्न चेतन तत्त्व के रूप में है। फिर विचारक मनुष्य के सामने यह प्रश्न उठता है कि क्या शरीर आदि साधनों के नष्ट हो जाने पर इन साधनों का स्वामी चेतन तत्त्व भी नष्ट हो जाता है अथवा इनसे वह पृथक् बना रहता है। वह प्रतिदिन देखता है कि उस के कार्य करने के साधन टूटते-फूटते रहते हैं। परन्तु वह स्वामी फिर इन का निर्माण करके आगे काम करता रहता है। तब स्वभाव रूप से उसके हृदय में एक जिज्ञासा का जन्म होता है कि तो यह चेतन तत्त्व है क्या? और यह मरण धर्मा है अथवा सदा बना रहता है। इस जिज्ञासा से वह मनुष्य व्याकुल हो उठता है और अपने से अधिक ज्ञानियों के पास पहुँच कर इस समस्या को समझने का भरसक यत्न करता है। परन्तु यह प्रश्न इन्द्रिय-ग्राह्य न होने से अतीव जटिल है। इसका समाधान भी सामान्य जन नहीं कर सकते, अपितु आप्त विद्वान् ही कर सकते हैं।

यह प्रश्न और इसका समाधान सदा से इसी रूप में चला आ रहा है। इन आगे के पृष्ठों में हम इसी समस्या का समाधान करने के लिये ऋषियों-महर्षियों के ग्रन्थों का आधार लेते हैं।

मूल रूप में दो गतियाँ - कठोपनिषद् में यम और नचिकेता का संवाद रूप एक उपाख्यान दिया गया है। नचिकेता जिज्ञासु है और यम उसकी जिज्ञासा का समाधान

thearyasamaj.org

करता है, इसी में उपनिषद् की सम्पूर्ति हो जाती है। ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका में ऋषि दयानन्द ने लिखा है कि नचिकेता को जीव और यम को परमेश्वर भी समझा जा सकता है-यह अलंकाररूप संवाद है। नचिकेता पूछता है-

येयं प्रेते विचिकित्सा मनुष्येऽस्तीत्येके नायमस्तीति चैके।
एतद्विद्यामनुशिष्टस्त्वयाहं वराणमेष वरस्तृतीयः।।

– कठोपनिषद् १.२०

अर्थात् हे यम! (मनुष्ये प्रेते) मनुष्य के मर जाने पर (या-इयं-विचिकित्सा) जो यह संशय है कि (एके-अस्ति) कुछ लोग कहते हैं कि मनुष्य का जीव शरीर छोड़ने पर भी नित्यरूप में रहता है और कुछ दूसरे कहते हैं कि (अयम्-न-अस्ति) कि यह जीव नहीं रहता वह भी शरीर की भाँति नष्ट हो जाता है। इस सन्देह को दूर करने के लिये (त्वया-अनुशिष्टः-अहम्) तुझ आप्त विद्वान् यम के द्वारा अनुशिष्टः=शिक्षित हुआ मैं (एतद्) इस संशय रहित तत्त्व को (विद्याम्) जान लूँ- यही मेरी श्रेष्ठ अन्तिम जिज्ञासा है।

इस जिज्ञासा की महत्ता को रखते हुए यम ने नचिकेता के सामने इस जिज्ञासा को छोड़ देने के लिये कहा कि बड़े-बड़े विद्वानों के लिए भी यह गम्भीर प्रश्न बना रहता है। तू अपने लौकिक कल्याण को चाह। परन्तु नचिकेता शम दम आदि साधन सम्पन्न सच्चा जिज्ञासु था। उसने पुनः निवेदन किया कि इस प्रश्न की गम्भीरता चाहे कुछ भी हो। मैं तो इसी जिज्ञासा की पूर्ति करना चाहता हूँ। आपके समान इस संशय को दूर करने वाला मुझे कौन गुरु मिल सकता है? जब यम के अनेक प्रलोभन देने पर भी नचिकेता अपनी जिज्ञासा पर अडिग रहा, तब यम ने कहा-

हन्त त इदं प्रवक्ष्यामि गुह्यं ब्रह्म सनातनम्।
यथा च मरणं प्राप्य आत्मा भवति गौतम।।
योनिमन्ये प्रपद्यन्ते शरीरत्वाय देहिनः।
स्थाणुमन्येऽनुसंयन्ति यथाकर्म यथाश्रुतम्।।

– कठोपनिषद् ५.६-७।।

(हन्त) हे नचिकेता मुझे बड़ा आश्चर्य है और प्रसन्नता है कि तू वास्तव में यमनियमादि साधन सम्पन्न जिज्ञासु है, अतः (ते) तेरे लिये (इदम्)यह (प्रवक्ष्यामि) उपदेश करूँगा कि (१) एक जो (गुह्यम्-सनातन-ब्रह्म) अत्यन्त गोपनीय वेदाभ्यास और योगाभ्यास ही से जानने योग्य (सनातनम्) सदा से नित्य रूप में सबको स्वामी और (ब्रह्म) महान् परमेश्वर है, उसका प्रवचन करूँगा (च) और हे (गौतम) वाणी के रहस्य को समझने वालों में श्रेष्ठ नचिकेत! तुझे (२) यह भी शिक्षा करूँगा कि (मरणम्) मृत्यु को (प्राप्य) प्राप्त होकर (आत्मा) जीव की जो दशा होती है।

सब जीवात्मा (यथा कर्म यथा श्रुतम्) अपने-अपने ज्ञान और कर्म के अनुसार परमेश्वर की व्यवस्था के अधीन होकर (अन्ये देहिनः) कुछ शरीरधारी जीव (योनिम्) भिन्न-भिन्न योनियों=शरीरों को (प्रपद्यन्ते) प्राप्त करते हैं तथा दूसरे शरीरधारी जीव अपने ज्ञान और कर्म के अनुसार ही ब्रह्म की व्यवस्था के आधीन होकर (स्थाणुम्) निश्चित एक अद्वितीय परमेश्वर को (अनुसंयन्ति) प्राप्त हो जाते हैं अर्थात् मुक्ति को प्राप्त करके मोक्ष काल की अवधि पर्यन्त ब्रह्म के आनन्द का उपभोग करते हुए सर्वत्र स्वच्छन्द भ्रमण करते हैं। उनको मानव शरीर उस मुक्ति की अवधि तक पुनः धारण नहीं करना पड़ता।

(विशेष- 'स्थाणु' शब्द का अर्थ प्रायः सभी विद्वान् वृक्षादि स्थावर योनि करते हैं अर्थात् दूसरे जीव इन नीच योनियों को प्राप्त होते हैं। परन्तु हमारे मत में ऐसा अर्थ ठीक नहीं है। क्योंकि यदि वे विद्वान् वृक्षादिस्थावर शरीर को योनि मानते हैं, तो इस श्लोक के पूर्वार्द्ध में यह बात कही जा चुकी कि वे योनि को प्राप्त हो जाते हैं फिर इस श्लोक के उत्तरार्द्ध में ''योनि'' शब्द का कुछ भी वर्णन नहीं, अपितु ''स्थाणु'' शब्द दिया गया है। परन्तु स्थाणु का अर्थ इस श्लोक में वृक्ष का ठूँठ नहीं है, अपितु ईश्वर है। ईश्वर ही एक अणु= अत्यन्त सूक्ष्म चेतन तत्त्व ऐसा है जो कि गति रहित है अतः वह गति रहित होने से स्थाणु कहा गया है। इसके साथ यह बात भी है कि जो मनुष्य मुक्ति के साधन करके परमानन्द को प्राप्त करते हैं, उनका इस श्लोक में वर्णन नहीं मिलता और आगे भी उपनिषद् की समाप्ति पर्यन्त इसका उपदेश नहीं दिया गया। अतः इस श्लोक के उत्तरार्ध में उन मनुष्यों का वर्णन किया गया है जो कि अपने-अपने ज्ञान और कर्म के अनुसार परमेश्वर रूपी मोक्ष को प्राप्त करते हैं। 'गीता तक में भी स्थाणु' शब्द का प्रयोग चेतन सत्ता के रूप में हुआ है।।)

इस उपर्युक्त कठोपनिषद् के विवरण से स्पष्ट हो गया कि मृत्यु के पश्चात् जीव की दो गतियाँ होती हैं= (१) एक परमेश्वर की व्यवस्था से जीव अपने कर्म फल भोगने के लिये भिन्न-भिन्न योनियों को धारण करते हैं। (२) दूसरे वे पवित्रात्मा शद्ध ज्ञान, कर्म और उपासना के द्वारा मुक्ति को प्राप्त करते हैं।

मृत्यु के समय का वर्णन – महर्षि वेद व्यास ने वेदान्त दर्शन में बड़े विस्तार से मृत्यु काल की अवस्था का

thearyasamaj.org

वर्णन किया है। हम उसी आधार पर कुछ विवेचन करते हैं-

तदन्तरप्रतिपत्तौ रंहति संपरिष्वक्तः प्रश्ननिरूपणाभ्याम्।।

- वेदान्त ३.१.१

अर्थात् शास्त्रों में प्रश्न और उत्तर रूप में यह कहा गया है कि जीव मृत्यु होने पर जब अगले शरीर को धारण करने के लिये वर्त्तमान शरीर को छोड़ता है, तब वह अकेला नहीं जाता, अपितु उसके साथ सूक्ष्म शरीर भी जाता है। सूक्ष्म शरीर में ५ ज्ञानेन्द्रियाँ, पाँच प्राण, पाँच सूक्ष्मभूत, मन और बुद्धि माने जाते हैं। अन्य सूक्ष्म तत्त्वों का भी इन्हीं में समावेश कर लिया जता है। स्थूल शरीर तो यहीं रह जाता है, जिसका दाह किया जाता है। अब इन तत्त्वों में किस क्रम से कौन पहिले इस शरीर को छोड़ने लगता है=

वाङ् मनसि दर्शनाच्छब्दाच्च।।

-वेदान्त दर्शन ४.२.१

यह देखा भी जाता है और शास्त्रों में प्रतिपादित किया गया है कि मरने वाले जीव की वाणी सब से पहिले मन में चली आती है। अब वह बोल नहीं सकता, परन्तु देखना, सुनना, चखना, सूँघना और विचार करना बना रहता है। अब अगली प्रक्रिया देखिये-

अत एव सर्वाण्यनु।।

- वेदान्त ४.२.२

जब वाणी का कार्य ठप हो गया, तब उसके पीछे-पीछे दूसरी ज्ञानेन्द्रियाँ चक्षु, श्रोत्र, घ्राण और त्वग् भी अपनी सत्ता को शरीर से हटाकर वाणी के अनुसार ही ये भी मन मे चली जाती हैं। यहाँ यह नहीं समझना चाहिये इन ज्ञानेन्द्रियों का नाश हो गया। नहीं, इन पाँचों की सत्ता बनी रहती है, परन्तु इन का व्यवहार बन्द होकर मन में जाकर सिमट गया। अब आगे का दृश्य देखिये-

तन्मनः प्राण उत्तरात्।।

- वेदान्त ४.२.३

उन इन्द्रियों के सहित मन प्राणों में चला जाता है। ऐसी दशा में बाहर का सब कार्य बन्द हो गया। केवल प्राण की क्रिया स्थूल शरीर में देखी जा रही है। अब अगली सीढ़ी को निहारिये-

सोऽध्यक्षे तदुपगमादिभ्यः।।

- वेदान्त ४.२.४

वह प्राण अब मन और इन्द्रियों को साथ लेकर शरीरादि इन सब शरीरों को छोड़ के विद्युत, सूर्य के प्रकाश और वायु आदि को प्राप्त होकर जाते हैं और गर्भ में प्रवेश करते हैं तब किरण उनको छोड़ देती है। क्योंकि तब उस जीव के सूक्ष्म शरीर का सम्बन्ध पुनः स्थूल शरीर से हो जाता है।

जिस समय जीव शरीर से निकल कर आकाश, वायु, सूर्य, चन्द्र और विद्युत् आदि तत्त्वों में गमन करता है तब इन तत्त्वों के द्वारा उसको कर्मफल भोग नहीं मिलता। क्योंकि ये सब उसको आगे पहुँचाने के साधन मात्र हैं और जीव सुषुप्ति दशा में ही रहता है। जैसे-

आतिवाहिकास्तल्लिङ्गात्।।

- वेदान्त ४.३.४

ये वायु आदि तत्त्व तो उस जीव को सवारी का काम देते हैं अन्य कुछ इनका जीव से सम्बन्ध नहीं होता। अगले ही सूत्र में कहा है-

उभयव्यामोहात् तत्सिद्धेः।।

- वेदान्तः ४.३.५

जीव की इस अवस्था में गमनागमन करते हुए व्यामोह की दशा होती है। उसको इन साधनों का कुछ ज्ञान नहीं होता। वह तो परमात्मा की व्यवस्था के आधीन रहता है।

यहाँ एक विशेष बात का ध्यान रखना आवश्यक है कि जीव के पूर्व शरीर को छोड़कर निकल कर इन तत्त्वों में जाने को शास्त्र की परिभाषा में आरोह=आरोहण कहा जाना है अर्थात् वह आकाश में चढ़ रहा है। जब उसके सूक्ष्म शरीर और पूर्व स्थूल शरीर को मिलाने वाली कड़ियाँ टूटती हैं तब आरोहण काल माना जाता है इस के सम्बन्ध में टूटने और जीव को अगली स्थूल शरीर धारण करने और सूक्ष्म शरीर का उस से सम्बन्ध होने तक अवरोह=अवरोहण काल माना जाता है। इस आरोहण और अवरोहण प्रक्रिया का उपनिषदों तथा वेदान्त दर्शन में विस्तृत रूप से वर्णन मिलता है। उस सब का उल्लेख इस छोटे से लेख में करना सम्भव नहीं। जिज्ञासु सज्जन उन उन शास्त्रों का स्वाध्याय कर के यथावृत्त का ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। यहाँ तक पूर्व शरीर से जीव के उत्क्रमण=बाहर निकल कर वायु आदि पदार्थों में भ्रमण करने का उल्लेख है। यह भ्रमण निष्प्रयोजन नहीं है, अपितु परमात्मा की व्यवस्था पूर्वक स्थूल शरीर के साथ जो भौतिक सम्पर्क था, उसको छोड़ना होता है। फिर अगले शरीर के साथ जो भौतिक सम्पर्क था, उसको छोड़ना होता है। फिर अगले शरीर के स्थूल शरीर के साथ सूक्ष्म शरीर का इन्हीं तत्त्वों का संयोग होना है। इसी कारण यह भ्रमण काल माना जाता है। जीवात्मा को इस काल का कुछ बोध नहीं है, यह तो वेद

thearyasamaj.org

से ही जाना जा सकता है और तदनुसार आर्ष ग्रन्थों के स्वाध्याय से जब अगले शरीर के धारण करने के लिये जीव अवरोहण करता है तब भी इन्हीं वायु आदि पदार्थों के द्वारा ही ईश्वर उसको पहुँचाता है।

अब विचारना यह है कि जीव का जो यह आरोह-अवरोह काल है अर्थात् एक शरीर को छोड़कर वायु आदि पदार्थों में भ्रमण करके दूसरे शरीर में जाना है- इसमें कितना समय लगता है:-

नातिचिरेण विशेषात्।। वेदान्त ३-१-२४ शास्त्र के विशेष वचन से पता चलता है इस का समय ''अति चिर''= बहुत देर, ''न''=नहीं है अर्थात् थोड़ा ही काल लगता है। चरक शास्त्र में लिखा है-

देहग्रहणेऽपि प्रवर्त्तमानः पूर्वतरमाकाशमेवोपादत्ते ततः क्रमेण व्यक्ततरगुणान् धातून् वाय्ववादिकाँश्च चतुरः सर्वमपि तु खल्वेतद्गुणोपादानमणुना कालेन भवति।

- शारी.४-८

अर्थात् देहग्रहण में प्रवर्त्तमान पहिले आकाश का ही ग्रहण होता है फिर क्रम से जिन धातुओं के गुण प्रकट होने वाले वायु आदि चारों भूतों का यह सब कुछ ग्रहण अति सूक्ष्म काल में ही हो जाता है। अर्थात् इन में अधिक काल नहीं लगता।

ऋषि दयानन्द यजुर्वेद अध्याय ३९ के छठे मन्त्र के भावार्थ में लिखते हैं--

''हे मनुष्यो! जब ये जीव शरीर को छोड़ते हैं तब सूर्यप्रकाश आदि पदार्थों को प्राप्त होकर कुछ काल भ्रमण कर अपने कर्मों के अनुकूल गर्भाशय को प्राप्ति हो शरीर धारण कर उत्पन्न होते हैं।''

अब प्रश्न यह है क्या सब जीवों के भ्रमण का काल एक समान ही अत्यल्प होता है? इस का उत्तर यह है कि कुछ जीवात्मा अपने अपने कर्मों के अनुसार इस भ्रमण काल में अनुशयी रूप से अनेक पदार्थों में होते हुए माता के गर्भ में पहुँचते हैं। कुछ अपने कर्मानुसार शीघ्र माता वा पिता के शरीर में जलादि के द्वारा पहुँच जाते हैं। अत: सब का भ्रमण काल एक समान नहीं। हाँ एक समता यह है कि यह भ्रमण काल बहुत थोड़ा होता है, जैसे कि हम ऊपर लिख सके हैं।

जो जीवात्मा पुन: जन्म धारण न करे मुक्ति को प्राप्त होते हैं, उनका वर्णन इस लेख में नहीं किया गया है।

इस लेख से स्वाध्यायशील बन्धुओं को अनेक प्रकार की जिज्ञासा और संशय उत्पन्न होंगे। यह अच्छा लक्षण है। परन्तु अपनी जिज्ञासा की पूर्ति और सन्देहों की निवृत्ति के लिये वेदान्त दर्शन और तत्सम्बन्धी उपनिषदों का पारायण करना चाहिये। सामान्य प्रश्नोत्तर रूप से उस गम्भीर समस्या का एक मात्र उपाय स्वाध्याय ही है।

इस विषय के अनेक अवान्तर प्रकरण शास्त्रों में वर्णित हैं, हमने उनको इसलिये नहीं लिखा कि इस प्रकार पूरा ग्रन्थ बन जाता। हमने जिज्ञासु बन्धुओं के लिये एक मार्ग रखा है, जिस पर चल कर वास्तविक तत्त्व को समझा जा सकता है हमारा यत्न तो केवल प्रेरणा देने का ही है।

- दिल्ली

दक्षिण भारत में बलिदान परम्परा के पच्चहत्तर वर्ष

प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी ऋषि के बलिदान समारोह के अवसर पर दक्षिण भारत में आर्य समाज का प्रचार-प्रसार करते हुए जिन हुतात्माओं ने अपने प्राणों का उत्सर्ग किया, उनका पुण्य स्मरण किया जायेगा।

दक्षिण भारत में निजाम के अत्याचारों की भट्टी में जो शहीद हुए उनमें प्रमुख हैं-

श्री भीमराव पटेल, माता गोदावरी देवी, श्री कृष्णराव विकेकर, श्री काशीनाथ धारूर, श्री गोविन्द राव घाडेलाली इन सभी को जिन्दा जलाया गया। अनेकों का जेल में बलिदान हुआ, इनमें भाई श्यामलाल जी, श्री धर्मप्रकाश जी, आर्यनेता पं. नरेन्द्र जी आदि प्रमुख थे, इन महानुभावों का इस अवसर पर पुण्य स्मरण किया जायेगा। परोपकारी में इन बलिदानियों के संस्मरण प्रकाशित होंगे।

सभी आर्यजनों से निवेदन है कि अपनी-अपनी समाजों में, आर्यसमाज के इतिहास व बलिदानी वीरों की साप्ताहिक सत्संग के अवसर पर चर्चा करें। अपने इतिहास बलिदानों का स्मरण रखने वाला समाज ही अपने को जीवित रख पाता है।

thearyasamaj.org

परोपकारिणी सभा, अजमेर के तत्त्वावधान में
१३१ वाँ ऋषि बलिदान समारोह

दिनांक ३१ अक्टूबर तथा १-२ नवम्बर, शुक्र, शनि, रविवार

महापुरुषों का यज्ञमय जीवन हमको प्रत्येक कदम पर प्रेरणा व मार्गदर्शन देता रहता है। जिस कारण हम उनके ऋणी हो जाते हैं। इस ऋण से मुक्त होने का एक ही उपाय है - महापुरुषों की विचारधारा का यथासामर्थ्य प्रचार-प्रसार। विराट व्यक्तित्त्व महर्षि दयानन्द की समग्र मानव जाति ऋणी है। इस ऋण को चुकाने का स्वर्ण-अवसर ऋषि के १३१वें बलिदान वर्ष के उपलक्ष्य में हमको प्राप्त हुआ है। इस अवसर पर परोपकारिणी सभा भव्य समारोह का आयोजन करने जा रही है।

ऋग्वेद पारायण यज्ञ - २७ अक्टूबर से 'ऋग्वेद पारायण यज्ञ' का आरम्भ किया जायेगा, इस यज्ञ की पूर्णाहुति बलिदान समारोह के अन्तिम दिन २ नवम्बर को होगी। यज्ञ के **ब्रह्मा डॉ. वागीश, मुम्बई** होंगे। यह यज्ञ ऋषि-उद्यान, अजमेर की यज्ञशाला में होगा।

वेदगोष्ठी - प्रतिवर्ष की परम्परा के अनुसार इस वर्ष भी अन्तरराष्ट्रीय दयानन्द वेदपीठ दिल्ली एवं अनुसन्धान केन्द्र परोपकारिणी सभा के संयुक्त प्रयास से वेदगोष्ठी का आयोजन किया गया है। इस गोष्ठी में देश के विविध विद्वान् अपने शोधपूर्ण मौलिक विचार प्रस्तुत करेंगे। इस वर्ष वेदगोष्ठी का विचारणीय बिन्दु है-**भारतीय मत सम्प्रदाय और वेद**। जो विद्वान् गोष्ठी में शोधपत्र प्रेषित करना चाहते हैं, वे १५ अक्टूबर तक सभा के पते पर प्रेषित करवा देवें। ३१ अक्टूबर, १-२ नवम्बर को ऋषि बलिदान समारोह के कार्यक्रमों के साथ-साथ वेदगोष्ठी भी चलती रहेगी। ऋषि-भक्त इसे सुनने का लाभ उठा सकते हैं।

चतुर्वेद कण्ठस्थीकरण वेद प्रतियोगिता - प्रतिवर्ष आयोजित की जाने वाली इस प्रतियोगिता में २१ वर्ष तक के छात्र भाग ले सकते हैं। किसी भी वेद को आद्योपान्त स्मरण करके इस प्रतियोगिता में भाग लिया जा सकता है। जो छात्र जिस वेद पर गतवर्षों में पारितोषिक ग्रहण कर चुके हैं, वे उस वेद से अतिरिक्त वेद स्मरण करके भाग ले सकते हैं। ३१ अक्टूबर को परीक्षा एवं १ नवम्बर को पुरस्कार-वितरण का कार्यक्रम होगा। जो छात्र इस प्रतियोगिता में भाग लेना चाहते हैं, वे अपने-अपने गुरुकुलों, आश्रमों, संस्थानों से आचार्य द्वारा अधिकृत पत्रक पर २-छायाचित्र सहित अपना परिचय १५ अक्टूबर, २०१४ तक 'आचार्य महर्षि दयानन्द आर्ष गुरुकुल, ऋषि-उद्यान, अजमेर' इस पते पर भेज दें।

सम्मान - प्रतिवर्ष विशिष्ट वैदिक विद्वान्, विदुषियों एवं कार्यकर्त्ताओं को इस समारोह में सम्मानित किया जाता है। इस वर्ष भी सम्मान-समारोह होगा। जिसमें अनेक विद्वान्-विदुषियों एवं कार्यकर्त्ताओं को सम्मानित किया जायेगा।

अक्टूबर के आरम्भ में अजमेर में हलकी ठंड होने लगती है, ऋषि उद्यान खुले में होने से सर्दी का प्रभाव कुछ अधिक रहेगा। रात्रि में कम्बल ओढ़ने जैसी ठण्ड रहेगी। जो समूह में रहना चाहते हैं उनकी निवास व्यवस्था ऋषि उद्यान में होगी और जो अपने निवास की व्यवस्था होटल-धर्मशाला में करवाना चाहते हैं, कृपया वे सभा कार्यालय से पूर्व सम्पर्क कर अग्रिम राशि जमा करवा कर कमरा आरक्षित करवा लें।

सभी से विशेष निवेदन है कि अपने आने की सूचना कम से कम एक सप्ताह पूर्व दे देवें, जिससे संख्या का अनुमान होकर तदनुसार व्यवस्था की जा सके।

सभी से निवेदन है कि १३१ वें बलिदान समारोह में अपने परिवार व समाज के सभी कार्यकर्त्ताओं सहित पधार कर महर्षि को हार्दिक श्रद्धांजलि प्रदान करें, महर्षि दयानन्द के स्वप्न को साकार करने हेतु प्रेरणा उत्साह प्राप्त कर प्रचार-प्रसार को एक नई चेतना प्रदान करें।

ऋषि मेले में आमन्त्रित विद्वान्-आचार्य बलदेव जी, प्रो. राजेन्द्र जिज्ञासु जी-अबोहर, आचार्य विजयपाल जी-झज्जर, स्वामी ऋतस्पति जी, डॉ. ब्रह्ममुनि जी-महाराष्ट्र, डॉ. सुरेन्द्र कुमार जी-गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार, डॉ. वेदपाल जी-बड़ौत, आचार्या सूर्या देवी जी-शिवगंज, डॉ. राजेन्द्र जी विद्यालंकार, डॉ. रामप्रकाश जी, सत्येन्द्रसिंह जी-मेरठ, डॉ. कृष्णपालसिंह जी-जयपुर, श्री सत्यानन्द आर्य-दिल्ली, श्री राजवीर जी-मुरादाबाद, श्री जगदीश जी शर्मा-जयपुर, श्री शिवकुमार जी चौधरी-इन्दौर, श्री जयदेव जी आर्य-राजकोट, श्री प्रकाश जी आर्य-महू, श्री सत्यपाल जी पथिक, पं. भूपेन्द्र सिंह जी आदि।

इस समारोह हेतु आपका आर्थिक सहयोग आयकर की धारा '८०-जी' के अन्तर्गत दिए गये प्रावधान के अनुरूप कर मुक्त होगा। विदेश में निवास कर रहे धर्मप्रेमी सज्जन स्वदेश में होने वाले इस समारोह हेतु मुक्त हस्त से दान देकर देश का गौरव बढ़ाएँ। सभा को भारतीय शासन द्वारा विदेशों से दानस्वरूप दी गई राशि को प्राप्त करने की छूट प्राप्त है। आपका सहयोग ही हमारा सम्बल है। शुभकामनाओं सहित।

गजानन्द आर्य प्रधान	**धर्मवीर** कार्यकारी प्रधान	**ओम मुनि** मन्त्री

thearyasamaj.org

तुम हिन्दू हो या आर्य?

टिप्पणी- महर्षि दयानन्द ने जाति को गौरवान्वित करते हुए यह बताया कि हमारा नाम आर्य है, हिन्दू नहीं। ऋषि के बलिदान के कुछ ही समय के पश्चात् काशी के नामी पण्डितों ने ऋषि के इस कथन की पुष्टि करते हुए यह सर्वसम्मत व्यवस्था दी कि हमारा नाम आर्य है, हिन्दू नहीं।

हिन्दू नाम परकीय लोगों का दिया हुआ है। काशी के दर्जनों शीर्षस्थ पण्डितों की इस सर्वसम्मत व्यवस्था की विश्वनाथ मन्दिर की शिला से भी होती है। वहाँ भी आर्येतर का प्रवेश निषिद्ध है।

इस व्यवस्था को ध्यान में रखकर पारसियों ने माँग की थी कि यदि आर्य नाम को अपनाया जावे तो हम भी आर्यों में मिलने को तैयार हैं परन्तु हिन्दू महासभा ऐसा साहस न कर सकी। स्वामी वेदानन्द जी की पुस्तिका में यह प्रमाण मिल सकता है।

जो लोग यह तर्क देते हैं कि सिन्धु से हिन्दू बन गया वे बतायें कि सिन्धु तो फिर भी सिन्धु ही रहा। फारसी शब्द में भी 'स' अक्षर से अनेक धातु तथा सहस्रों शब्द फ़ारसी शब्द कोश में मिलते हैं अत: 'स' से 'ह' बन जाता है- यह सारहीन कुतर्क है। काशी के पण्डितों की यह व्यवस्था आँखें खोलने वाली है।

आश्चर्य होता है कि अपने प्राचीन ग्रन्थों का प्रमाण न देकर हिन्दुत्वादी फारसी भाषा का सहारा लेते हैं। फ़ारसी का भी इन्हें ज्ञान नहीं है।

- प्रा. राजेन्द्र 'जिज्ञासु'

ओ३म्

"तुम हिन्दू हो या आर्य,,

देखो:—

काशी के पण्डितों का व्यवस्थापत्र,,

श्री हंसायनमः—

सम्मतो यमयों विशुद्धानन्द सरस्वाति स्वामिना।

अर्थ—श्री हंसको नमस्कारहो-विशुद्धानन्द सरस्वति की सम्मति इसमें है।

और देखिये—

शाके युग्म नवाश्व चन्द्र मिळिते मासे शुभे श्रावणे, काशी श्री वर तीर्थराज निकटा दगत्य शुक्लेचरे। पक्षे वै गिरिराज ना मति तिथौ चन्द्रस्य वारे शुभे, नीता ठाकुर सिंहराज तिलकैर्लेपं वरैः पण्डितैः॥ १॥

thearyasamaj.org

अर्थ—सातों के शुक्लपक्षमें बुधवारको काशी श्री श्रेष्ठ तीर्थ में पण्डित लोग श्री राजतिलक ठाकुर सिंहजी के समीप यह सम्मति पत्र ले गये।

प्रश्न वाक्य ॥

श्री मद्भागवत एकादश स्कन्ध सत्तरहवी अध्याय में लिखा है कि सतयुग में केवल हंस वर्ण सबकोई कहाते थे त्रेता में हंसोक्त चारवर्ण चार आश्रम का विभागहोता भया ॥ इस कारण वर्णाश्रमी कहाये परन्तु अब सब कोई हिन्दू नाम करके ख्यात करते हैं सो हिन्दू शब्द का चर्चा कोई शास्त्र में नहीं मिलता। इस हेतु हम यहजानना चाहते हैं कि हिन्दू कहाना उचित किंवा अनुचित है।

उत्तरवाक्य ॥

वर्णाश्रमी देशबोधक जो हिन्दूशब्दहै सो यवन संकेत है वर्णाश्रमी बोधक जोहिन्दूशब्द है यहभी यवन संकेतहै। इस कारण हिन्दूकहाना सर्वथा अनुचितहै यह निर्णयश्रीकाशी मध्य टेढी नीमतले श्रीमहाराजाधिराज श्री काशीराज संरक्षित धर्मसभामें सत्पुरुषोंने किया—

thearyasamaj.org

इसके नीचे निन्मलिखित ४५ सम्मति देने वाले पंडितों के हस्ताक्षर हैं ॥

१ श्री विश्वनाथ शर्मा, २ श्री ग्रहमती शर्मा
३ श्री प्यारे शर्मा, ४ श्री दपर्का शर्मा
५ श्री रामशरण शर्मा, ६ हारिवनाथ शर्मा
७ श्री दाबू नाथ शर्मा, ८ श्रीसोनमती शर्मा
९ श्री हरीदत्त शर्मा ॥

(ये महात्मा अवसंन्यासी हैं और मनीषानन्द के नाम से प्रसिद्ध हैं और टेढी नीम में रहते हैं)

१० श्री महतावनरायणशर्मा ११ श्री भानु शर्मा
१२ श्री आदि नाथ शर्मा १३ श्री नन्दी पत्त शर्मा
१४ श्री श्यामलाल शर्मा १५ श्रीवेदी बस्तीराम शर्मा
१६ श्री माता चरण शर्मा १७ श्री राधामोहन शर्मा
१८ श्री नवीन नारायण शर्मा १९ श्रीकालिकाप्रशाद शर्मा
२० श्री कैलास शर्मा २१ श्री मनमोहन शर्मा
२२ श्री सुमेस शर्मा २३ श्री गूदर शर्मा
२४ श्री रघुनन्दन शर्मा २५ श्री बच्चू शर्मा

thearyasamaj.org

२६ श्री कीर्ति नाथ शर्मा — २७ श्री काल शर्मा
२८ श्री द्वारकानाथ शर्मा — २९ श्रीराजाराम श० शास्त्री
३० श्री बाल शास्त्री — ३१ श्री शिवाराम भट्ट
३२ श्री बापू देव शास्त्री — ३३ श्री चन्द्रशेखर शर्मा
३४ श्री देवदत्त शर्मा — ३५ श्री घनश्याम शर्मा
३६ श्री रमापति शर्मा — ३७ श्रीश्यामाचरन शर्मा
३८ श्री नागेश्वर शर्मा — ३९ श्रीअम्बिकादत्त शर्मा
४० श्री चण्डीदत्त शर्मा — ४१ श्री० दुर्गाप्रशाद शर्मा
४२ श्री गोस्वामी पं० रघुनाथ प्रशाद शर्मा — ४३ श्री बाबा शास्त्री,
४४ श्री प्रभुनाथ शर्मा — ४५ श्री हरिहर शर्मा

इन के पश्चात ४६ वीं सम्मति पं० दुर्गादत्त शर्मा की थी जिन्हों ने कि अपनी सम्मति के साथ दो श्लोक और लिखे थे —

(हिन्दू शब्दोहि यवनैष्वधर्मि जन बोधकः अतो नार्हन्ति तच्छब्दौ बोध्यतां सकला जनाः ।१। पापिनां पापि यवनैस्संकेते कृत वासरः नोचि तस्स्वीकृतो ऽस्मा भिर्हिन्दूमिती रितः ॥ २ ॥

शेष भाग अगले अंक में........

thearyasamaj.org

अतिथि यज्ञ के होता बनें

महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा आर्य जगत् की एक मात्र ऐसी संस्था है जो सामूहिक सहयोग से ऋषि द्वारा निर्धारित लक्ष्यों की पूर्ति हेतु कृत संकल्प है।

सभा निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर है। निरंतर अबाध गति से ऋषि उद्यान को आकर्षक एवं जन उपयोगी बनाने हेतु नव निर्माण करा रही है, वेद प्रचार पूरे देश में संचालित कर रही है, वेदों का एवं ऋषि ग्रंथों का प्रकाशन निरंतर जारी है।

प्रातः एवं सायं दैनिक यज्ञ– प्रवचन, वेद-पाठ, उपनिषद्, दर्शनादि शास्त्रों की कथा द्वारा वैदिक धर्म का कार्य नियमित रूप से आश्रम में चलता है। ***गुरुकुल***– आर्ष पद्धति से संचालित गुरुकुल में पढ़ रहे ब्रह्मचारी जो साधना एवं समाज सुधार का लक्ष्य लेकर अध्ययनरत हैं उनकी सभी आवश्यकताओं की पूर्ति निःशुल्क की जाती है। ***अतिथि सेवा***– अतिथियों को यथोचित सुविधा प्रदान करने हेतु सभा पूर्ण रूपेण प्रयासरत है एवं सभी सुविधाएँ आवास, प्रातराश, भोजन की व्यवस्था निःशुल्क की जाती है। ***गोशाला***– गोशाला में चालीस के लगभग पशु हैं। इससे अधिक का स्थान नहीं है। आश्रमवासियों को गोशाला में उत्पादित दुग्ध का निःशुल्क वितरण किया जाता है। ***वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम***– वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम में रहकर साधनारत वानप्रस्थियों एवं संन्यासियों की सभी प्राथमिक आवश्यकताओं की पूर्ति सभा द्वारा निःशुल्क की जाती है। स्वाध्याय एवं साधना की व्यवस्था है। ***विशाल पुस्तकालय***– इसमें दुर्लभ ग्रंथों का संग्रह है, सभा द्वारा शोध कर्ता छात्रों को शोध कार्य हेतु ग्रंथ निःशुल्क प्रदान किए जाते हैं जिनका लाभ स्वाध्यायशील व्यक्ति भी उठा सकते हैं। ***व्यायामशाला***– योग्य शिक्षक द्वारा नगर के युवाओं को ऋषि उद्यान में निःशुल्क व्यायाम प्रशिक्षण दिया जाता है। सभा द्वारा नियुक्त व्यायाम शिक्षक आसपास के गांवों से भी आर्यवीर दल का प्रशिक्षण शिविरों में प्रदान करते हैं।

ये सभी क्रियाकलाप आपके पावन उदार सहयोग से ही संभव हैं। जैसा कि सर्वविदित है कि सभा का आधार ही आकाशीय दानवृत्ति है। आपको प्रतिदिन अतिथि मिलना संभव नहीं फिर अतिथि यज्ञ कैसे किया जाय इसका उपाय है, कुछ राशि प्रतिदिन अतिथि यज्ञ के नाम से निकाल ली जाये और उसको एकत्र कर अतिथि सत्कार में गुरुकुल में भोजन आदि के सहयोग में दे दी जाय।

सभा के धार्मिक क्रियाकलापों एवं आवासीय स्थल ऋषि उद्यान में उपर्युत पावन क्रियाकलाप लम्बे समय तक अबाध चलते रहें इसके लिए सभा की योजना है कि प्रतिदिन १० रुपये अथवा प्रतिवर्ष ५ हजार की राशि प्रदान करने वाले उदार यशस्वी दानदाताओं का नाम अतिथि यज्ञ के स्थायी सदस्यों में अंकित किया जाता है ऐसे सज्जनों के नाम का परोपकारी में प्रकाशन भी किया जाता है।

अनेक 'अतिथि यज्ञ के होता' सदस्यों का आग्रह है, निश्चित तिथि जन्मदिन, विवाह वर्ष गांठ या विशेष अवसर पर वे अपनी ओर से संस्था में भोजन कराना चाहते हैं। ऐसे महानुभावों से निवेदन है कि वे अतिथि यज्ञ के होता के रूप में एक दिन के भोजन व्यय की राशि पाँच हजार एक सौ रुपये भेजते हुए इच्छित दिन का विवरण सूचित करेंगे तो उसका उल्लेख आश्रम के सूचना पट्ट पर किया जा सकेगा।

यह अल्प राशि आप दैनिक संचय घट में जमा भी कर सकते हैं, वर्ष में लोग अरबों रुपए आग में पटाके फोड़कर जलाते हैं असावधानी से बिजली जलती छोड़ इसे गंवा देते हैं आदि ऐसी छोटी-छोटी असावधानियों को रोक कर हम उसकी बचत राशि इस पावन कृत्य हेतु सभा को वर्ष में आसानी से दे सकते हैं।

सभा शिविरों के आयोजन द्वारा जन सामान्य को ऋषियों की जीवन प्रणाली सिखा रही है। आप इस योजना में स्थायी सदस्य बनकर ऋषि का संकल्प *संसार का उपकार* की पूर्ति में एक स्तम्भ बनकर सभा को सम्बल प्रदान कर सकते हैं।

यदि अपने सामर्थ्य के अनुसार राशि को न्यूनाधिक करना चाहें तो आपकी स्वतन्त्रता है अधिक से अधिक लोग परोपकारिणी सभा से जुड़ सकें, आप ऐसा करके ऋषि दयानन्द के कार्यों को आगे बढ़ाने में सहायक होंगे इसलिए ऐसी राशि निश्चित की है। आप से प्रार्थना है अपना नाम पता और संकल्प लिखकर अवगत करायें और अतिथि यज्ञ के होता बनें। अपनी राशि प्रतिमाह अथवा सुविधानुसार मनीआर्डर/डीडी/चैक द्वारा अथवा स्वयं उपस्थिति होकर कार्यालय में जमा करा सकते हैं। आपका दान ८०जी (आयकर की धारा) के अंतर्गत कर मुक्त होगा।

अतः आपसे निवेदन है कि आप भी अतिथि यज्ञ के होता बनिये। जिन महानुभावों ने हमारा निवेदन स्वीकार कर यज्ञ में अपनी आहुति दी है, उनके नाम यहाँ प्रकाशित किये जा रहे हैं।

thearyasamaj.org

अतिथि यज्ञ के होता

(१६ से ३१ अगस्त २०१४ तक)

१. श्री हरसहाय सिंह, बरेली, उ.प्र. २. श्री कपिल साहनी, नासिक ३. श्री अशोक हरचन्दानी, सरदारशहर, चुरू, राज. ४. श्री अनुपम आर्य, अजमेर ५. श्री भव्य नवाल, अजमेर ६. श्रीमती कीर्ती बेन भट्ट, जामनगर, गुज. ७. श्री डॉ. वेदप्रकाश, भरतपुर, राज. ८. श्री नरेन्द्र आर्य, पानीपत, हरि. ९. श्री बालेश्वर मुनि, अजमेर १०. श्रीमती सरोज शर्मा, अजमेर ११. आचार्या सन्तोष आर्या, पानीपत, हरि. १२. श्रीमती उषा आर्या, अजमेर १३. श्री विजयसिंह गेहलोत, अजमेर १४. श्री विकास राज आर्य, अजमेर १५. श्री अनन्त मेहता, झज्जर शहर, १६. मास्टर कपूरसिंह आर्य, जीन्द, हरि. १७. श्री गौरव मिश्रा, अजमेर १८. श्री प्रभुलाल कुमावत, किशनगढ़, राज. १९. श्री शरद कान्त कुलश्रेष्ठ, जयपुर, राज. २०. श्री कैलाश कुमार गुप्ता, जोधपुर, राज. २१. श्रीमती किरण कुलश्रेष्ठ, जोधपुर, राज. २२. राजक महासभा अम्बाला केन्ट, हरि. २३. श्रीमती मेहता माता, अजमेर २४. श्रीमती पुष्पलता उपाध्याय, अजमेर २५. श्री एम.एम. कथूरिया, नई दिल्ली २६. श्री ओमप्रकाश अरोड़ा, ग्वालियर, म.प्र. २७. श्री डॉ. सुचेता पोफले, उमरगा, महा. २८. श्री मुकुट बिहारी, जयपुर, राज. २९. श्री ब्रजमोहन बांगड़, अजमेर ३०. श्री विक्रम, चित्तौड़गढ़, राज. ३१. श्रीमती सुषमा मल्होत्रा, पानीपत, हरि. ३२. श्रीमती कमला आर्या, जोधपुर, राज. ३३. श्री बलजीतसिंह आर्य, दिल्ली ३४. श्री देवमुनि, अजमेर ३५. आर्यसमाज कोटपुतली, राज. ३६. डॉ. निवृत्ति बापू राव काले, महा. ३७. श्रीमती प्रेमवती आर्या, अजमेर। **-परोपकारिणी सभा, अजमेर।**

गौभक्तों से निवेदन

ऋषि उद्यान में परमार्थ हेतु गौशाला संचालित है। गौशाला में उत्पादित गौवों के दूध का वितरण सभी गुरुकुलवासियों, संन्यासियों एवं आगन्तक अतिथियों में नि:शुल्क किया जाता है। आप सभी गौ-भक्तों एवं उदारमना दानदाताओं से सभा का निवेदन है कि गौओं को उत्तम चारा मिले इसके लिए जो भी सज्जन चारा दान देना चाहें, उनका स्वागत है। यदि आप दूरस्थ प्रदेश के हैं तो कृपया चारे हेतु अनुमानित राशि सभा को ड्राफ्ट/चेक/नगद भेज सकते हैं। यशस्वी दानदाताओं के नाम परोपकारी पत्रिका में प्रकाशित किए जाएंगे। आपका दान गौवों के संवर्धन में सहायक होगा।

ऋषि उद्यान में संचालित गौशाला के दानदाता

(१६ से ३१ अगस्त २०१४ तक)

१. आर्यसमाज श्रद्धाबाद, हैदराबाद २. श्री महेन्द्रसिंह, हिसार, हरि. ३. श्री ब्रजभूषण गुप्ता, पंचकूला, हरि. ४. श्री शैलेन्द्र कुमार, मेरठ, उ.प्र. ५. श्री सुदर्शन कुमार कपूर, पंचकूला, हरि. ६. श्री प्रेम दुग्गल, सूरत, गुज. ७. डॉ. गर्ग, अजमेर ८. श्री नवीन शर्मा, अजमेर ९. श्री सुरेश कन्हैयालाल बैरवा, अजमेर १०. श्री कन्हैयालाल, अजमेर ११. श्रीमती विश्वेश्वरी देवी कुलश्रेष्ठ, जोधपुर, राज. १२. श्री बालेश्वर मुनि, अजमेर १३. श्री भास्कर शर्मा, अहमदाबाद, गुज. १४. श्रीमती सरोज शर्मा, अजमेर १५. सरस्वती कन्या महाविद्यालय, अजमेर १६. श्रीमती कमला पंचौली, अजमेर १७. श्री विजयसिंह गेहलोत, अजमेर १८. श्री सेवाराम गुर्जर, अजमेर १९. श्री इन्द्रपालसिंह, दिल्ली २०. श्री मयंक कुमार, अजमेर २१. श्री निखिल पारीक, अजमेर २२. श्रीमती प्रेमलता शर्मा, अजमेर २३. श्री सदाव्रत, बोड़ा, उ.प्र. २४. श्रीमती कमला आर्या, जोधपुर, राज. २५. श्रीमती पुष्पा सोनी, पाटन, गुज. २६. श्री वरुण, करनाल, हरि. २७. श्री विनय, काशीपुर २८. श्री अभिषेक, अजमेर २९. श्री महावीर निगम, इन्दौर, म.प्र. ३०. श्री प्रदीप शर्मा, अजमेर ३१. श्रीमती निर्मला, अजमेर ३२. श्रीमती कलावती काबरा, मुम्बई ३३. श्री यशस्व भटनागर, अजमेर। **-परोपकारिणी सभा, अजमेर।**

अतिथि यज्ञ के होताओं से अनुरोध

अतिथि यज्ञ के होताओं से उनकी वैवाहिक वर्षगांठ अथवा जन्मदिन व विभिन्न अवसरों पर ५१०० रु. प्रतिवर्ष सभा को प्राप्त होते रहते हैं। जो महानुभाव संकल्प के साथ इस पुनीत कार्य से जुड़े हुए हैं, उनसे हमारा अनुरोध है कि वे अपनी राशि भेजते समय जन्म तिथि/वैवाहिक वर्षगांठ आदि व दूरभाष संख्या सूचित करना न भूलें। साथ ही यह भी अवश्य सूचित करा देवें कि पहले से भिजवा रहे हैं अथवा नया शुरू किया है। आप अपनी राशि सभा के बैंक खाते में नगद अथवा चैक द्वारा जमा करा सकते हैं।

thearyasamaj.org

जिज्ञासा समाधान – ७१

- आचार्य सोमदेव

जिज्ञासा १- 'योगी भी सांसारिक सुख चाहता है' परोपकारी मार्च द्वितीय-२०१४

(क) क्या ये सम्भव है कि प्राणी सुख भी ले और राग भी उत्पन्न ना हो? किसी वस्तु का मात्र उपयोग करने पर तो सम्भव है कि राग उत्पन्न ना हो।

(ख) एकाग्र अवस्था की प्राप्ति ही क्या विवेकख्याति की प्राप्ति हो जायेगी? एकाग्र अवस्था तो खिलाड़ियों में, निशानेबाजों में, कामियों में, क्रोधियों में भी पाई जाती है। यदि सत्वपुरुष अन्यताख्याति एकाग्रता से ही प्राप्त हो जाती है तो 'निरुद्ध और दग्धबीजभाव' अवस्था में क्या प्राप्त होगा?

- रामगोपाल गर्ग, ०९४१३२२८४३९

समाधान - (क) हाँ ये सम्भव है कि प्राणी सुख भी लेवे और राग उत्पन्न न हो। यह स्थिति वीतराग अवस्था में ही सम्भव है। अर्थात् विवेकख्याति प्राप्त योगी वस्तु में सुख लेते हुए राग उत्पन्न नहीं होने देता। विवेकख्याति उत्पन्न होने से पूर्व सुख लेते हुए राग उत्पन्न हो सकता है। इसको यूँ भी कह सकते हैं कि जब व्यक्ति विद्या से युक्त होकर सुख लेता है तब राग उत्पन्न नहीं होता और इसके विपरीत जब व्यक्ति अविद्या से युक्त होकर सुख लेता है तब राग उत्पन्न होता है।

आपने कहा किसी वस्तु का मात्र उपयोग करने पर यह सम्भव है, किन्तु ऐसा नहीं है। यदि अविद्या से युक्त होकर उपयोग कर रहा है तो राग होगा ही। मुख्य रूप से राग न होने का कारण विद्या है और राग होने का कारण अविद्या।

(ख) एकाग्र अवस्था की प्राप्ति ही विवेकख्याति नहीं है। विवेकख्याति की प्राप्ति में एकाग्र अवस्था साधन का काम करती है। लोक में जिस एकाग्रता का व्यवहार होता है उसमें और योगदर्शन में वर्णित एकाग्रता में भेद है। खिलाड़ियों आदि की जो एकाग्रता है वह योगदर्शन में जो मन की तीसरी अवस्था विक्षिप्त कही है वह है। विक्षिप्त अवस्था की अच्छी स्थिति में एकाग्रता जैसा भान होता है। यथार्थ में वह विक्षिप्त अवस्था ही है किन्तु लोक में इसी को एकाग्रता कह देते हैं। इस प्रकार की एकाग्रता से विवेकख्याति की प्राप्ति नहीं होती।

विवेकख्याति मन की चौथी अवस्था एकाग्रता से प्राप्त होती है। इसी से आत्मा को प्रकृति पुरुष का भेद ज्ञान होकर आत्मा लाभ होता है अर्थात् आत्मा का दर्शन (अपने आप का दर्शन) होता है। इसी को सम्प्रज्ञात समाधि कहते हैं।

आपने कहा निरुद्ध और दग्धबीजभाव अवस्था में क्या प्राप्त होगा? इसमें हमने देखा कि एकाग्रता से आत्मा की प्राप्ति होती है। इसी प्रकार मन की पाँचवी अवस्था निरुद्ध से परमात्मा की प्राप्ति होती है, ईश्वर का साक्षात्कार होता है और दग्धबीजभाव अवस्था होने पर अर्थात् अविद्यादि पाँचों क्लेशों के संस्कार दग्ध होने पर, सर्वथा नष्ट होने पर योगी को मोक्ष की प्राप्ति होती है।

केवल आत्म-साक्षात्कार अथवा ईश्वर-साक्षात्कार होने मात्र से मोक्ष की प्राप्ति नहीं होती अपितु इनके साथ-साथ क्लेशों के दग्ध होने पर मोक्ष प्राप्त होता है।

जिज्ञासा २- मेरी कुछ जिज्ञासाएँ हैं।

(क) जैसे प्रचलित है कि 'आत्मा सो परमात्मा' क्या यह ठीक है? जीवात्मा ही परमात्मा क्यों नहीं हो सकता?

(ख) इस संसार का भोक्ता जीव ही क्यों है, परमात्मा क्यों नहीं?

(ग) संसार में रहने की इच्छा क्यों रहती है?

- सेवानन्द आर्य, बहराइच, उ.प्र.

समाधान- (क) 'आत्मा सो परमात्मा' वाला कथन ठीक नहीं। आत्मा सो परमात्मा अर्थात् आत्मा ही परमात्मा है अथवा जो आत्मा है वही परमात्मा है, यह कहना शास्त्र विरुद्ध कथन है। आत्मा और परमात्मा दोनों ही अलग-अलग हैं। दोनों की अपनी भिन्न स्वतन्त्र सत्ता है।

जीवात्मा, परमात्मा कभी नहीं हो सकता क्योंकि दोनों के स्वरूप पृथक् हैं। जीवात्मा का स्वरूप- वह अल्पज्ञ है, अल्प शक्ति वाला है, एक देशीय है, कर्मों के बन्धन में आकर शरीर धारण करने वाला है, बिना सहायता के कुछ नहीं कर सकता आदि। जो स्वरूप से ही अल्पज्ञ, एकदेशीय वह सर्वज्ञ, सर्वव्यापक कभी नहीं बन सकता।

ईश्वर सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान्, सर्वव्यापक, कर्मों के बन्धन में न पड़ने वाला है। वेद में ईश्वर का स्वरूप-

स पर्य्यगाच्छुक्रमकायमव्रणमस्नाविरꣳशुद्धमपापविद्धम्।
कविर्मनीषी परिभूः स्वयम्भूर्याथातथ्यतोऽर्था-
न्व्यदधाच्छाश्वतीभ्यः समाभ्यः।।

- यजुर्वेद. ४०.८

thearyasamaj.org

अर्थात् वह परमात्मा सब ओर से व्याप्त, शीघ्रकारी सर्वशक्तिमान्, स्थूल-सूक्ष्म-कारण शरीर से रहित, छिद्ररहित, नाड़ी आदि के बन्धन से रहित, अविद्यादि से रहित सदा पवित्र, पाप से रहित, सर्वज्ञ, सब जीवों के मन को जानने वाला, दुष्टों का तिरस्कार करने वाला, अनादिस्वरूप, अपनी सनातन प्रजा के लिए यथार्थ भाव से वेद द्वारा सब पदार्थों को बताने हारा है।

यह स्वरूप वेद में परमेश्वर का दिया हुआ है, इस स्वरूप वाला जीवात्मा नहीं हो सकता।

योगदर्शन में ईश्वर का स्वरूप-

क्लेशकर्मविपाकाशयैरपरामृष्टः पुरुषविशेष ईश्वरः।
तत्र निरतिशयं सर्वज्ञबीजम्।
स एष पूर्वेषामपि गुरुः कालेनानवच्छेदात्।

- योग. १.२४-२६

इस स्वरूप वाला केवल ईश्वर ही हो सकता है, आत्मा नहीं इसलिए जीवात्मा परमात्मा नहीं हो सकता।

(ख) संसार का भोक्ता केवल जीव ही है। क्योंकि प्रकृति जड़ है, जड़ होने से वह किसी का भोग नहीं कर सकती। वह भोग्य अवश्य हो सकती है। परमात्मा सत्यसंकल्प पूर्णकाम है। वह स्वयं ही आनन्द स्वरूप है, उसको किसी भोग की आवश्यकता नहीं है। प्रकृति और परमात्मा भोक्ता नहीं है तो जो जीव है वह भोक्ता है। जीवात्माएँ हमारी दृष्टि से अनन्त हैं। जीवात्मा अविद्या के कारण संसार बन्धन में फंसकर पाप-पुण्य रूप कर्म करता है, उन पाप-पुण्य रूप कर्मों का फल भोगने के लिए विभिन्न योनियों में रहकर फल भोगता है। यह संसार जीवात्मा का भोग्य है अथवा यूँ कहिए जीवात्मा ही इसका भोक्ता है।

(ग) अविद्या के कारण संसार में रहने की इच्छा होती है। जिस दिन अविद्या को हटा विवेक को पैदा कर लिया उसी दिन संसार से वैराग्य हो जायेगा और इसमें रहने की इच्छा नहीं रहेगी। संसार में रहने की इच्छा हमारी अज्ञानता का द्योतक है।

जीवात्मा स्वभाव से सुख चाहता है दुःख नहीं चाहता। जब तक संसार में सुख दिखता रहेगा तब तक संसार अच्छा लगता रहेगा और जब संसार का सुख दुःख से मिश्रित लगने लगेगा तथा इस सुख से बड़ा सुख परमात्मा का अनुभव होने लगेगा तब संसार में रहना अच्च्छा नहीं लगेगा।

संसार से छूटने के लिए विवेक जगाकर इसमें दुःख की अनुभूति करें ऐसा करने से हम संसार से छूट कर महानन्द को प्राप्त हो जायेंगे।

- ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर

जीवन का दर्शन है यही

- राजेन्द्र जिज्ञासु

जब तक है तन में प्राण तू,
कुछ काम कर, कुछ काम कर।
जीवन का दर्शन है यही,
मत बैठकर विश्राम कर।।

मन मानियाँ सब छोड़ दे,
इतिहास से कुछ सीख ले।
पायेगा अपना लक्ष्य तू,
मन को तनिक कुछ थाम कर।।

जीना जो चाहे शान से,
मन में तू अपने ठान ले।
यह वेद का आदेश है,
अविराम तू संग्राम कर।।

रे जान ले, तू मान ले,
कर्त्तव्य सब पहचान ले।
रचकर नया इतिहास कुछ,
तू पूर्वजों का नाम कर।।

भोगों में सब कुछ मानना,
जीवन नहीं यह मरण है।
इस उलटी पुलटी चाल से,
न देश को बदनाम कर।।

- वेद सदन, अबोहर, पंजाब-१५२११६

thearyasamaj.org

दयानन्द धर्मार्थ चिकित्सालय

परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित ऋषि उद्यान में पिछले लगभग एक वर्ष से आयुर्वेदिक चिकित्सालय चल रहा है। चिकित्सालय में उपलब्ध सभी औषधियाँ निःशुल्क दी जाती हैं। ऋषि उद्यान में रह रहे डॉ. रमेश मुनि जी चिकित्सक के रूप में इस चिकित्सालय का कुशलतापूर्वक कार्यभार सम्भाल रहे हैं।

दानी महानुभावों से सहयोग की भी अपेक्षा है।

१. बैंक का नाम- **भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।**

बैंक खाता संख्या- **10158172715**

IFSC-SBIN0007959

२. बैंक का नाम- **आई.डी.बी.आइ**, पावर हाऊस के सामने,

जयपुर रोड़, अजमेर।

बैंक खाता संख्या- **091104000057530**

IFSC-IBKL0000091

email : psabhaa@gmail.com

मन्त्री, परोपकारिणी सभा, अजमेर

आस्था भजन (चैनल) पर आर्य विद्वानों के प्रवचन

स्वामी रामदेव जी जन-जन के कल्याण को ध्यान में रखते हुए वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए 'आस्था-भजन' चैनल पर प्रतिदिन सायं ७ से ९ बजे तक दो घण्टे के बीच वैदिक विद्वानों के प्रवचनों को प्रसारित करवा रहे हैं।

इस कार्य में परोपकारिणी सभा द्वारा भी महत्त्वपूर्ण योगदान दिया जा रहा है। परोपकारिणी सभा द्वारा प्रवचनों की आपूर्ति के लिए ऋषि उद्यान में रिकॉर्डिंग-यूनिट चल रही है और लगातार नित नये प्रवचनों की रिकॉर्डिंग की जा रही है। परोपकारिणी सभा ये प्रवचन आस्था-भजन (चैनल) को प्रदान कर रही है।

इन दिनों 'आस्था-भजन' (चैनल) पर प्रतिदिन सायं ७ से ७.२० बजे तक **आचार्य धर्मवीर** के वेद-प्रवचन, ७.३० से ७.५० तक **स्वामी विष्वङ्** के योगदर्शन प्रवचन, ८.३० से ८.५० तक **आचार्य सत्यजित्** के उपनिषद् प्रवचन प्रसारित हो रहे हैं। इसी प्रकार आगे भी 'आस्था-भजन' पर प्रतिदिन सायं ७ से ९ बजे के बीच अन्य विद्वानों के व अन्य विषयों पर प्रवचन प्रसारित होते रहेंगे।

धर्मप्रेमी जन इन प्रवचनों का अधिकाधिक लाभ उठाएँ और अन्यों को भी अधिकाधिक सूचित करें।

'आस्था-भजन' (चैनल) डिश-टी.वी. और डी.टी.एच. पर उपलब्ध है, किन्तु टाटा-स्काई, वीडियोकोन, बिग-टी.वी. आदि पर नहीं आ रहा है। जिनके पास ये नहीं आ रहा है, वे अपने प्रसारक (सर्विस प्रोवाइडर) को बार-बार कह कर प्रेरित करते रहें, जिससे कि ये भी आस्था भजन को प्रसारित करने लगें। ऐसा करके वैदिक-धर्म के प्रचार-प्रसार में आप भी सहयोग प्रदान कर सकते हैं। जो केबल से देखते हैं, वे भी अपने केबल ऑपरेटर को कह कर आस्था भजन आरम्भ करवा सकते हैं।

thearyasamaj.org

संस्था - समाचार

१६ से ३१ अगस्त २०१४

१. यज्ञ एवं प्रवचन- जैसा कि विदित है, ऋषि उद्यान आर्यजगत् के उन स्थलों में से है जहाँ पूरे वर्ष प्रतिदिन दोनों समय अपरिहार्य रूप से यज्ञ का अनुष्ठान किया जाता है। प्रात:काल वेद के कुछ मन्त्रों का पाठ तथा पूर्व निर्धारित मन्त्र का महर्षि दयानन्द कृत भाष्य का स्वाध्याय किया जाता है। दोनों समय प्रवचन, स्वाध्याय की व्यवस्था है। इन प्रवचनों-स्वाध्याय आदि के क्रम में क्रमश: वेदमन्त्रों तथा ऋषिकृत ग्रन्थों में क्रमश: विचार किया जाता है। वेदमन्त्रों के अन्तर्गत ऋग्वेद के अग्नि, इन्द्र, वरुण, मरुत, रुद्र, ऊषा, विष्णु, सोम, अश्विनौ, सविता, बृहस्पति आदि देवता विषयक सूक्तों पर, विश्वामित्र-नदी संवाद (३/३३), यम-यमी संवाद (१०/१०), पुरुरवा-उर्वशी संवाद (१०-९५), सरमा-पाणि संवाद (१०/१०८), 'अस्य वामस्य' सूक्त (१/१६४), मृत्यु सूक्त (१०/१८), अक्ष सूक्त (१०/३४), ज्ञान सूक्त (१०/७१), पुरुष सूक्त (१०/९०), हिरण्यगर्भ सूक्त (१०/१२१), वाक् सूक्त (१०/१२५), नासदीय सूक्त (१०/१२९), श्रद्धा सूक्त (१०/१५०), स्त्री सूक्त (१०/१५९), अघमर्षण सूक्त (१०/१९०) संगठन सूक्त (१०/१९१) इत्यादि सूक्तों पर, यजुर्वेद के ३१वें (पुरुषाध्याय),३२वें अध्याय, ३४वें अध्याय (शिवसंकल्प), ४०वें (ईशावस्यम्) आदि का, अथर्ववेद के मेधा सूक्त (१/१), राष्ट्रसभा सूक्त (३/४), शालानिर्माण सूक्त (३/१२), सांमनस्य सूक्त (३/३०) वर्षा सूक्त (४/१५), ब्रह्मचर्य सूक्त (११/५), उच्छिष्टब्रह्म सूक्त (११/७), भूमि सूक्त (१२/१) जैसे सूक्तों/मन्त्रों पर क्रमश: विचार किया जाता है, इसके साथ-साथ सत्यार्थप्रकाशादि ग्रन्थों का स्वाध्याय भी किया जाता है।

अपने प्रात: कालीन प्रवचन के क्रम में **डॉ. धर्मवीर जी** ने मृत्यु सूक्त के मन्त्रों की व्याख्या की। आपने बताया कि जन सामान्य मृत्यु की चर्चा को अशुभ मानते हैं। जिन्हें अशुभ, भयोत्पादक माना जाता है, उसे समझने-समझाने के लिए नए शब्द गढ़ लिए जाते हैं। एक गाँव के लोग बाघ से आतंकित थे। वहाँ बाघ को बाघ न कहकर कीड़ा कहा जाता था। जब कोई व्यक्ति जंगल की ओर जाता तो उसे कहा जाता कि वहाँ मत जाओ, वहाँ कीड़ा है। लेकिन मृत्यु एक शाश्वत सत्य है, अत: हमारे शास्त्रों में इसकी पर्याप्त चर्चा है।

मृत्यो: पदं योपयन्तो यदैत द्राघीय आयु: प्रतरं दधाना:।
आप्यायमाना: प्रजया धनेन शुद्धा: पूता भवत यज्ञियास:।

- ऋ. १०/१८/२

की व्याख्या करते हुए आपने बताया कि यहाँ मन्त्र में 'शुद्धा:' व 'पूता:' दो शब्दों का उल्लेख है- शुद्ध व पवित्र होने के लिए यज्ञियास (यज्ञ करने वाले) बने। शुद्धा:=बाह्य शुद्धि, पूता:=आन्तरिक शुद्धि। हमारे यहाँ दोनों शुद्धियों की पर्याप्त चर्चा है। ईसा मसीह की जीवन की एक घटना सुनाते हुए आपने बताया कि एक बार जब यीशू के चेले कहीं भोजन कर रहे थे तो किसी ने यीशू से शिकायत की कि आपके शिष्य बिना हाथ धोए खाते हैं तो यीशू बोले- 'पाप अन्दर से बाहर आता है न कि बाहर से भीतर जाता है।' इसका विश्लेषण करते हुए प्रधान जी ने बताया कि 'पाप के लिए यह विचारणीय हो सकता है कि क्या वह भीतर से बाहर आता है या बाहर से भीतर जाता है, लेकिन अशुद्धि बाहर से भीतर जा ही सकती है, जाती है। वस्तुत: हर पदार्थ की शुद्धि की प्रक्रिया अलग-अलग होती है। महर्षि मनु ने इसे कितने सुन्दर शब्दों में वर्णित किया है-

अद्भिर्गात्राणि शुद्ध्यन्ति मन: सत्येन शुद्ध्यति।
विद्यातपोभ्यां भूतात्मा बुद्धिर्ज्ञानेन शुद्ध्यति।।

- मनु. ५/१०९

आन्तरिक शुद्धता पर ही व्यक्ति की अवस्था (सात्विक, राजसिक व तामसिक) निर्भर करती है। हर व्यक्ति प्रत्येक क्षण किसी न किसी अवस्था में रहता है। जो व्यक्ति जिस अवस्था में लम्बे समय तक रहता है। वह उस प्रकृति का माना जाता है। हमारे शास्त्रों में सतो गुण की अवस्था को प्राप्य माना गया है। धर्म की व्याख्या करते हुए आपने बताया कि अपने आपको अधिक से अधिक सात्विक स्थिति में रखना ही धर्म है। गीता भी कहती है कि सतोगुणी व्यक्ति ही कुलीन है-

अभयं सत्त्वसंशुद्धिर्ज्ञानयोगव्यवस्थिति:।
दानं दमश्च यज्ञश्च स्वाध्यायस्तप आर्जवम्।।
अहिंसा सत्यमक्रोधस्त्याग: शान्तिरपैशुनम्।
दया भूतेष्वलोलुप्त्वं मार्दवं ह्रीरचापलम्।।
तेज: क्षमा धृति: शौचमद्रोहो नातिमानिता।
भवन्ति सम्पदं दैवीमभिजातस्य भारत।।

- गीता १६/१-३

thearyasamaj.org

सायंकालीन प्रवचन के क्रम में समादरणीय **सत्येन्द्र** जी ने

अकर्मा दस्युरभि नो अमन्तुरन्यव्रतो अमानुषः।
त्वं तस्यामित्रहन् वधर्दासस्य दम्भय।।

– ऋ. १०/२२/८

की व्याख्या करते हुए दस्यु के स्वभाव के बारे में बताया। जो अकर्मा, अमन्तु, अन्यव्रत, अमानुष आदि लक्षणों से युक्त है वह दस्यु है। कर्म रहित अर्थात् ब्रह्मचर्य काल में विद्या व बल के संचय में पुरुषार्थ न करने वाला, गृहस्थ में धर्मपूर्वक अर्थोपार्जन से अन्य तीनों आश्रमस्थ जनों का यथा सामर्थ्य पालन न करने वाला, वानप्रस्थ व संन्यासाश्रमोचित सत्कर्म शून्य, धर्मरहित व्यक्ति अकर्मा है। **'मननात् मनुष्यः'** जो कर्म करते समय धर्मपूर्वक चिन्तन मनन करता है वह मनुष्य है और जो विपरीत अर्थात् मनन चिन्तन नहीं करता- जो अमननशील है- अमन्तु है, वह दस्यु है। जिसके जीवन में व्रत=अच्छे कार्य करने का संकल्प नहीं अथवा जो अन्यथाचारी है वह दस्यु है। और जिसमें मनुष्यपने का अभाव है वह दस्यु है। वेद दस्युत्व के दमन के लिए स्पष्ट आदेश देता है अर्थात् हमें अपने में से उपरोक्त वृत्तियों को हटाना चाहिए।

मांसाहार का निषेध करते हुए आपने बताया कि मनुष्य एक शाकाहारी जीव है। अगर मनुष्य पूर्वाग्रह छोड़कर प्रकृति के नियमों का इस दृष्टि से अध्ययन करें तो वह स्वयं इस तथ्य पर पहुँचेगा कि मनुष्य शाकाहारी जीव है। क्योंकि ईश्वर ने मांसाहारी व शाकाहारी पशुओं की शारीरिक बनावट (दांत, नाखून, जबड़ों की शक्ति, आँते) आदि में पर्याप्त भेद किए हैं। मांसाहारी पशुओं के पानी पीने का तरीका भिन्न होता है, उनकी आहार नाल अपेक्षाकृत छोटी होती है।

प्रायः मांसाहारी व्यक्ति यह तर्क देते हैं कि मांस खाने से शरीर का बल बढ़ता है, उन्हें प्रकृति में घोड़े, हाथी, गेंडे, दरियाई घोड़े जैसे शक्तिशाली प्राणियों की ओर देखना चाहिए। घोड़े को तो अपने शरीर अनुपात में सबसे शक्तिशाली जीव माना जाता है। आधुनिक विज्ञान में भी शक्ति का मात्रक अश्वशक्ति (हॉर्स पावर) को ही माना गया है।

प्रायः मांसाहारी यह भी तर्क देते हैं कि मांस खाकर ही अन्न की कमी को पूरा किया जा सकता है। आपने बताया कि वस्तुतः दूध आदि के सेवन से ही अन्न की खपत कम की जा सकती है। दुग्धाहारी व्यक्ति न्यूनतम मात्रा में अन्न का सेवन करता है, इसके विपरीत मांसाहारी व्यक्ति मांस के साथ-साथ अन्न तो पर्याप्त मात्रा में लेता ही है, इन पशुओं को पुष्ट करने में कहीं अधिक अन्न व्यर्थ करता है।

पुनः सत्यार्थप्रकाश का स्वाध्याय करते हुए आपने इसके पाठ भेदों की चर्चा की। आपने बताया कि राजा जयकिशनदास के निवेदन करने पर महर्षि सत्यार्थप्रकाश लिखने के लिए तैयार हो गए। जैसा कि ऋषिभक्त जानते ही हैं कि महर्षि अपनी अतिव्यस्त दिनचर्या में ग्रन्थ लेखन के समय बोलते जाते थे और वेतनभोगी पण्डित उसे लिखते जाते थे। कई बार पण्डित लेखक जानबूझकर महर्षि के अभिप्राय के विपरीत लिख देते थे। जब सत्यार्थप्रकाश का प्रथम संस्करण छपकर सामने आया तो अनेकों ऋषि-भक्तों ने महर्षि से निवेदन किया कि इसमें अनेकों सिद्धान्त विरुद्ध बातें हैं। तब पण्डितों का यह षड़यन्त्र खुलकर सामने आया। अतः पुनः स्वयं महर्षि ने मूल पाण्डुलिपि में अपने हाथों से संशोधन कर इसका प्रामाणिक संस्करण (द्वितीय संस्करण) तैयार करवाया और इसकी भूमिका में उपरोक्त बातें स्पष्ट की।

अपने प्रवचन क्रम में **आचार्य सोमदेव जी** ने बातया कि व्यक्ति की परीक्षा विकट परिस्थितियों में ही होती है। पंचतन्त्रकार का भी मत है कि वैद्य व मन्त्री की परीक्षा क्रमशः सन्निपात व राज्य में आपतस्थिति आने पर ही होती है। सामान्य स्थिति में तो जनसामान्य भी धार्मिक, सज्जन बनने की कोशिश करता है लेकिन जब प्रलोभन सामने आते हैं और व्यक्ति उसे बलात् लेने की स्थिति में होता है तो वह प्रलोभन की ओर खींचता है या नहीं, इससे उसकी सज्जनता का पता चलता है। महाभारत में वनवास के समय जब पाँचों पाण्डव व द्रौपदी धौम्य ऋषि के आश्रम पहुँचे तो पाँचों भाई जंगल में भोजन की व्यवस्था करने चले गए। द्रौपदी वहीं धौम्य ऋषि के आश्रम में एक कुटिया के बाहर उनकी प्रतीक्षा करने लगी। उसी समय जयद्रथ वहाँ आ गया, द्रौपदी को अकेला पाकर अपने ऊपर नियन्त्रण न रख सका। द्रौपदी से कहने लगा कि कहाँ यहाँ जंगलों में भटक रही हो, मेरे साथ राजमहल का सुख भोगो। द्रौपदी ने मना किया। जयद्रथ पुनः आग्रह करने लगा तो धौम्य ऋषि ने समझाया, लेकिन जयद्रथ कहाँ रुकने वाला था, द्रौपदी को बलात् उठाकर अपने साथ ले गया। जब पाण्डव वापस आए तो धौम्य ऋषि ने सारा वृत्तान्त सुनाया। युधिष्ठिर ने भीम व अर्जुन को द्रौपदी को

thearyasamaj.org

वापस लाने भेजा। भीम व अर्जुन ने जयद्रथ को उसकी सेना सहित बन्दी बना लिया। भीम यहाँ ही जयद्रथ का प्राणान्त करना चाहता था, तो अर्जुन ने समझाया कि भैया युधिष्ठिर ने इन्हें जीवित लाने को कहा है। जयद्रथ को युधिष्ठिर के सामने लाया गया। भीम उसे प्राणदण्ड देना चाहता था लेकिन युधिष्ठिर के संज्ञान में यह था कि यह अपनी बहन (दुर्योधन की बहन) का पति है, अतः इसे मारकर बहन को विधवा बनाना उचित नहीं। जयद्रथ से माफी मंगवाकर उसे छोड़ दिया गया। जब व्यक्ति अधार्मिक हो जाता है तो उसके अर्थ (साधन) भी अनर्थ हो जाते हैं। साधन सम्पन्न (सेना सहित) अधार्मिक जयद्रथ को वनवासी पाण्डवों ने हरा दिया। और जब व्यक्ति धार्मिक होता है तो अनेकों व्यक्ति उसकी सहायता में स्वतः ही आगे आते जाते हैं और उसका मार्ग प्रशस्त होता जाता है। रामायण युद्ध में जब लक्ष्मण ने मेघनाथ को मार दिया तो इसकी सूचना पाते ही अपने पति को अजेय मानने वाली मेघनाथ की पत्नी सुलोचना युद्धभूमि में आकर राम के सैनिकों से बोली- मैं अपने पति मेघनाथ को मारने वाले वीर को देखना चाहती हूँ। सैनिक सुलोचना को राम के पास ले गए। राम ने उसे आदरपूर्वक बैठाया, लक्ष्मण को बुलाकर कहा- बहन, ये मेरा भाई लक्ष्मण है, इन्होंने ही मेघनाथ को मारा है। सुलोचना ने कहा कि मैं उस अस्त्र को देखना चाहती हूँ जिससे मेरा पति मारा गया। राम ने सैनिकों को वह अस्त्र लाने का संकेत किया। अस्त्र दूर था, सैनिक को थोड़ा समय लगा, सुलोचना जाने लगी। राम ने कहा- बहन वह अस्त्र तो देखती जाओ। सुलोचना ने कहा- मैंने वह अस्त्र देख लिया है राम। मैं तुम्हारे शत्रुपक्ष की महिला हूँ, लेकिन फिर भी तुम दोनों भाईयों ने अपनी दृष्टि मेरे पैरों की तरफ ही बनाए रखी। राम तुम्हारी इसी सज्जनता, धार्मिकता ने मेरे पति को मारा है, क्योंकि ये लोहे के अस्त्र-शस्त्र तो दुनिया के पास पहले से ही थे और वे मेरे पति का कुछ भी नहीं बिगाड़ सके। मेरे पति को किसी अस्त्र-शस्त्र ने नहीं, तुम्हारी सज्जनता/धार्मिकता ने ही मारा है।

महर्षि दयानन्द ने अनेकत्र अपने व्याख्यानों, ग्रन्थों में ईश्वर की सर्वव्यापकता, सर्वज्ञता की महत्ता सिद्ध की है। ईश्वर के सर्वव्यापक, सर्वज्ञ, सर्वरक्षक, न्यायकारी, निर्विकार, आनन्दस्वरूप आदि गुण, जिन पर सतत् चिन्तन, मनन, परीक्षण किए बिना व्यक्ति के जीवन में आध्यात्मिकता आ नहीं सकती। वह आध्यात्मिक मार्ग में चलते हुए भी, अपने आप को साधक मानते हुए भी प्रपञ्चों में उलझ सकता है। गौतम बुद्ध के एक शिष्य की घटना सुनाते हुए आपने बताया कि एक बार एक राजा ने ४०-५० फीट लम्बा बांस जमीन में गाढ़ कर उसके ऊपरी सिरे पर एक कमण्डलु रख दिया और घोषणा की कि जो कोई साधु इस बांस पर चढ़कर उस कमण्डलु को उतार लाएगा मैं उसे अपना गुरु मान लूँगा और उसके मत को राजधर्म घोषित किया जाएगा। बड़े-बड़े गुरु आकर इस प्रतियोगिता में भाग लेने लगे लेकिन मोटे-मोटे गुरुओं को असफलता ही हाथ लगी। घोषणा को सुनकर एक पतला बौद्ध भिक्षु वहाँ आया, उसने चुनौति स्वीकार की, पतले बांस पर चढ़कर उस कमण्डलु को उतार लाया। राजा उस बौद्ध भिक्षु का शिष्य बन गया। भिक्षु को अत्यधिक सम्मान, ऐश्वर्य के साधन प्रदान किए गए, उसका जीवन ऐश्वर्य में बीतने लगा। एक दिन भिक्षु ने सोचा कि क्यों न अपने गुरु (गौतम बुद्ध) व गुरु भाईयों को अपनी इस उपलब्धि के बारे में बताया जाए। वह पूरे ठाँठ-बाँठ के साथ बुद्ध के पास पहुँचा और उन्हें अपनी उपलब्धि बताई। बुद्ध बोले- तू ठग है, जब तू दीक्षा लेने आया था तो मैं तुझे देखते ही पहचान गया था कि तू नट है लेकिन मैंने सोचा कि वास्तव में तू अपनी आत्मिक उन्नति चाहता है, अतः मैंने तुझे दीक्षा दी। लेकिन दीक्षा लेकर भी तूने नट विद्या से ठगी ही की। बांस पर चढ़कर कमण्डलु उतार लाना तेरी योगविद्या का नहीं तेरी ठग विद्या (नट-विद्या) का परिणाम है। इस प्रकार आचार्य जी ने बताया कि जब व्यक्ति आध्यात्म की गहराई में उतरता नहीं है, तो इसी प्रकार ठगी विद्या चलाता है, जैसे आजकल के तथाकथित गुरु करते हैं- खाली हाथ में भस्म लाकर, मुँह से सोने के सिक्के निकालकर, यहाँ वहाँ प्रकट होकर अपने शिष्यों को आश्चर्यचकित कर ठगते रहते हैं। इति।।

दीपक आर्य

योगी लोग मधुर प्यारी वाणी से योग सीखने वालों को उपदेश करें और अपना सर्वस्व योग ही को जानें तथा अन्य मनुष्य वैसे योगी का सदा आश्रय किया करें।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ७.११

जैसे सकल ऐश्वर्य का देने वाला जगदीश्वर है वैसे सभाध्यक्षादि मनुष्यों को होना चाहिये।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ५.३०

thearyasamaj.org

आर्यजगत् के समाचार

१. **पुस्तक विमोचन**- आर्यसमाज मन्दिर, बंगाली मोहल्ला, अम्बाला छावनी में प्रति माह होने वाले 'भजन सुप्रभात' कार्यक्रम में ३ अगस्त २०१४ को अशोक प्रभाकर चोणा द्वारा रचित 'आनन्द भजनामृत' पुस्तक का विमोचन श्री जयप्रकाश गुप्ता संयोजक राष्ट्रभाषा समिती हरियाणा के करकमलों द्वारा सम्पन्न हुआ। यह पुस्तक श्री अशोक प्रभाकर ने अपने स्व. माता-पिता की स्मृति में नि:शुल्क वितरित की।

२. **सम्मानित**- सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद्, जयपुर, राज. द्वारा १८ अगस्त २०१४ को राज्य-स्तरीय द्वादश कल्याणमल आर्य-स्मृति कल्पना चावला पुरस्कार से कोटा की छात्रा सुश्री सृष्टि गोयल को सम्मानित किया गया।

३. **सम्मेलन**- छत्तीसगढ़ राज्य के महासमुन्द जिले के आर्षज्योति गुरुकुल आश्रम कोसरंगी परिसर में प्रान्तीय स्तर का एक बृहद् 'वेद एवं वैदिक संस्कृति सम्मेलन' का आयोजन दि. ५ से ७ दिसम्बर २०१४ को किया जा रहा है। जिसमें भारतवर्ष के कोने-कोने से सौ से अधिक वैदिक विद्वानों का आगमन हो रहा है। सम्मेलन में वेद के सूक्ष्मतम विषयों पर चिन्तन, चर्चा व संगोष्ठी होगी साथ ही सस्वर वैदिक पाठों से वातावरण सुवाषित होगा।

४. **वृष्टि यज्ञ**- आर्यसमाज मन्दिर, महर्षि पाणिनि नगर, जोधपुर, राजस्थान द्वारा बरसात की कामना हेतु वृष्टि यज्ञ व १५वाँ वार्षिकोत्सव का आयोजन २० से २६ जुलाई तक मनाया गया। जिसके पोस्टर का विमोचन सेठ खेमसिंह भाटी, सवाईसिंह भाटी द्वारा किया गया। आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा वैदिक विधि विधान से ऋतु के अनुकूल हवन सामग्री बनाकर हवन करने का उपदेश किया था। इसी के अनुसार मारवाड़ में अल्प वर्षा को देखते हुए हवन सामग्री तैयार की गई जो वैदिक मन्त्रों से इन्द्रदेव को प्रसन्न कर अच्छी वर्षा हेतु आहुत की गई।

५. **वार्षिकोत्सव सम्पन्न**- गार्गी कन्या गुरुकुल भैयाँ चामड़, अलीगढ़, उ.प्र. का वार्षिकोत्सव एवं श्रावणी पर्व समारोह १० अगस्त २०१४ को आचार्य रामप्रकाश वर्णी के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुआ। उत्सव का आरम्भ ८ अगस्त को वेद मन्त्रोच्चारण से हुआ। मनु आर्या के मार्गदर्शन में गुरुकुल की ब्रह्मचारिणियों ने विविध सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये। श्रावणी पर्व के दिन १५ नूतन ब्रह्मचारिणियों का यज्ञोपवीत एवं वेदारम्भ संस्कार सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम के अन्त में गुरुकुल के संचालक स्वामी चेतनदेव वैश्वानर ने श्रोतागणों का आभार व्यक्त किया।

६. **श्रावणी महोत्सव**- आर्यसमाज खलासी लाईन, सहारनपुर में श्रावणी महोत्सव वेद प्रचार सप्ताह १० से १७ अगस्त २०१४ के समापन समारोह में अन्तिम दिवस पर यज्ञ हुआ। यज्ञ वैदिक विद्वान् आचार्य धीरज कुमार के पुरोहित्य में सम्पन्न हुआ।

७. **वेद प्रचार**- आर्यसमाज, सेक्टर ६, भिलाई, छ.ग. के वेद प्रचार अभियान २०१४ का प्रथम चरण जन्माष्टमी के शुभ अवसर पर सम्पन्न हुआ। इस आठ दिवसीय पर्व का श्रावणी रक्षाबन्धन को शुभारम्भ वैदिक धर्म के राष्ट्रीय प्रचारक मुरादाबाद, उ.प्र. से पधारे डॉ. महावीर मुमुक्षु द्वारा हुआ। इस दौरान नगर के विभिन्न इलाकों में पारिवारिक यज्ञ एवं सत्संग आयोजित किए गए।

८. **वेद प्रचार सप्ताह**- कानपुर नगर की समस्त आर्यसमाजों की ओर से आर्य उप प्रतिनिधि सभा कानपुर, कानपुर नगर के तत्त्वावधान में दिनांक ३ से १० अगस्त २०१४ तक विभिन्न स्थानों पर वेद प्रचार सप्ताह मनाया गया जिसमें आचार्य योगेन्द्र याज्ञिक, उपदेशक, आर्ष गुरुकुल होशंगाबाद से तथा श्री श्यामवीर राघव, भजनोपदेशक, दिल्ली से पधारे। कार्यक्रम की अध्यक्षता आर्य उपप्रतिनिध सभा के जिलाध्यक्ष श्याम प्रकाश शास्त्री तथा संचालन जिला मन्त्री विनोद कुमार आर्य ने किया।

९. **जन्माष्टमी पर्व मनाया**- आर्यसमाज मगरा पूँजला, जोधपुर, राज. में जन्माष्टमी पर्व दि. १७ अगस्त २०१४ को श्री मनोहरसिंह परिहार की अध्यक्षता में बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया। जिसमें मुख्य अतिथि श्री अक्षयसिंह टाक थे, यज्ञ के ब्रह्मा श्री विमल भाटी थे।

१०. **वेद प्रचार सम्पन्न**- आर्यसमाज गोंड़पारा, बिलासपुर, छ.ग. के उप प्रधान श्री सुधीर कुमार आर्य के निवास वसन्त साड़ी सेन्टर, सदर बाजार, में १ से ३ अगस्त २०१४ तक श्रावणी उपाकर्म के उपलक्ष्य में वैदिक धर्म प्रचार हेतु वैदिक ज्ञान गंगा कार्यक्रम का आयोजन किया गया। हरिद्वार से आचार्य अखिलेश्वर जी तथा पं. कंचन कुमार जी दिल्ली से पधारे। वैदिक यज्ञ का कुशल संचालन पुरोहित पं. जयदेव शास्त्री द्वारा तथा मंच संचालन रायपुर

thearyasamaj.org

से पधारे विद्वान् आचार्य प्रेमप्रकाश शास्त्री जी द्वारा किया गया।

११. साप्ताहिक यज्ञ-योग का आयोजन- भारत स्वाभिमान एवं पतंजलि योग समिति जिला झज्जर के तत्त्वावधान में साप्ताहिक यज्ञ-योग का आयोजन मौ. भट्टी गेट पर किया गया जिसमें भजन व प्रवचन का भी कार्यक्रम हुआ। इस कार्यक्रम में यजमान श्रीमती मामकौर एवं महाशय रतीराम आर्य रहे व यज्ञ ब्रह्मा श्री योगाचार्य विवेक गोयल रहे।

१२. संस्कृत समारोह- गुरुकुल कांगड़ी विवि द्वारा संस्कृत समारोह के अवसर पर दि. २९-३० अगस्त को आयोजित संस्कृत भाषण तथा संस्कृत गीतगायन प्रतियोगिता में गुरुकुल प्रभात आश्रम के ब्र. नीरज ने संस्कृत भाषण में प्रथम स्थान तथा ब्र. दीपक ने संस्कृत गीतगायन में तृतीय स्थान प्राप्त किया। इस उपलब्धि पर उनके सम्मान में आश्रम में एक भव्य सभा का आयोजन भी किया गया।

वैवाहिक

१३. वधु चाहिए- वैश्य, कद- ५ फीट ६ इंच, जन्म- १४ नवम्बर १९८० (३४ वर्ष), शिक्षा- दिल्ली विश्वविद्यालय से एम.ए. (संस्कृत) एवं बी.एड., नेट/जी.आर.एफ. उत्तीर्ण पी.एच.डी. (शोधरत), व्यवसाय- डी.ए.वी. इन्टर कॉलेज मोतिहारी (बिहार) में अध्यापक, ४ लाख वार्षिक आय, (स्वयं का चार पहिया वाहन) गेहूंआ वर्ण, सुशिक्षित सौम्य सरल धार्मिक आर्य युवक हेतु सुशिक्षित कन्या के प्रस्ताव आमन्त्रित। दहेज जाति बन्धन नहीं।

सम्पर्क - ०९४७१९४७१३८, ०९१३५२२१०१०,
ई-मेल- deepnarayan.skt@gmail.com

१४. वर चाहिए- ब्रह्मभट्ट ब्राह्मण, आयु ३१ वर्ष, कद ५ फुट १ इंच, एम.एस.सी. (गणित), प्रोबेसनरी ऑफिसर (डिप्टी मैनेजर) स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया, भोपाल, म.प्र. आर्य युवती हेतु सुशिक्षित एवं संस्कारवान् समकक्ष युवक की आवश्यकता है। जाति बन्धन नहीं।

सम्पर्क- आर्य कुमार शर्मा, ०९४२४४६८४८६, sharmaak22@gmail.com

चुनाव समाचार

१५. आर्य समाज ग्रेटर कैलाश-१, नई दिल्ली के चुनाव में **प्रधान-** श्री इन्द्र सैन साहनी , **मन्त्री-** श्री राजेन्द्र कुमार वर्मा, **कोषाध्यक्ष-** श्री प्रताप गलयानी को चुना गया।

१६. आर्य समाज माकौल, पो. करंजी, जि. दक्षिण दिनाजपुर, प.बंगाल के चुनाव में **प्रधान-** श्री शोभालाल सरकार, **मन्त्री-** श्री अश्विनी कुमार सरकार, **कोषाध्यक्ष-** श्री गजेन्द्र कुमार सरकार को चुना गया।

१७. आर्य पुरोहित सभा मुम्बई के चुनाव में **प्रधान-** श्री पं. नामदेव आर्य, **मन्त्री-** श्री नरेन्द्र शास्त्री, **कोषाध्यक्ष-** श्री विनोद कुमार शास्त्री को चुना गया।

१८. आर्य समाज यमलार्जुनपुर, कैसरगंज, बहराइच, उ.प्र. के चुनाव में **प्रधान-** श्री पेशकार सिंह, **मन्त्री-** श्री रामकशपाल, **कोषाध्यक्ष-** श्री गंगा प्रसाद मौर्य को चुना गया।

१९. आर्य उप प्रतिनिधि सभा, जनपद गाजियाबाद के चुनाव में **प्रधान-** श्री श्रद्धानन्द शर्मा , **मन्त्री-** श्री ज्ञानेन्द्र सिंह आर्य, **कोषाध्यक्ष-** श्री सुरेन्द्र पाल सिंह को चुना गया।

२०. आर्य उप प्रतिनिधि सभा, जनपद गोण्डा, उ.प्र. के चुनाव में **प्रधान-** श्री विनोद कुमार आर्य, **मन्त्री-** श्री जनार्दन प्रसाद पाठक, **कोषाध्यक्ष-** श्री धर्मेन्द्र कुमार को चुना गया।

२१. आर्य समाज शिवालय टेहू, आगरा, उ.प्र. के चुनाव में **प्रधान-** स्वामी रामानन्द आर्य, **मन्त्री-** श्री अंकितसिंह सिसौदिया, **कोषाध्यक्ष-** श्री रामप्रसाद आर्य को चुना गया।

२२. वेद मनीषा न्यास, अलीगढ़, उ.प्र. के चुनाव में **प्रधान-** डॉ. पपेन्द्र आर्य, **सचिव-** श्री योगेश शर्मा, **कोषाध्यक्ष-** श्री रामदीन आर्य पुरुषार्थी को चुना गया।

शोक समाचार

२३. श्री पं. वेगराज आर्य दिवंगत- आर्यजगत् के सुप्रसिद्ध विद्वान् भजनोपदेशक श्री पं. वेगराज आर्य, भूड़िया, गाजियाबाद, उ.प्र. का देहावसान ७ अगस्त २०१४ को लगभग ८५ वर्ष की आयु में हो गया। पं. वेगराज जी प्रखर वक्ता, लालित्य पूर्ण, साहित्यिक ऊँचाई को छूने वाले, भाषा के चतुर खिलाड़ी, सुमधुर गायक थे। कुँवर सुखलाल, पं. प्रकाशचन्द की परम्परा के उत्साही वैदिक पथगामी थे, मिशनरी भावना से ओतप्रोत लम्बे समय तक आर्यसमाज वैदिक धर्म का प्रचार-प्रसार बड़ी आत्मीयता एवं उत्साह के साथ किया। पं. वेगराज जी अपने पीछे पुत्र-पौत्रादि से सम्पन्न परिवार छोड़ कर गये हैं। परमेश्वर से प्रार्थना है कि उनकी आत्मा को सद्गति प्रदान करे एवं परिजनों को विच्छेद सहने का सामर्थ्य प्राप्त हो।

thearyasamaj.org

महर्षि दयानन्द सरस्वती के जीवन की झलकियाँ

thearyasamaj.org

आर जे/ए जे/80/2013-2014 तक प्रेषण : १५ सितम्बर, २०१४ ३९५९/५९

महर्षि दयानन्द सरस्वती के निर्वाण के अवसर पर

३१ अक्टूबर, १-२ नवम्बर २०१४ को

१३१ वाँ

भव्य ऋषि मेला

ऋषि को श्रद्धाञ्जलि अर्पित करने हेतु

समस्त ऋषि भक्त सादर आमन्त्रित हैं।

आकर्षण के बिन्दु

- ऋग्वेद पारायण यज्ञ।
- वेदगोष्ठी।
- चतुर्वेद कण्ठस्थीकरण प्रतियोगिता।
- आर्यजगत् के मूर्धन्य विद्वानों का मार्गदर्शन।
- विद्वानों, कार्यकर्त्ताओं का सम्मान।
- आर्यवीरों का प्रभावशाली व्यायाम प्रदर्शन।
- अनेकों आर्यप्रकाशकों द्वारा साहित्य का वि[illegible]।

सम्पर्क सूत्र: ०१४५-२४६०१६४

प्रेषक:
परोपकारिणी सभा
दयानन्द आश्रम, केसरगंज, अजमेर
(राजस्थान) - ३०५००१

Design@ MITTAL 9829797513